संधि विच्छेद

(Sandhi vichchhed)- संधि विच्छेद

संधि विच्छेद की परिभाषा-

- संधि में पदों को मूल रूप में पृथक कर देना संधि विच्छेद है। जैसे- धनादेश = धन + आदेश
- यहाँ पर कुछ प्रचलित संधि विच्छेदों को दिया जा रहा है, जो की विद्यार्थियों के बड़े काम आएगी।

(अ, आ)

अल्पायु = अल्प + आयु	अनावृष्टि = अन + आवृष्टि
अत्यधिक = अति + अधिक	अखिलेश्वर = अखि + ईश्वर
आत्मोत्सर्ग= आत्मा + उत्सर्ग	अत्यावश्यक = अति + आवश्यक
अत्युष्म =अति +उष्म	अन्वय=अनु +अय
अन्याय =अ+नि +आय	अभ्युदय=अभि +उदय
अविष्कार=आविः +कार	अन्वेषण=अनु +एषण
आशीर्वाद= आशीः+वाद	अत्याचार= अति+आचार
अहंकार =अहम् +कार	अन्वित=अनु+अय+इत

KD Job Updates

अभ्यागत= अभि +आगत	अम्मय= अप्+मय
अभीष्ट= अभि+इष्ट	अरण्याच्छादित= अरण्य+आच्छादित
अत्यन्त= अति+अन्त	अत्राभाव= अत्र+अभाव
आच्छादन= आ+छादन	अधीश्वर= अधि+ईश्वर
अधोगति= अधः+गति	अन्तर्निहित= अन्तः+निहित
अब्ज= अप्+ज	आकृष्ट= आकृष्+त
आद्यन्त= आदि+अन्त	अन्तःपुर= अन्तः+पुर
अन्योन्याश्रय =अन्य+अन्य+आश्रय	अन्यान्य =अन्य+अन्य
अहर्निश =अहः+निश	अजन्त =अच्+अन्त
आत्मोत्सर्ग =आत्म+उत्सर्ग	अत्युत्तम= अति+उत्तम
अंतःकरण= अंतः + करण	अन्तनिर्हित= अन्तः + निहित
अन्तर्गत= अन्तः + गत	अन्तस्तल = अंतः + तल
अंतर्ध्यान= अंत + ध्यान	अन्योक्ति= अन्य + उक्ति
अनायास= अन् + आयास	अधपका= आधा + पका
अनुचित= अन् + उचित	अनूप= अन् + ऊप

KD Job Updates

संधि विच्छेद

अनुपमेय= अन् + उपमेय	अन्तर्राष्ट्रीय= अन्तः + राष्ट्रीय
अनंग= अन् + अंग	अनन्त= अन् + अंत
अनन्य= अन् + अन्य	अतएव= अतः + एव
अध्याय= अधि + आय	अध्ययन= अधि + अयन
अधीश= अधि + ईश	अधीश्वर= अधि + ईश्वर
अधिकांश= अधिक + अंश	अधरोष्ठ= अधर + ओष्ठ
अवच्छेद= अव + छेद	अभ्यस्त= अभि + अस्त
अभ्यागत= अभि + आगत	अभिषेक= अभि + सेक
अस्तित्व= अस्ति + त्व	अहर्मुख= अहर + मुख
अहोरूप= अहः + रूप	अज्ञानांधकार= अज्ञान + अंधकार
आश्चर्य= आ + चर्य	आशोन्मुख= आशा + उन्मुख
आत्मावलम्बन= आत्मा + अवलम्बन	आध्यात्मिक= आधि + आत्मिक

(इ, ई, उ, ऊ, ए)

इत्यादि = इति + आदि	इतस्ततः= इतः + ततः

KD Job Updates

ईश्वरेच्छा =ईश्वर+इच्छा	उन्मत्त =उत् +मत्त
उपर्युक्त =उपरि +उक्त	उन्माद =उत् +माद
उपेक्षा =उप+ईक्षा	उच्चारण=उत् +चारण
उल्लास =उत् +लास	उज्ज्वल =उत् +ज्वल
उद्धार =उत् +हार	उदय =उत् +अय
उदभव=उत् +भव	उल्लेख =उत् +लेख
उत्रति =उत्+नति	उन्मूलित =उत्+मूलित
उल्लंघन=उत्+लंघन	उद्याम =उत्+दाम
उच्छ्वास =उत्+श्वास	उत्रायक =उत्+नायक
उन्मत्त=उत्+मत्त	उत्रयन =उत्+नयन
उद्धत =उत्+हत	उपदेशान्तर्गत =उपदेश+अन्तर्गत
उन्मीलित =उत्+मीलित	उद्योग=उत्+योग
उड्डयन =उत्+डयन	उद्घाटन = उत्+घाटन
उच्छित्र =उत्+छित्र	उच्छिष्ट =उत्+शिष्ट
उत्कृष्ट=उत्कृष् + त	उद्यान= उत् + यान

KD Job Updates

संधि विच्छेद

उत्तमोत्तम= उत्तम + उत्तम	उतेजना= उत् + तेजना
उत्तरोत्तर= उत्तर + उत्तर	उदयोन्मुख= उदय + उन्मुख
उद्वेग= उत् + वेग	उद्देश्य= उत् + देश्य
उद्धरण= उत् + हरण	उदाहरण= उत् + आहरण
उद्गम=उत् +गम	उद्भाषित= उत् + भाषित
उन्नायक= उत् + नायक	उपास्य= उप + आस्य
उपर्युक्त= उपरि + उक्त	उपयोगिता= उप + योगिता
उपनिदेशक= उप + देशक	उपाधि= उप + आधि
उपासना= उप + आसना	ऊहापोह= ऊह + अपोह
उपदेशान्तर्गत= उपदेश + अन्तः + गत	एकाकार= एक + आकार
एकाध= एक +आध	एकासन= एक + आसन
एकोनविंश= एक + उनविंश	एकान्त= एक + अंत
एकैक=एक+एक	कृदन्त=कृत् +अन्त

KD Job Updates

(क, ग, घ)

कल्पान्त =कल्प+अन्त	कुर्मावतार= कूर्म + अवतार
क्रोधाग्नि= क्रोध + अग्नि	कालांतर = काल + अंतर
किन्नर =किम्+नर	किंचित् = किम्+चित
कंठोष्ठय= कंठ + ओष्ठ्य	कपलेश्वर= कपिल + ईश्वर
कपीश= कपि + ईश	कवीन्द्र= कवि + इन्द्र
कवीश्वर= कवि + ईश्वर	कपीश्वर= कपि + ईश्वर
किंवा= किम् + वा	किन्तु= किम् + तु
कूपोदक= कूप + उदक	कुशाग्र= कुश + अग्र
कुशासन= कुश + आसन	कुसुमायुध= कुसुम + आयुध
कुठाराघात= कुठार + आघात	कोणार्क= कोण + अर्क
क्रोधान्ध= क्रोध + अंध	कोषाध्यक्ष= कोष + अध्यक्ष
कौमी= कौम + ई	कृतान्त= कृत + अंत
कीटाणु= कीट + अणु	खगासन= खग + आसन
खटमल= खाट + मल	गवीश= गो + ईश

KD Job Updates

संधि विच्छेद

गणेश= गण + ईश	गंगौघ= गंगा + ओघ
गंगोदक= गंगा + उदक	गंगैश्वर्य= गंगा + ऐश्वर्य
ग्रामोद्धार= ग्राम + उद्धार	गायन= गै + अन
गिरीन्द्र= गिरि + इन्द्र	गुडाकेश= गुडाका + ईश
गुप्पचति= गुब + पचति	गिरीश= गिरि + ईश
गुरुत्वाकर्षण= गुरुत्व + आकर्षण	गौरवान्वित= गौरव + अन्वित
घड़घड़ाहट= घड़घड़ + आहट	घनानंद= घन + आनंद
घुड़दौड़= घोड़ा + दौड़	

(च, छ, ज)

चतुरानन= चतुर + आनन	चतुर्भुज= चतुः + भुज
चन्द्रोदय=चन्द्र+उदय	चरणामृत=चरण+अमृत
चतुष्पाद= चतुः+पाद	चयन=चे+अन
चिकित्सालय=चिकित्सा+आलय	चिन्मय=चित्+मय
चतुर्दिक= चतुः + दिक्	चतुरंग= चतुः + अंग

KD Job Updates

चूड़ान्त= चूड़ा + अंत	चिन्ताक्रान्त= चिंता + आक्रान्त
छिद्रान्वेषी= छिद्र + अनु + एषी	छुटपन= छोटा + पन
छुटभैया= छोटा + भैया	जगदीन्द्र= जगत् + इन्द्र
जगज्जय= जगत् + जय	जगन्नियन्ता= जगत् + नियन्ता
जगद्बन्धु= जगत् + बन्धु	जनतैक्य= जनता + ऐक्य
जनतौत्सुक्य= जनता + औत्सुक्य	ज्योतिर्मठ= ज्योतिः + मठ
जलौघ= जल + ओघ	जानकीश= जानकी + ईश
जागृतावस्था= जागृत + अवस्था	जात्यभिमानी= जाति + अभिमानी
जीवनानुकूल= जीवन + अनुकूल	जीवनोपयोगी= जीवन + उपयोगी
जीवनोपार्जन= जीवन + उपार्जन	जीविकार्थ= जीविका + अर्थ
जीर्णोद्धार = जीर्ण + उद्धार	जगदीश= जगत्+ईश
जलोर्मि= जल+ऊर्मि	झड़बेरी= झाड़ + बेड़
झंडोत्तोलन= झंडा + उत्तोलन	झगड़ालू= झगड़ा + आलू

KD Job Updates

संधि विच्छेद

(ट, ठ, ड, ढ़)

टुकड़तोड़= टुकड़ा + तोड़	टुटपूँजिया= टूटी + पूँजी
ठाढ़ेश्वरी= ठाढ़ा + ईश्वरी	ठकुरसुहाती= ठाकुर + सुहाना
डंडपेल= डंड + पेलना	डिठौना= डीठ + औना
ढँढोरिया= ढँढोरा + इया	ढकोसला= ढंक + कौशल

(त, थ)

तथैव =तथा +एव	तृष्णा =तृष +ना
तपोवन =तपः +वन	तल्लीन=तत्+लीन
तपोभूमि=तपः +भूमि	तेजोराशि=तेजः +राशि
तिरस्कार=तिरः +कार	तथापि =तथा +अपि
तेजोमय =तेजः +मय	तथास्तु = तथा + अस्तु
तमसावृत = तमसा + आवृत	तेजोपुंज =तेजः+पुंज
तद्रूप =तत्+रूप	तदाकार =तत्+आकार
तद्धित =तत्+हित	तद्रूप=तत्+रूप

KD Job Updates

तट्टीका=तत्+टीका	तेनादिष्ट=तेन+अदिष्ट
तज्जय= तत् + जय	तच्छरण= तत् + शरण
तच्छरीर= तत् + शरीर	तद्धवि= तत् + हवि
तदिह= तत् + इह	तदस्ति= तत् + अस्ति
तदाम्य= तत् + आत्म्य	तन्मय= तत् + मय
तत्त्व= तत् + त्व	तल्लय= तत् + लय
तच्छिव= तत् + शिव	त्वगिन्द्रिय= त्वक + इन्द्रिय
तिरस्कृत= तिरः + कृत	तेऽपि= ते + अपि
तत्तनोति= तद + तनोति	तृष्णा= तृष् + ना
तेऽद्र= ते + अद्र	तेजआभास= तेजः + आभास
तस्मिन्नारमे= तस्मिन + आरामे	त्रिलोकेश्वर= त्रिलोक + ईश्वर
तदुपरान्त= तत् + उपरान्त	थनैला= थन + ऐला
थुक्काफजीहत= थूक + फजीहत	

(द)

देवेन्द्र=देव +इन्द्र	दुर्नीति=दुः +नीति

KD Job Updates

संधि विच्छेद

दावानल=दाव+अनल	दिग्गज=दिक् +गज
दुर्धर्ष=दुः +धर्ष	दिग्भ्रम=दिक+भ्रम
दुर्दिन=दुः+दिन	दुर्वह=दुः+वह
देवर्षि=देव+ऋषि	दुर्नीति=दुः +नीति
दुर्ग=दुः +ग	दुश्शासन =दुः +शासन
दिगम्बर =दिक् +अम्बर	देवेश =देव +ईश
दुःस्थल =दुः +स्थल	दुस्तर =दुः +तर
देव्यागम=देवी +आगम	दुष्कर =दुः +कर
दुर्जन =दुः +जन	दोषारोपण = दोष + आरोपण
देहांत =देह+अंत	देवैश्वर्य=देव+ऐश्वर्य
देवालय=देव+आलय	दैव्यंग=देवी+अंग
दुष्परिणाम= दुः + परिणाम	दुर्बलता= दुः + बलता
दुर्घटना= दुः + घटना	देशान्तर= देश + अंतर
देशाभिमान= देश + अभिमान	देशानुराग= देश + अनुराग

KD Job Updates

देवैश्वर्य= देव + ऐश्वर्य	देवीच्छा= देवी + इच्छा
दैन्यावस्था= दैन्य + अवस्था	दैन्यादि= दैन्य + आदि
दृष्टि= दृष् + ति	दृष्टान्त= दृष्ट + अंत
दन्त्योष्ठ्य= दन्त + ओष्ठ्य	दिगन्त= दिक् + अंत
दिनेश= दिन + ईश	दिग्भाग= दिक् + भाग
दिग्हस्ती= दिक् + हस्ती	दुर्लभ= दुः + लभ
दुःखात्मक= दुख + आत्मक	दुर्बल= दुः + बल
दुरन्त= दुः + अंत	दुस्साहस= दुः + साहस
दुरुप्रयोग= दुः + उपयोग	दुष्कर्म= दुः + कर्म
दुःख= दुः + ख	दुःखान्त= दुःख + अंत
दुस्तर= दुः + तर	दुर्निवार= दुः + निवार

(ध)

धनान्ध= धन + अन्ध	धनुर्धर= धनुः + धर

KD Job Updates

संधि विच्छेद

धनुष्टंकार= धनुः + टंकार	धनित्व= धनिन + त्व
धर्मोपदेश= धर्म + उपदेश	धर्माधिकारी= धर्म + अधिकारी
ध्यानावस्थित= ध्यान + अवस्थित	

(न)

नमस्कार=नमः +कार	नाविक =नौ +इक
निस्सन्देह =निः +सन्देह	निराधार =निः +आधार
निस्सहाय=निः +सहाय	निर्भर=निः +भर
निष्कपट=निः +कपट	नीरोग =निः +रोग
नयन =ने+अन	निश्छल=निः +छल
निरन्तर=निः +अन्तर	निर्गुण =निः +गुण
नायक=नै +अक	निस्सार =निः +सार

KD Job Updates

निर्मल=निः +मल	निस्तार =निः +तार
नीरव =निः +रव	नरोत्तम = नर + उत्तम
निम्नाकित= निम्न + अंकित	नारीश्वर=नारी+ईश्वर
नागाधिराज= नाग + अधिराज	नद्यूर्मि=नदी+उर्मि
निश्चिन्त=निः+चिन्त	निश्चय=निः+चय
निर्विकार=निः+विकार	निरुपाय=निः+उपाय
नद्यम्बु=नदी+अम्बु	नदीश=नदी+ईश
निस्सृत=निः+सृत	निरीक्षण =निः+ईक्षण
निष्काम=निः+काम	निरर्थक=निः+अर्थक
निष्प्राण=निः+प्राण	निरुद्देश्य=निः+उद्देश्य

KD Job Updates

संधि विच्छेद

निष्फल=निः+फल	निर्जल=निः+जल
नारायण=नार+अयन	न्यून=निः+ऊन
निश्चल=निः+चल	निरीह=निः+ईह
निषिद्ध=निः+सिद्ध	निर्विवाद=निः+विवाद
निर्झर=निः+झर	निश्शब्द =निः+शब्द
निष्कारण=निः+कारण	नीरव=निः+रव
निस्संतान=निः+संतान	नमस्ते=नमः+ते
नरेंद्र=नर+इंद्र	निराशा=निः+आशा
निराहार=निः+आहार	नारींदु=नारी+इंदु
नवोऽकुंर= नव + अंकुर	नरेश= नर + ईश

KD Job Updates

नास्ति= न + अस्ति	नवोढा= नव + उढ़ा
नष्ट= नष् + त	न्यून= नि + ऊन
नयनाभिराम= नयन + अभिराम	नद्यर्पण= नदी + अर्पण
निष्पाप= निः + पाप	निष्पक्ष= निः + पक्ष
निस्तांर= निः + तार	निर्धन= निः + धन
निर्माण= निः + मान	निर्दोष= निः + दोष
निस्तेज= निः +तेज	निर्घोषित= निः + घोषित
निर्भीकता= निः + भीकता	निरर्थ= निः + अर्थ
निरौषध= निः + औषध	निर्हस्त= निः + हस्त
निरिच्छा= निः + इच्छा	निराशा= निः + आशा

KD Job Updates

संधि विच्छेद

निश्छिद्र= निः + छिद्र	निषिद्ध= निः + सिद्ध
निरन्तर= निः + अंतर	निर्वासित= निः + वासित
निरेफ= निः + रेफ	निरन्ध्र= निः + रन्ध्र
निराधार= निः + आधार	निरक्षर= निः + अक्षर
निगमागम= निगम + आगम	निर्जीव= निः + जीव
निर्बल= निः + बल	निर्बलात्मा= निर्बल + आत्मा
निर्दोष= निः + दोष	निराकार= निः + आकार
निर्णय= निः + नय	निर्भर= निः + भर
निर्द्वन्द्व= निः + द्वन्द्व	निश्चित= निः + चित
निश्चय= निः + चय	निष्क्रिय= निः + क्रिय

KD Job Updates

निर्विरोध= निः + विरोध	न्यूनातिन्यून= न्यून + अति
नियमानुसार= नियम + अनुसार	

(प)

परमार्थ= परम +अर्थ	पीताम्बर= पीत +अम्बर
परिणाम= परि+नाम	प्रमाण= प्र+मान
पयोधि= पयः+धि	पुस्तकालय= पुस्तक + आलय

KD Job Updates

संधि विच्छेद

प्रधानाध्यापक = प्रधान + अध्यापक	परोपकार = पर + उपकार
परमेश्वर = परम + ईश्वर	पदोन्नति = पद + उन्नति
प्रत्येक = प्रति + एक	परमावश्यक= परम + आवश्यक
प्रत्यक्ष = प्रति + अक्ष	प्रत्याघात = प्रति + अघात
पुलकावली = पुलक + अवलि	परन्तु =परम् +तु
पावक =पौ +अक	पुरुषोत्तम=पुरुष +उत्तम
पवन =पो +अन	पुरस्कार=पुरः +कार
परीक्षा=परि+ईक्षा	पयोद =पयः +द
परमौजस्वी=परम+ओजस्वी	पित्रादेश =पितृ+आदेश
पवित्र=पो+इत्र	प्रत्यय=प्रति+अय
पृष्ठ=पृष्+थ	प्रातःकाल=प्रातः+काल
पृथ्वीश=पृथ्वी+ईश	पावन=पौ+अन
पंचम=पम्+चम	प्रत्युत्तर=प्रति+उत्तर
पित्रिच्छा=पितृ+इच्छा	पुनर्जन्म=पुनः+जन्म

KD Job Updates

परिच्छेद=परि+छेद	प्रांगण=प्र+अंगण
प्रतिच्छाया=प्रति+छाया	प्रथमोऽध्यायः=प्रथमः+अध्यायः
परमौषध=परम+औषध	पुरुषोत्तम=पुरुष+उत्तम
पित्रनुमति=पितृ+अनुमति	पुनरुक्ति=पुनः+उक्ति
पश्र्वधम=पशु+अधम	प्रोत्साहन=प्र+उत्साहन
पुरोहित = पुरः+हित	परिष्कार=परिः+कार
पुनर्जन्म= पुनर +जन्म	परमैश्वर्य= परम + ऐश्वर्य
पच्छाक= पच + शाक	पदाक्रान्त= पद + आक्रान्त
परमाद्रि= परम + आद्रि	पराधीन= पर + अधीन
परमाणु= परम + अणु	परिच्छेद= परि + छेद
पर्यान्त= परि + आप्त	पश्र्वधम= पशु + अधम
पयोमन= पयः + मान	पंचांग= पंच + अंग
पितृऋण= पितृ + ऋण	पित्रादि= पितृ + आदि
पितारक्ष= पितः + रक्ष	पुरस्कृत= पुरः + कृत

KD Job Updates

संधि विच्छेद

पुनरुक्ति= पुनः + उक्ति	पुष्ट= पुष् + त
पुनरुत्थान= पुनः + उत्थान	पुनर्रचना= पुनः + रचना
प्रहार= प्र + हार	प्रत्याचरण= प्रति + आचरण
प्रतीत= प्रति + इत	प्रत्यारुयान= प्रति + आरुयान
प्रजार्थ= प्रजा + अर्थ	प्रत्यक्षात्मा= प्रत्यक्ष + आत्मा
प्रत्युपकार= प्रति + उपकार	प्रत्युत्पन्न= प्रति + उत्पन्न
प्रतिच्छवि= प्रति + छवि	प्रलयंकर= प्रलयम + कर
प्रार्थना= प्र + अर्थना	प्राणिमात्र= प्राणिन + मात्र
प्राणेश्वर= प्राण + ईश्वर	प्रोत्साह= प्र + उत्साह
प्रोज्ज्वल= प्र + उज्ज्वल	प्रौढ़= प्र + उढ़

(फ, ब)

फलाहारी= फल + आहारी	फलागम= फल + आगम
बलात्कार= बलात् + कार	बहिर्देश= बहिः + देश
बहिर्भाग= बहिः + भाग	बिंबोष्ठय= बिंब + ओष्ठ्य

KD Job Updates

बृहद्रथ= बृहत् + रथ	ब्रह्मास्त्र= ब्रह्म + अस्त्र
ब्रह्मानन्द= ब्रह्म + आनन्द	ब्रह्मर्षि= ब्रह्म + ऋषि
बहिर्मुख= बहिः + मुख	बहिष्कार= बहिः + कार

(भ)

भवन =भो +अन	भोजनालय =भोजन +आलय
भानूदय=भानु+उदय	भाग्योदय =भाग्य +उदय
भावुक=भौ+उक	भूषण=भूष्+अन
भूष्मा=भू+ऊष्मा	भूत्तम=भू+उत्तम
भगवद्गीता= भगवत् + गीता	भरण= भर + अन
भारतेन्दु= भारत + इन्दु	भाविनी= भौ + इनी
भास्कर= भाः + कर	भास्पति= भाः + पति
भावोन्मेष= भाव + उन्मेष	भिन्न= भिद् + न
भूर्जित= भू + उर्जित	भूदार= भू + उदार
भगवद्भक्ति= भगवत् + भक्ति	भविष्यद्वाणी= भविष्यत् + वाणी

KD Job Updates

संधि विच्छेद

(म)

मुनीन्द्र=मुनि+इन्द्र	महीन्द्र=मही +इन्द्र
मृण्मय=मृत्+मय	मातृण=मातृ+ऋण
महोर्मि=महा+ऊर्मि	मतैक्य=मत+ऐक्य
महौज=महा+ओज	मन्वन्तर=मनु+अन्तर
महार्णव=महा+अर्णव	मनोयोग=मनः+योग
महौषध=महा+औषध	मध्वासव=मधु+आसव
मृगेन्द्र=मृग+इन्द्र	मनोऽनुकूल=मनः+अनुकूल
महेश्वर=महा+ईश्वर	महेन्द्र=महा+इन्द्र
देव्यर्पण=देवी+अर्पण	मंगलाकार= मंगल + आकार
मत्स्याकार = मत्स्य + आकार	मध्यावकाश = मध्य + अवकाश
महोदय= महा + उदय	मतानुसार= मत + अनुसार
महर्षि= महा + ऋषि	महोत्सव= महा + उत्सव
मरणोत्तर = मरण+उत्तर	मदांध= मद+अंध

KD Job Updates

महत्वाकांक्षा= महत्व+आकांक्षा	मनोगत= मनः+गत
महेश= महा+ईश	मनोविकार= मनः+विकार
महाशय= महा+आशय	मनोज= मनः+ज
मनोरथ=मनः +रथ	मनोहर= मनः+हर
मनोभाव= मनः+भाव	महर्षि= महा+ऋषि
महैश्वर्य= महा+ऐश्वर्य	मनोबल= मनः+बल
मकराकृत= मकर + आकृत	मतैक्ता= मत + एकता
मनस्पात= मनः + ताप	मनोरंजन= मनः + रंजन
मनोवैज्ञानिक= मनः + वैज्ञानिक	मनोऽनुसार= मनः + अनुसार
मनोनीत= मनः + नीत	मनोऽवधान= मनः + अवधान
महच्छत्र= महत् + छत्र	महात्मा= महा + आत्मा
महत्व= महत् + त्व	महदोज= महत् + ओज
महीश्वर= मही + ईश्वर	महालाभ= महान + लाभ
महोरु= महा + ऊरु	महौज= महा + ओज

KD Job Updates

संधि विच्छेद

महौदार्य= महा + औदार्य	महौषधि= महा + औषधि
मायाधीन= माया + अधीन	मातृऋण= मातृ + ऋण
मात्रानन्द= मातृ + आनन्द	मुनीश्वर= मुनि + ईश्वर
मन्त्रोच्चारण= मंत्र + उत् + चारण	महामात्य= महा + अमात्य

(य)

यथेष्ट= यथा + इष्ट	यद्यपि= यदि + अपि
यशोऽभिलाषी= यशः+अभिलाषी	योजनावधि = योजन + अवधि
युगानुसार= युग+अनुसार	यथोचित = यथा +उचित
यशइच्छा=यशः +इच्छा	यशोदा =यशः+दा
युधिष्ठिर =युधि+स्थिर	यशोधरा=यशः+धरा
यशोधन=यशः+धन	यवनावनि= यवन + अवनि
यज्ञ= यज + न	यशोलाभ= यशः + लाभ
योऽसि= यो + असि	

(र, ल)

KD Job Updates

रत्नाकर= रत्न+आकर	राजर्षि= राज+ऋषि
रहस्योदघाटन = रहस्य + उद्घाटन	राज्यगार= राज्य + आगार
राज्याभिषेक= राज्य + अभिषेख	रमेश =रमा+ईश
रामायण=राम +अयन	रवींद्र= रवि+इंद्र
रजकण= रजः + कण	रसातल= रसा + अतल
रसास्वादन= रस + आस्वादन	राजाज्ञा= राजा + आज्ञा
रामावतार= राम + अवतार	रुद्रावतार= रूद्र + अवतार
रेखांश= रेखा + अंश	रसायन= रस + अयन
रहस्याधिकारी= रहस्य + अधिकारी	लक्ष्मीश= लक्ष्मी + ईश
लोकोक्ति = लोक + उक्ति	लघूर्मि=लघु+ऊर्मि
लोकोत्तर= लोक + उत्तर	लोकोपकार= लोक + उपकार
लम्बोदर= लम्ब + उदर	

(व)

वागीश= वाक्+ईश	वीरांगणा= वीर+अंगना
वाग्जाल= वाक्+जाल	विपज्जाल= विपद्+जाल

KD Job Updates

संधि विच्छेद

व्युत्पत्ति=वि+उत्पत्ति	व्यर्थ=वि +अर्थ
विद्योन्नति=विद्या+उन्नति	वयोवृद्ध=वयः+वृद्ध
व्याप्त=वि +आप्त	बहिष्कार=बहिः+कार
विद्यालय = विद्या + आलय	विद्याध्ययन= विद्या + अध्ययन
विद्योत्मा = विद्या + उत्तमा	वधूत्सव =वधू +उत्सव
व्ययामादी= व्यायाम + आदि	व्यायाम=वि +आयाम
वसुधैव=वसुधा +एव	व्याकुल=वि +आकुल
विद्यार्थी= विद्या+अर्थी	विषम=वि+सम
विधूदय=विधु+उदय	वनौषधि=वन+ओषधि
वधूत्सव=वधू+उत्सव	वधूर्जा=वधू+ऊर्जा
वधूल्लेख=वधू+उल्लेख	वध्वैश्वर्य=वधू + ऐश्वर्य
वधूर्मिका= वधू + उर्मिका	वनस्पति= वनः + पति
व्यस्त= वि + अस्त	व्यवहार= वि + अवहार
व्यभिचार= वि + अभिचार	व्यापकता= वि + आपकता

KD Job Updates

व्यापी= वि + आपी	व्यापक= वि + आपक
वार्तालाप= वार्ता + आलाप	वातावरण= वात + आवरण
वाग्रोध= वाक् + रोध	वारीश= वारि + ईश
वाग्दान= वाक् + दान	विच्छेद= वि + छेद
विद्योपदेश= विद्या + उपदेश	विन्यास= वि + नि + आस
विमलोदक= विमल + उदक	विपल्लीन= विपद् + लीन
विश्वामित्र= विश्व + अमित्र	वधूचित= वधू + उचित
विस्मरण= वि + स्मरण	वृद्धावस्था= वृद्ध + अवस्था
वृक्षच्छाया= वृक्ष + छाया	वृहदाकार= वृहत् + आकार
विशेषोन्मुख= विशेष + उन्मुख	विरुदावली= विरुद + अवली

(श, ष, स)

शंकर =शम् +कर	शिरोमणि=शिरः +मणि
शशांक= शश+अंक	शस्त्रास्त्र=शस्त्र+अस्त्र
शताब्दी= शत + अब्दी	शरच्चंद्र= शरत् + चन्द्र
शिलारोपण= शिला + आरोपण	शुद्धोदन= शुद्ध + ओदन

KD Job Updates

संधि विच्छेद

शेषांश= शेष + अंश	शीघ्रातिशीघ्र= शीघ्र + अतिशीघ्र
श्वासोच्छवास= श्वास + उत्	षोडशोपचार= षोडस + उपचार
सदहस्ती= सत् + हस्ती	संतुष्ट= सम् + तुष्ट
संदेह= सम् + देश	संघर्ष= सम् + घर्ष
समाचार= सम् + आचार	संकट= सम् + कल्प
समालोचना= सम् + आलोचना	सर्वोच्च= सर्व + उच्च
सम्मुख= सम् +मुख	सत्कार= सत् + कार
सद्गुरु= सत् +गुरु	सज्जन=सत् +जन
संसार=सम् +सार	सदाचार= सत् +आचार
संयम= सम+यम	स्वाधीन= स्व+अधीन
साश्चर्य= स+आश्चर्य	सावधान= स+अवधान
सच्चरित्र= सत+चरित्र	सदभाव=सत+भाव
सन्धि=सम+धि	स्वर्ग= स्वः+ग
शुद्धोदन= शुद्ध+ओदन	स्वार्थ= स्व+अर्थ

KD Job Updates

सदभावना= सत+भावना	सच्छास्त्र=सत्+शास्त्र
संचय=सम+चय	संवाद=सम् +वाद
सीमान्त=सीमा+अंत	सप्तर्षि= सप्त+ऋषि
समन्वय= सम् +अनु +अय	सत्याग्रह= सत्य+आग्रह
संगठन= सम+गठन	सद्विचार=सत्+विचार
समुच्चय= सम+उत्+चय	सर्वोदय= सर्व+उदय
संकोच= सम् + कोच	श्रेयस्कर=श्रेयः +कर
सुरेन्द्र= सुर+इन्द्र	सदानन्द= सत्+आनन्द
सद्धर्म= सत्+धर्म	संकल्प= सम् +कल्प
संयोग= सम् +योग	संयम =सम् +यम
संवत्= सम+वत्	साष्टाग= स+अष्ट+अंग
सर्वोत्तम= सर्व+उत्तम	सन्निहित= सत्+निहित
समुदाय= सम+उत्+आय	सूर्योदय= सूर्य+उदय
सदवाणी= सत्+वाणी	स्वयम्भूदय= स्वयम्भू+उदय
संतप्त= सम् + तप्त	षड्दर्शन= षट्+दर्शन

KD Job Updates

संधि विच्छेद

स्वाध्याय= स्व + अध्याय	सर्वाधिक = सर्व + अधिक
सर्वोच्च= सर्व + उच्च	सत्याग्रही = सत्य + आग्रही
स्वाभिमानी = स्व + अभिमानी	सर्वोत्तम= सर्व + उत्तम
स्वालंबन = स्व + अवलंबन	स्वर्णाक्षरों = स्वर्ण + अक्षरों
स्वाध्याय = स्व + अध्याय	स्वाधीनता= स्व + आधीनता
सत्याग्रह = सत्य + आग्रह	शरीरांत= शरीर + अंत
सदुत्तर= सत् + उत्तर	स्वागत =सु+आगत
सन्तोष=सम् +तोष	सरोज =सरः +ज
सद्वंश= सत् + वंश	सरोवर =सरः +वर
सतीश =सती +ईश	सदैव =सदा +एव
षडानन= षट्+आनन	षण्मास= षट्+मास
संकल्प= सम् +कल्प	संपूर्ण= सम्+पूर्ण
संबंध= सम् +बंध	संरक्षण= सम्+रक्षण
संवाद= सम्+वाद	संविधान= सम्+विधान

KD Job Updates

संसार= सम्+सार	सज्जन= सत्+जन
सम्मान= सम्+मान	सम्मति= सम्+मति
स्वच्छंद= स्व +छंद	स्वागत= सु+आगत
सन्नद= सत् +नद	संहारैषण= संहार + एषण
समीक्षा= सम् + ईक्षा	समुचित= सम् + उचित
संस्कृति= सम् + कृति	संगीत= सम् + गीत
संगठन= सम् + गठन	संदेह= सम् + देह
सन्तान= सम् +तान	सदुप्रयोग= सत् +उपयोग
संसर्ग= सम् + सर्ग	सत्यासक्त= सत्य + आसक्त
सर्वोदय= सर्व + उदय	समाधान= सम् + आधान
सदिच्छा= सत् + इच्छा	समालोचक= सम् + आलोचक
सतीच्छा= सती + इच्छा	सदवतार= सत् + अवतार
सत्कार= सत् + कार	सम्राज = सम् + राज
संकीर्ण= सम् + कीर्ण	संयोग= सम् + योग
संभव= सम् + भव	संयुक्त= सम् + युक्त

KD Job Updates

संधि विच्छेद

संग्राम= सम् + ग्राम	सहायतार्थ= सहायता + अर्थ
सज्जन= सत् + जन	सत्साहित्य= सत् + साहित्य
संलग्न= सम् + लग्न	संघाराम= संघ + आराम
सर्वोपरि= सर्व + उपरि	सर्वांगीण= सर्व + अंगीन
सारांश= सार + अंश	साश्चर्य= स + आश्चर्य
साग्रह= स + आग्रह	सावधान= स + अवधान
साधूहा= साधु + उहा	सिद्धांत= सिद्ध + अन्त
सिहांसन= सिंह + आसन	सुधेच्छा= सुधा + इच्छा
सुन्दरौदन= सुन्दर + ओदन	सुरानुकूल= सुर + अनुकूल
सेवार्थ= सेवा + अर्थ	सोत्साह= स + उत्साह
सोऽहम= सः + अहम्	स्वार्थ= स्व + अर्थ
स्वेच्छा= स्व + इच्छा	सहोदर= सह + उदर
सम्मति= सम् + मति	स्वैर= स्व + ईर
स्वाधीन= स्व + अधीन	सज्जाति= सत् + जाति

KD Job Updates

समुदाय= सम् + उदाय	समुद्रोर्मि= समुद्र + उर्मि
समृद्धि= सम् + ऋद्धि	सख्युचित= सखी + उचित
सच्छात्र= सत् + शास्त्र	संभव= सम् + भव
संपूर्ण= सम् + पूर्ण	संक्रान्ति= सम् + क्रान्ति
संहार= सम् + हार	संवत्= सम् + वत्
संसार= सम् + सार	संपर्क= सम् + पर्क
सन्धि= सम् + धि	संगम= सम् + गम
संकोच= सम् + कोच	संचय= सम् + चय
स्थानान्तर= स्थान + अंतर	स्वच्छन्द= स्व + छन्द
स्वात्मबल= स्व + आत्मबल	सुखोपभोग= सुख + उपभोग
साभिलाष= स + अभिलाष	सावकाश= स + अवकाश

KD Job Updates

संधि विच्छेद

सम्मानास्पद= सम् + मान + आस्पद	संग्रहालय= सम् + ग्रह + आलय
सदसद्विवेकिनी= सत् + असत् + विवेकिनी	सच्चिदानन्द= सत् + चित् + आनन्द
सर्वतोभावेन= सर्वतः + भावेन	स्वर्गारोहण= स्वर्ग + आरोहण
स्वेच्छाचारी= स्वेच्छा + आचारी	

(ह, ञ)

हिमांचल = हिम + अंचल	हिमालय= हिम + आलय
हरिश्चन्द्र= हरिः + चन्द्र	ह्रदयानन्द= ह्रदय + आनन्द
हताश= हत + आश	हितोपदेश= हित + उपदेश
हरीच्छा= हरि + इच्छा	ह्रदयहारिणी= ह्रदय + हारिणी
हिमाच्छादित= हिम + आच्छादित	हरेक= हर + एक
ज्ञानोपदेश= ज्ञान+उपदेश	ह्रद्येश= ह्रद् + देश

KD Job Updates

Alankar (अलंकार)

अलंकार की परिभाषा, प्रकार, भेद और उदाहरण

अलंकार की परिभाषा

- काव्य की शोभा बढ़ाने वाले तत्त्वों को अलंकार कहते हैं। अलंकार के चार भेद हैं-

1. शब्दालंकार,
2. अर्थालंकार,
3. उभयालंकार और
4. पाश्चात्य अलंकार।

अलंकार का विवेचन

शब्दालंकार

काव्य में शब्दगत चमत्कार को शब्दालंकार कहते हैं। शब्दालंकार मुख्य रुप से सात हैं, जो निम्न प्रकार हैं-अनुप्रास, यमक, श्लेष, वक्रोक्ति, पुनरुक्तिप्रकाश, पुनरुक्तिवदाभास और वीप्सा आदि।

1. अनुप्रास अलंकार

एक या अनेक वर्गों की पास-पास तथा क्रमानुसार आवृत्ति को 'अनुप्रास अलंकार' कहते हैं। इसके पाँच भेद हैं-

(i) छेकानुप्रास जहाँ एक या अनेक वर्णों की एक ही क्रम में एक बार आवृत्ति हो वहाँ छेकानुप्रास अलंकार होता है;

KD Job Updates

जैसे-

"इस करुणा कलित हृदय में,
अब विकल रागिनी बजती"

यहाँ करुणा कलित में छेकानुप्रास है।

(ii) वृत्यानुप्रास काव्य में पाँच वृत्तियाँ होती हैं-मधुरा, ललिता, प्रौढ़ा, परुषा और भद्रा। कुछ विद्वानों ने तीन वृत्तियों को ही मान्यता दी है-उपनागरिका, परुषा और कोमला। इन वृत्तियों के अनुकूल वर्ण साम्य को वृत्यानुप्रास कहते हैं;

जैसे-

'कंकन, किंकिनि, नूपुर, धुनि, सुनि'

यहाँ पर 'न' की आवृत्ति पाँच बार हुई है और कोमला या मधुरा वृत्ति का पोषण हुआ है। अत: यहाँ वृत्यानुप्रास है।

(iii) श्रुत्यनुप्रास जहाँ एक ही उच्चारण स्थान से बोले जाने वाले वर्षों की आवृत्ति होती है, वहाँ श्रुत्यनुप्रास अलंकार होता है;

जैसे-

तुलसीदास सीदति निसिदिन देखत तुम्हार निठुराई'

यहाँ 'त', 'द', 'स', 'न' एक ही उच्चारण स्थान (दन्त्य) से उच्चरित होने। वाले वर्षों की कई बार आवृत्ति हुई है, अत: यहाँ श्रुत्यनुप्रास अलंकार है।

(iv) अन्त्यानुप्रास अलंकार जहाँ पद के अन्त के एक ही वर्ण और एक ही स्वर की आवृत्ति हो, वहाँ अन्त्यानुप्रास अलंकार होता है;

जैसे-

"जय हनुमान ज्ञान गुन सागर।
जय कपीश तिहुँ लोक उजागर"।

यहाँ दोनों पदों के अन्त में 'आगर' की आवृत्ति हुई है, अत: अन्त्यानुप्रास अलंकार है।

KD Job Updates

(v) लाटानुप्रास जहाँ समानार्थक शब्दों या वाक्यांशों की आवृत्ति हो परन्तु अर्थ में अन्तर हो, वहाँ लाटानुप्रास अलंकार होता है;

जैसे-
"पूत सपूत, तो क्यों धन संचय?
पूत कपूत, तो क्यों धन संचय"?

यहाँ प्रथम और द्वितीय पंक्तियों में एक ही अर्थ वाले शब्दों का प्रयोग हुआ, है परन्तु प्रथम और द्वितीय पंक्ति में अन्तर स्पष्ट है, अतः यहाँ लाटानुप्रास अलंकार है।

2. यमक अलंकार

जहाँ एक शब्द या शब्द समूह अनेक बार आए किन्तु उनका अर्थ प्रत्येक बार भिन्न हो, वहाँ यमक अलंकार होता है;

जैसे-
"जेते तुम तारे, तेते नभ में न तारे हैं"

यहाँ पर 'तारे' शब्द दो बार आया है। प्रथम का अर्थ 'तारण करना' या 'उद्धार करना' है और द्वितीय 'तारे' का अर्थ 'तारागण' है, अतः यहाँ यमक अलंकार है।

3. श्लेष अलंकार

जहाँ एक ही शब्द के अनेक अर्थ निकलते हैं, वहाँ श्लेष अलंकार होता है;

जैसे-
"रहिमन पानी राखिए बिन पानी सब सून।
पानी गए न ऊबरै, मोती मानुष चून।।"

यहाँ 'पानी' के तीन अर्थ हैं—'कान्ति', 'आत्मसम्मान' और 'जल', अत: यहाँ श्लेष अलंकार है।

4. वक्रोक्ति अलंकार

KD Job Updates

जहाँ पर वक्ता द्वारा भिन्न अभिप्राय से व्यक्त किए गए कथन का श्रोता 'श्लेष' या 'काकु' द्वारा भिन्न अर्थ की कल्पना कर लेता है, वहाँ वक्रोक्ति अलंकार होता है। इसके दो भेद हैं- श्लेष वक्रोक्ति और काकु वक्रोक्ति।

(i) श्लेष वक्रोक्ति जहाँ शब्द के श्लेषार्थ के द्वारा श्रोता वक्ता के कथन से भिन्न अर्थ अपनी रुचि या परिस्थिति के अनुकूल अर्थ ग्रहण करता है, वहाँ श्लेष वक्रोक्ति अलंकार होता है;

जैसे-
"गिरजे तुव भिक्षु आज कहाँ गयो,
जाइ लखौ बलिराज के द्वारे।
व नृत्य करै नित ही कित है,
ब्रज में सखि सूर-सुता के किनारे।
पशुपाल कहाँ? मिलि जाइ कहूँ,
वह चारत धेनु अरण्य मँझारे।।"

(ii) काकु वक्रोक्ति जहाँ किसी कथन का कण्ठ की ध्वनि के कारण दूसरा __ अर्थ निकलता है, वहाँ काकु वक्रोक्ति अलंकार होता है;
जैसे-
"मैं सुकुमारि, नाथ वन जोगू।
तुमहिं उचित तप मो कहँ भोगू।"

5. पुनरुक्तिप्रकाश

इस अलंकार में कथन के सौन्दर्य के बहाने एक ही शब्द की आवृत्ति को पुनरुक्तिप्रकाश कहते हैं;

जैसे-
"ठौर-ठौर विहार करती सुन्दरी सुरनारियाँ।"

यहाँ 'ठौर-ठौर' की आवृत्ति में पुनरुक्तिप्रकाश है। दोनों 'ठौर' का अर्थ एक ही . है परन्तु पुनरुक्ति से कथन में बल आ गया है।

6. पुनरुक्तिवदाभास

KD Job Updates

जहाँ कथन में पुनरुक्ति का आभास होता है, वहाँ पुनरुक्तिवदाभास अलंकार होता है;

जैसे-
"पुनि फिरि राम निकट सो आई।"

यहाँ 'पुनि' और 'फिरि' का समान अर्थ प्रतीत होता है, परन्तु पुनि का अर्थ-पुन: (फिर) है और 'फिरि' का अर्थ-लौटकर होने से पुनरुक्तिावदाभास अलंकार है।

7. वीप्सा

जब किसी कथन में अत्यन्त आदर के साथ एक शब्द की अनेक बार आवृत्ति होती है तो वहाँ वीप्सा अलंकार होता है;

जैसे-
"हा! हा!! इन्हें रोकन को टोक न लगावो तुम।"

यहाँ 'हा!' की पुनरुक्ति द्वारा गोपियों का विरह जनित आवेग व्यक्त होने से वीप्सा अलंकार है।

अर्थालंकार

- साहित्य में अर्थगत चमत्कार को अर्थालंकार कहते हैं। प्रमुख अर्थालंकार मुख्य रुप से तेरह हैं-उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, भ्रान्तिमान, सन्देह, दृष्टान्त, अतिशयोक्ति, विभावना, अन्योक्ति, विरोधाभास, विशेषोक्ति, प्रतीप, अर्थान्तरन्यास आदि।

1. उपमा

समान धर्म के आधार पर जहाँ एक वस्तु की समानता या तुलना किसी दूसरी वस्तु से की जाती है, वहाँ उपमा अलंकार होता है। उपमा के चार अंग हैं

1. उपमेय वर्णनीय वस्तु जिसकी उपमा या समानता दी जाती है, उसे 'उपमेय' कहते हैं; जैसे-उसका मुख चन्द्रमा के समान सुन्दर है। वाक्य में 'मुख' की चन्द्रमा से समानता बताई गई है, अत: मुख उपमेय है।

KD Job Updates

2. उपमान जिससे उपमेय की समानता या तुलना की जाती है उसे उपमान कहते हैं; जैसे-उपमेय (मुख) की समानता चन्द्रमा से की गई है, अतः चन्द्रमा उपमान है।
3. साधारण धर्म जिस गुण के लिए उपमा दी जाती है, उसे साधारण धर्म कहते हैं। उक्त उदाहरण में सुन्दरता के लिए उपमा दी गई है, अत: सुन्दरता साधारण धर्म है।
4. वाचक शब्द जिस शब्द के द्वारा उपमा दी जाती है, उसे वाचक शब्द कहते हैं। उपर्युक्त उदाहरण में समान शब्द वाचक है। इसके अलावा 'सी', 'सम', 'सरिस' सदृश शब्द उपमा के वाचक होते हैं। उपमा के तीन भेद हैं–पूर्णोपमा, लुप्तोपमा और मालोपमा।

(क) पूर्णोपमा जहाँ उपमा के चारों अंग विद्यमान हों वहाँ पूर्णोपमा अलंकार होता है;

जैसे-
हरिपद कोमल कमल से'

(ख) लुप्तोपमा जहाँ उपमा के एक या अनेक अंगों का अभाव हो वहाँ लुप्तोपमा अलंकार होता है;

जैसे-
"पड़ी थी बिजली-सी विकराल।
लपेटे थे घन जैसे बाल" ।

(ग) मालोपमा जहाँ किसी कथन में एक ही उपमेय के अनेक उपमान होते हैं वहाँ मालोपमा अलंकार होता है।

जैसे-
"चन्द्रमा-सा कान्तिमय, मृदु कमल-सा कोमल महा
कुसुम-सा हँसता हुआ, प्राणेश्वरी का मुख रहा।।"

2. रूपक

जहाँ उपमेय में उपमान का निषेधरहित आरोप हो अर्थात् उपमेय और उपमान को एक रूप कह दिया जाए, वहाँ रूपक अलंकार होता है;

KD Job Updates

जैसे-
"बीती विभावरी जाग री।
अम्बर-पनघट में डुबो रही तारा-घट ऊषा-नागरी"।

यहाँ अम्बर-पनघट, तारा-घट, ऊषा-नागरी में उपमेय उपमान एक हो गए हैं, अत: रूपक अलंकार है।

3. उत्प्रेक्षा

जहाँ उपमेय में उपमान की सम्भावना व्यक्त की जाए वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। इसमें जनु, मनु, मानो, जानो, इव, जैसे वाचक शब्दों का प्रयोग होता है। उत्प्रेक्षा के तीन भेद हैं- वस्तूत्प्रेक्षा, हेतूत्प्रेक्षा और फलोत्प्रेक्षा।

(i) वस्तूत्प्रेक्षा जहाँ एक वस्तु में दूसरी वस्तु की सम्भावना की जाए वहाँ वस्तूत्प्रेक्षा होती है;

जैसे-
"उसका मुख मानो चन्द्रमा है।"

(ii) हेतृत्प्रेक्षा जब किसी कथन में अवास्तविक कारण को कारण मान लिया जाए तो हेतूत्प्रेक्षा होती है;

जैसे-
"पिउ सो कहेव सन्देसड़ा, हे भौंरा हे काग।
सो धनि विरही जरिमुई, तेहिक धुवाँ हम लाग"।।

यहाँ कौआ और भ्रमर के काले होने का वास्तविक कारण विरहिणी के विरहाग्नि में जल कर मरने का धुवाँ नहीं हो सकता है फिर भी उसे कारण माना गया है अत: हेतूत्प्रेक्षा अलंकार है।

(iii) फलोत्प्रेक्षा जहाँ अवास्तविक फल को वास्तविक फल मान लिया जाए, वहाँ फलोत्प्रेक्षा होती है;

जैसे-
"नायिका के चरणों की समानता प्राप्त करने के लिए कमल जल में तप रहा है।"

KD Job Updates

यहाँ कमल का जल में तप करना स्वाभाविक है। चरणों की समानता प्राप्त करना वास्तविक फल नहीं है पर उसे मान लिया गया है, अतः यहाँ फलोत्प्रेक्षा है।

4. भ्रान्तिमान

जहाँ समानता के कारण एक वस्तु में किसी दूसरी वस्तु का भ्रम हो, वहाँ भ्रान्तिमान अलंकार होता है;

जैसे-
"पायँ महावर देन को नाइन बैठी आय।
फिरि-फिरि जानि महावरी, एड़ी मीड़ति जाय।।"

यहाँ नाइन को एड़ी की स्वाभाविक लालिमा में महावर की काल्पनिक प्रतीति हो रही है, अत: यहाँ भ्रान्तिमान अलंकार है।

5. सन्देह

जहाँ अति सादृश्य के कारण उपमेय और उपमान में अनिश्चय की स्थिति बनी रहे अर्थात् जब उपमेय में अन्य किसी वस्तु का संशय उत्पन्न हो जाए, तो वहाँ सन्देह अलंकार होता है;

जैसे-
"सारी बीच नारी है या नारी बीच सारी है,
कि सारी की नारी है कि नारी की ही सारी।"

यहाँ उपमेय में उपमान का संशयात्मक ज्ञान है अतः यहाँ सन्देह अलंकार है। 6. दृष्टान्त जहाँ किसी बात को स्पष्ट करने के लिए सादृश्यमूलक दृष्टान्त प्रस्तुत किया जाता है, वहाँ दृष्टान्त अलंकार होता है;

जैसे-
"मन मलीन तन सुन्दर कैसे।
विषरस भरा कनक घट जैसे।।"

यहाँ उपमेय वाक्य और उपमान वाक्य में बिम्ब-प्रतिबिम्ब का भाव है अतः यहाँ दृष्टान्त अलंकार है।

KD Job Updates

7. अतिशयोक्ति

जहाँ किसी विषयवस्तु का उक्ति चमत्कार द्वारा लोकमर्यादा के विरुद्ध बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन किया जाता है, वहाँ अतिशयोक्ति अलंकार होता है;

जैसे-
हनुमान की पूँछ में, लगन न पाई आग।
सारी लंका जरि गई, गए निशाचर भाग।"

यहाँ हनुमान की पूंछ में आग लगने के पहले ही सारी लंका का जलना और राक्षसों के भागने का बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन होने से अतिशयोक्ति अलंकार है।

8. विभावना

जहाँ कारण के बिना कार्य के होने का वर्णन हो, वहाँ विभावना अलंकार होता है;

जैसे-
"बिनु पग चलइ सुनइ बिनु काना।
कर बिनु करम करै विधि नाना।।
आनन रहित सकल रस भोगी।
बिनु बानी वक्ता बड़ जोगी।।"

यहाँ पैरों के बिना चलना, कानों के बिना सुनना, बिना हाथों के विविध कर्म करना, बिना मुख के सभी रस भोग करना और वाणी के बिना वक्ता होने का उल्लेख होने से विभावना अलंकार है।

9. अन्योक्ति

जहाँ किसी वस्तु या व्यक्ति को लक्ष्य कर कही जाने वाली बात दूसरे के लिए कही जाए, वहाँ अन्योक्ति अलंकार होता है;

जैसे-
"नहिं पराग नहिं मधुर मधु, नहिं विकास एहि काल।
अली कली ही सो बिंध्यौ, आगे कौन हवाल।।"

KD Job Updates

यहाँ पर अप्रस्तुत के वर्णन द्वारा प्रस्तुत का बोध कराया गया है अतः यहाँ अन्योक्ति अलंकार है।

10. विरोधाभास

जहाँ वास्तविक विरोध न होने पर भी विरोध का आभास हो वहाँ विरोधाभास अलंकार होता है;

जैसे-
"या अनुरागी चित्त की, गति समझै नहिं कोय।
ज्यों ज्यों बूडै स्याम रंग, त्यों त्यों उज्ज्वल होय।।"

यहाँ पर श्याम (काला) रंग में डूबने से उज्ज्वल होने का वर्णन है अतः यहाँ विरोधाभास अलंकार है।

11. विशेषोक्ति

जहाँ कारण के रहने पर भी कार्य नहीं होता है वहाँ विशेषोक्ति अलंकार होता है;

जैसे-
"पानी बिच मीन पियासी।
मोहि सुनि सुनि आवै हासी।।"

12. प्रतीप

प्रतीप का अर्थ है-'उल्टा या विपरीत'। जहाँ उपमेय का कथन उपमान के रूप में तथा उपमान का उपमेय के रूप में किया जाता है, वहाँ प्रतीप अलंकार होता है;

जैसे-
"उतरि नहाए जमुन जल, जो शरीर सम स्याम"

यहाँ यमुना के श्याम जल की समानता रामचन्द्र के शरीर से देकर उसे उपमेय बना दिया है, अतः यहाँ प्रतीप अलंकार है।

13. अर्थान्तरन्यास

KD Job Updates

जहाँ किसी सामान्य बात का विशेष बात से तथा विशेष बात का सामान्य बात से समर्थन किया जाए, वहाँ अर्थान्तरन्यास अलंकार होता है;

जैसे-
"सबै सहायक सबल के, कोउ न निबल सुहाय।
पवन जगावत आग को, दीपहिं देत बुझाय।।"

उभयालंकार

- जो शब्द और अर्थ दोनों में चमत्कार की वृद्धि करते हैं, उन्हें उभयालंकार कहते हैं। इसके दो भेद हैं

(i) संकर जहाँ पर दो या अधिक अलंकार आपस में 'नीर-क्षीर' के समान सापेक्ष रूप से घुले-मिले रहते हैं, वहाँ 'संकर' अलंकार होता है;

जैसे-
"नाक का मोती अधर की कान्ति से,
बीज दाडिम का समझकर भ्रान्ति से।
देखकर सहसा हुआ शुक मौन है,
सोचता है अन्य शुक यह कौन है?"

(ii) संसृष्टि जहाँ दो अथवा दो से अधिक अलंकार परस्पर मिलकर भी स्पष्ट रहें, वहाँ 'संसृष्टि' अलंकार होता है;

जैसे
तिरती गृह वन मलय समीर,
साँस, सुधि, स्वप्न, सुरभि, सुखगान।
मार केशर-शर, मलय समीर,
हृदय हुलसित कर पुलकित प्राण।

पाश्चात्य अलंकार

KD Job Updates

- हिन्दी साहित्य पर पाश्चात्य प्रभाव पड़ने के फलस्वरूप पाश्चात्य अलंकारों का समावेश हुआ है। प्रमुख पाश्चात्य अलंकार है-मानवीकरण, भावोक्ति, ध्वन्यात्मकता और विरोध चमत्कार। परीक्षा की दृष्टि से मानवीकरण अलंकार ही महत्त्वपूर्ण है, इसलिए यहाँ उसी का विवरण दिया गया है। मानवीकरण जहाँ प्रकृति पदार्थ अथवा अमूर्त भावों को मानव के रूप में चित्रित किया जाता है, वहाँ मानवीकरण अलंकार होता है;

जैसे-

"दिवसावसान का समय, मेघमय आसमान से उतर रही है।
वह संध्या-सुन्दरी परी-सी, धीरे-धीरे-धीरे।"

यहाँ संध्या को सुन्दर परी के रूप में चित्रित किया गया है, अत: यहाँ मानवीकरण अलंकार है।

****

अलंकार मध्यान्तर प्रश्नावला

प्रश्न 1.
'सन्देसनि मधुबन-कूप भरे' में कौन-सा अलंकार है? (उत्तराखण्ड समूह-ग भर्ती परीक्षा 2014)
(a) उपमा (b) अतिशयोक्ति (c) अनुप्रास (d) इनमें से कोई नहीं
उत्तर :
(a) उपमा

प्रश्न 2.
'काली घटा का घमण्ड घटा' उपरोक्त पंक्ति (राजस्व विभाग उ.प्र. लेखपाल भर्ती परीक्षा 20lS)
(a) रूपक (b) यमक (c) उपमा (d) उत्प्रेक्षा
उत्तर :
(b) यमक

KD Job Updates

प्रश्न 3.
"अम्बर-पनघट में डुबो रही, तारा-घट ऊषा-नागरी' में कौन-सा अलंकार है? (राजस्व विभाग, उ.प्र. लेखपाल भर्ती परीक्षा 2015)
(a) श्लेष (b) रूपक (c) उपमा (d) अनुप्रास
उत्तर :
(b) रूपक

प्रश्न 4.
'उदित उदय-गिरि मंच पर रघुबर बाल पतंग' में कौन-सा अलंकार है? (छत्तीसगढ़ सिविल सेवा प्रारम्भिक परीक्षा 2013)
(a) उपमा (b) रूपक (c) उत्प्रेक्षा (d) भ्रान्तिमान
उत्तर :
(a) उपमा

प्रश्न 5.
'खिली हुई हवा आई फिरकी सी आई, चली गई पंक्ति में अलं (यू.पी.एस.एस.सी. कनिष्ठ सहायक परीक्षा 2015)
(a) सम्भावना (b) उत्प्रेक्षा (c) उपमा (d) अनुप्रास
उत्तर :
(c) उपमा

प्रश्न 6.
"पापी मनुज भी आज मुख से, राम नाम निकालते' इस काव्य पंक्ति में अलंकार है
(यू.पी.एस.एस.सी. कनिष्ठ सहायक परीक्षा 2015)
(a) विभावना (b) उदाहरण (c) विरोधाभास (d) दृष्टान्त
उत्तर :
(c) विरोधाभास

प्रश्न 7.
"दिवसावसान का समय मेघमय आसमान से उतर रही है वह संध्या सुन्दरी परी-सी धीरे-

KD Job Updates

धीरे-धीरे।" उपरोक्त पंक्तियों में अलंकार है (उप-निरीक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 2014)
(a) उपमा (b) रूपक (c) यमक (d) इनमें से कोई नहीं
उत्तर :
(d) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 8.
"तरनि तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाए।" उपरोक्त पंक्तियों में कौन-सा अलंकार है?
(उप-निरीक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 2014)
(a) यमक (b) उत्प्रेक्षा (c) उपमा (d) अनुप्रास
उत्तर :
(d) अनुप्रास

प्रश्न 9.
'अब रही गुलाब में अपत कटीली डार।' उपरोक्त पंक्ति में अलंकार है (उप-निरीक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 2014)
(a) रूपक (b) यमक (c) अन्योक्ति (d) पुनरुक्ति
उत्तर :
(c) अन्योक्ति

प्रश्न 10.
"पट-पीत मानहुँ तड़ित रुचि, सुचि नौमि जनक सुतावरं।" उपरोक्त पंक्ति में अलंकार है
(उप-निरीक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 2014)
(a) उपमा (b) रूपक (c) उत्प्रेक्षा (d) उदाहरण
उत्तर :
(c) उत्प्रेक्षा

KD Job Updates

Kal (काल)

Kal(Tense)(काल)

काल (Tense) की परिभाषा

- क्रिया के जिस रूप से कार्य करने या होने के समय का ज्ञान होता है उसे 'काल' कहते है।
- **दूसरे शब्दों में**- क्रिया के उस रूपान्तर को काल कहते है, जिससे उसके कार्य-व्यापर का समय और उसकी पूर्ण अथवा अपूर्ण अवस्था का बोध हो।

जैसे-
(1)बच्चे खेल रहे हैं। मैडम पढ़ा रही हैं।
(2)बच्चे खेल रहे थे। मैडम पढ़ा रही थी।
(3)बच्चे खेलेंगे। मैडम पढ़ायेंगी।

पहले वाक्य में क्रिया वर्तमान समय में हो रही है। दूसरे वाक्य में क्रिया पहले ही समाप्त हो चुकी थी तथा तीसरे वाक्य की क्रिया आने वाले समय में होगी। इन वाक्यों की क्रियाओं से कार्य के होने का समय प्रकट हो रहा है।

KD Job Updates

काल के भेद-

काल के तीन भेद होते है-
(1)वर्तमान काल (present Tense) - जो समय चल रहा है।
(2)भूतकाल(Past Tense) - जो समय बीत चुका है।
(3)भविष्यत काल (Future Tense)- जो समय आने वाला है।

(1) वर्तमान काल:-

- क्रिया के जिस रूप से वर्तमान में चल रहे समय का बोध होता है, उसे वर्तमान काल कहते है।

जैसे- पिता जी समाचार सुन रहे हैं।
पुजारी पूजा कर रहा है।
प्रियंका स्कूल जाती हैं।
उपर्युक्त वाक्यों में क्रिया के वर्तमान समय में होने का पता चल रहा है। अतः ये सभी क्रियाएँ वर्तमान काल की क्रियाएँ हैं।

वर्तमान कल की पहचान के लिए वाक्य के अन्त में 'ता, ती, ते, है, हैं' आदि आते है।

वर्तमान काल के भेद---

वर्तमान काल के पाँच भेद होते है-
(i)सामान्य वर्तमानकाल
(ii)अपूर्ण वर्तमानकाल
(iii)पूर्ण वर्तमानकाल
(iv)संदिग्ध वर्तमानकाल
(v)तत्कालिक वर्तमानकाल
(vi)संभाव्य वर्तमानकाल

(i)सामान्य वर्तमानकाल(Present Indefinite) :-क्रिया का वह रूप जिससे क्रिया का वर्तमानकाल में होना पाया जाय, 'सामान्य वर्तमानकाल' कहलाता है।
दूसरे शब्दों में- जो क्रिया वर्तमान में सामान्य रूप से होती है, वह सामान्य वर्तमान काल की क्रिया कहलाती है।

क्रिया के जिस रूप से सामान्यतः यह प्रकट हो कि कार्य का समय वर्तमान में है, न कार्य के अपूर्ण होने का संकेत मिले न संदेह का, वहाँ सामान्य वर्तमान होता है।
जैसे- 'बच्चा खिलौनों से खेलता है'।
वाक्य में 'खेलना' प्रस्तुत समय में है, किन्तु न तो वह अपूर्ण है और न ही अनिश्चित, अतः यहाँ सामान्य वर्तमान काल है।

कुछ अन्य उदाहरण देखिए-
वह पुस्तक पढ़ता है।
माली पौधों को पानी देता है।

KD Job Updates

(ii)अपूर्ण वर्तमानकाल(Present Continuous):- क्रिया के जिस रूप से यह बोध हो कि वर्तमान काल में कार्य अभी पूर्ण नहीं हुआ, वह चल रहा है, उसे अपूर्ण वर्तमान कहते हैं।

उदाहरण के लिए- 'मोहन विद्यालय जा रहा है'
वाक्य में जाने का कार्य अभी हो रहा है, मोहन विद्यालय पहुँचा नहीं है। अतः यहाँ अपूर्ण वर्तमान है।

कुछ अन्य उदाहरण देखिए-
वर्षा हो रही है। अनुराग लिख रहा है।

(iii)पूर्ण वर्तमानकाल(Present Perfect):- इससे वर्तमानकाल में कार्य की पूर्ण सिद्धि का बोध होता है।
जैसे- वह आया है। सीता ने पुस्तक पढ़ी है।

(iv)संदिग्ध वर्तमानकाल(Present Doubtful):- जिससे क्रिया के होने में सन्देह प्रकट हो, पर उसकी वर्तमानकाल में सन्देह न हो। उसे संदिग्ध वर्तमानकाल कहते हैं।
सरल शब्दों में- जिस क्रिया के वर्तमान समय में पूर्ण होने में संदेह हो, उसे संदिग्ध वर्तमानकाल कहते हैं।

जैसे- 'माँ खाना बना रही होगी। वाक्य में 'रही होगी' से खाना बनाने के कार्य को निश्चित रूप से नहीं कहा गया, उसमें संदेह की स्थिति बनी हुई है, अतः यहाँ संदिग्ध वर्तमान है।

अन्य उदाहरण-
राम पढ़ता होगा।
हलवाई मिठाई बनाता होगा।
आज विद्यालय खुला होगा।

(v)तत्कालिक वर्तमानकाल:- क्रिया के जिस रूप से यह पता चलता है कि कार्य वर्तमानकाल में हो रही है उसे तात्कालिक वर्तमानकाल कहते हैं।
जैसे- मै पढ़ रहा हूँ। वह जा रहा है।

KD Job Updates

(vi)सम्भाव्य वर्तमानकाल :- इससे वर्तमानकाल में काम के पूरा होने की सम्भवना रहती है। उसे सम्भाव्य वर्तमानकाल कहते हैं।
संभाव्य का अर्थ होता है संभावित या जिसके होने की संभावना हो।

जैसे- वह आया है।
वह लौटा हो।
वह चलता हो।
उसने खाया हो।

(2)भूतकाल :-

- क्रिया के जिस रूप से बीते हुए समय का बोध होता है, उसे भूतकाल कहते है।
- **सरल शब्दों में-** जिससे क्रिया से कार्य की समाप्ति का बोध हो, उसे भूतकाल की क्रिया कहते हैं।

जैसे- वह खा चुका था; राम ने अपना पाठ याद किया; मैंने पुस्तक पढ़ ली थी।
उपर्युक्त सभी वाक्य बीते हुए समय में क्रिया के होने का बोध करा रहे हैं। अतः ये भूतकाल के वाक्य है।

भूतकाल को पहचानने के लिए वाक्य के अन्त में 'था, थे, थी' आदि आते हैं।

भूतकाल के भेद--

भूतकाल के छह भेद होते है-
(i)सामान्य भूतकाल (Simple Past)
(ii)आसन भूतकाल (Recent Past)
(iii)पूर्ण भूतकाल (Complete Past)
(iv)अपूर्ण भूतकाल (Incomplete Past)
(v)संदिग्ध भूतकाल (Doubtful Past)
(vi)हेतुहेतुमद् भूत (Conditional Past)

KD Job Updates

Kal (काल)

(i)सामान्य भूतकाल(Simple Past):- जिससे भूतकाल की क्रिया के विशेष समय का ज्ञान न हो, उसे सामान्य भूतकाल कहते हैं।
दूसरे शब्दों में-क्रिया के जिस रूप से काम के सामान्य रूप से बीते समय में पूरा होने का बोध हो, उसे सामान्य भूतकाल कहते हैं।

जैसे- मोहन आया।
सीता गयी।
श्रीराम ने रावण को मारा
उपर्युक्त वाक्यों की क्रियाएँ बीते हुए समय में पूरी हो गई। अतः ये सामान्य भूतकाल की क्रियाएँ हैं।

(ii)आसन्न भूतकाल(Recent Past):-क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि क्रिया अभी कुछ समय पहले ही पूर्ण हुई है, उसे आसन्न भूतकाल कहते हैं।
इससे क्रिया की समाप्ति निकट भूत में या तत्काल ही सूचित होती है।

जैसे- मैने आम खाया हैं।
मैं अभी सोकर उठी हूँ।
अध्यापिका पढ़ाकर आई हैं।
उपर्युक्त वाक्यों की क्रियाएँ अभी-अभी पूर्ण हुई हैं। इसलिए ये आसन्न भूतकाल की क्रियाएँ हैं।

(iii)पूर्ण भूतकाल(Complete Past):- क्रिया के उस रूप को पूर्ण भूत कहते है, जिससे क्रिया की समाप्ति के समय का स्पष्ट बोध होता है कि क्रिया को समाप्त हुए काफी समय बीता है।
दूसरे शब्दों में- क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि कार्य पहले ही पूरा हो चुका है, उसे पूर्ण भूतकाल कहते हैं।

जैसे- उसने श्याम को मारा था।
अंग्रेजों ने भारत पर राज किया था।
महादेवी वर्मा ने संस्मरण लिखे थे।

KD Job Updates

उपर्युक्त वाक्यों में क्रियाएँ अपने भूतकाल में पूर्ण हो चुकी थीं। अतः ये पूर्ण भूतकाल की क्रियाएँ हैं।

पूर्ण भूतकाल में क्रिया के साथ 'था, थी, थे, चुका था, चुकी थी, चुके थे आदि लगता है।

(iv)अपूर्ण भूतकाल(Incomplete Past):- जिस क्रिया से यह ज्ञात हो कि भूतकाल में कार्य सम्पन्न नहीं हुआ था - अभी चल रहा था, उसे अपूर्ण भूत कहते हैं।

जैसे- सुरेश गीत गा रहा था।
रीता सो रही थी।
उपर्युक्त वाक्यों में क्रियाएँ से कार्य के अतीत में आरंभ होकर, अभी पूरा न होने का पता चल रहा है। अतः ये अपूर्ण भूतकाल की क्रियाएँ हैं।

(v)संदिग्ध भूतकाल(Doubtful Past):- भूतकाल की जिस क्रिया से कार्य होने में अनिश्चितता अथवा संदेह प्रकट हो, उसे संदिग्ध भूतकाल कहते है।
इसमें यह सन्देह बना रहता है कि भूतकाल में कार्य पूरा हुआ या नही।

जैसे- तू गाया होगा।
बस छूट गई होगी।
दुकानें बंद हो चुकी होगी।

उपर्युक्त वाक्यों की क्रियाएँ से भूतकाल में काम पूरा होने में संदेह का पता चलता है। अतः ये संदिग्ध भूतकाल की क्रियाएँ हैं।

(vi)हेतुहेतुमद् भूतकाल(Conditional Past):- यदि भूतकाल में एक क्रिया के होने या न होने पर दूसरी क्रिया का होना या न होना निर्भर करता है, तो वह हेतुहेतुमद् भूतकाल क्रिया कहलाती है।

'हेतु' का अर्थ है कारण। जहाँ भूतकाल में किसी कार्य के न हो सकने का वर्णन कारण के साथ दो वाक्यों में दिया गया हो, वहाँ हेतुहेतुमद् भूतकाल होता है।
इससे यह पता चलता है कि क्रिया भूतकाल में होनेवाली थी, पर किसी कारण न हो सका।

यदि तुमने परिश्रम किया होता, तो पास हो जाते।
यदि वर्षा होती, तो फसल अच्छी होती।

KD Job Updates

उपर्युक्त वाक्यों की क्रियाएँ एक-दूसरे पर निर्भर हैं। पहली क्रिया के न होने पर दूसरी क्रिया भी पूरी नहीं होती है। अतः ये हेतुहेतुमद् भूतकाल की क्रियाएँ हैं।

(3)भविष्यत काल:-

- भविष्य में होनेवाली क्रिया को भविष्यतकाल की क्रिया कहते है।
- **दूसरे शब्दो में-** क्रिया के जिस रूप से काम का आने वाले समय में करना या होना प्रकट हो, उसे भविष्यतकाल कहते है।

जैसे- वह कल घर जाएगा।
हम सर्कस देखने जायेंगे।
किसान खेत में बीज बोयेगा।
उपर्युक्त वाक्यों की क्रियाएँ से पता चलता है कि ये सब कार्य आने वाले समय में पूरे होंगे। अतः ये भविष्यत काल की क्रियाएँ हैं।

भविष्यत काल की पहचान के लिए वाक्य के अन्त में 'गा, गी, गे' आदि आते है।

भविष्यत काल के भेद---

भविष्यतकाल के तीन भेद होते है-
(i)सामान्य भविष्यत काल
(ii)सम्भाव्य भविष्यत काल
(iii)हेतुहेतुमद्भविष्य भविष्यत काल

(i)सामान्य भविष्यत काल :- क्रिया के जिस रूप से उसके भविष्य में सामान्य ढंग से होने का पता चलता है, उसे सामान्य भविष्यत काल कहते हैं।
इससे यह प्रकट होता है कि क्रिया सामान्यतः भविष्य में होगी।

जैसे- बच्चे कैरमबोर्ड खेलेंगे।
वह घर जायेगा।
दीपक अख़बार बेचेगा।

KD Job Updates

उपर्युक्त वाक्यों में क्रियाएँ भविष्य में सामान्य रूप से काम के होने की सूचना दे रही हैं। अतः ये सामान्य भविष्यत काल की क्रियाएँ हैं।

(ii)सम्भाव्य भविष्यत काल:-क्रिया के जिस रूप से उसके भविष्य में होने की संभावना का पता चलता है, उसे सम्भाव्य भविष्यत काल कहते हैं।
जिससे भविष्य में किसी कार्य के होने की सम्भावना हो।

जैसे- शायद चोर पकड़ा जाए।
परीक्षा में शायद मुझे अच्छे अंक प्राप्त हों।
हो सकता है कि मैं कल वहाँ जाऊँ।

उपर्युक्त वाक्यों में क्रियाओं के भविष्य में होने की संभावना है। ये पूर्ण रूप से होंगी, ऐसा निश्चित नहीं होता। अतः ये सम्भाव्य भविष्यत काल की क्रियाएँ हैं।

(iii)हेतुहेतुमद्भविष्य भविष्यत काल:- क्रिया के जिस रूप से एक कार्य का पूरा होना दूसरी आने वाले समय की क्रिया पर निर्भर हो उसे हेतुहेतुमद्भविष्य भविष्य काल कहते है।

जैसे- वह आये तो मै जाऊ।
वह कमाये तो मैं खाऊँ।
जो कमाए सो खाए।
वह पढ़ेगा तो सफल होगा।

KD Job Updates

Muhavare (मुहावरे)
Muhavare(Idioms)(मुहावरे)

मुहावरा (Idioms) की परिभाषा

- ऐसे वाक्यांश, जो सामान्य अर्थ का बोध न कराकर किसी विलक्षण अर्थ की प्रतीति कराये, मुहावरा कहलाता है।
- **दूसरे शब्दों में**- मुहावरा भाषा विशेष में प्रचलित उस अभिव्यक्तिक इकाई को कहते हैं, जिसका प्रयोग प्रत्यक्षार्थ से अलग रूढ़ लक्ष्यार्थ के लिए किया जाता है।

इसी परिभाषा से मुहावरे के विषय में निम्नलिखित बातें सामने आती हैं-

(1) मुहावरों का संबंध भाषा विशेष से होता है अर्थात हर भाषा की प्रकृति, उसकी संरचना तथा सामाजिक सांस्कृतिक संदर्भो के अनुसार उस भाषा के मुहावरे अपनी संरचना तथा अर्थ ग्रहण करते हैं।

(2) मुहावरों का अर्थ उनके प्रत्यक्षार्थ से भिन्न होता है अर्थात मुहावरों के अर्थ सामान्य उक्तियों से भिन्न होते हैं। इसका तात्पर्य यही है कि सामान्य उक्तियों या कथनों की तुलना में मुहावरों के अर्थ विशिष्ट होते हैं।

(3) मुहावरों के अर्थ अभिधापरक न होकर लक्षणापरक होते हैं अर्थात उनके अर्थ लक्षणा शक्ति से निकलते हैं तथा अपने विशिष्ट अर्थ (लक्ष्यार्थ) में रूढ़ हो जाते हैं।

KD Job Updates

उदाहरण के लिए-

(1) कक्षा में प्रथम आने की सूचना पाकर मैं ख़ुशी से फूला न समाया अर्थात बहुत खुश हो जाना।

(2) केवल हवाई किले बनाने से काम नहीं चलता, मेहनत भी करनी पड़ती है अर्थात कल्पना में खोए रहना।

इन वाक्यों में ख़ुशी से फूला न समाया और हवाई किले बनाने वाक्यांश विशेष अर्थ दे रहे हैं। यहाँ इनके शाब्दिक अर्थ नहीं लिए जाएँगे। ये विशेष अर्थ ही 'मुहावरे' कहलाते हैं।

'मुहावरा' शब्द अरबी भाषा से लिया गया है, जिसका अर्थ होता है- अभ्यास। हिंदी भाषा में मुहावरों का प्रयोग भाषा को सुंदर, प्रभावशाली, संक्षिप्त तथा सरल बनाने के लिए किया जाता है। ये वाक्यांश होते हैं। इनका प्रयोग करते समय इनका शाब्दिक अर्थ न लेकर विशेष अर्थ लिया जाता है। इनके विशेष अर्थ कभी नहीं बदलते। ये सदैव एक-से रहते हैं। ये लिंग, वचन और क्रिया के अनुसार वाक्यों में प्रयुक्त होते हैं।

अरबी भाषा का 'मुहावर:' शब्द हिन्दी में 'मुहावरा' हो गया है। उर्दूवाले 'मुहाविरा' बोलते हैं। इसका अर्थ 'अभ्यास' या 'बातचीत' से है। हिन्दी में 'मुहावरा' एक पारिभाषिक शब्द बन गया है। कुछ लोग मुहावरा को रोजमर्रा या 'वाग्धारा' कहते है।
मुहावरा का प्रयोग करना और ठीक-ठीक अर्थ समझना बड़ा ही कठिन है, यह अभ्यास और बातचीत से ही सीखा जा सकता है। इसलिए इसका नाम मुहावरा पड़ गया।

मुहावरे के प्रयोग से भाषा में सरलता, सरसता, चमत्कार और प्रवाह उत्पत्र होते है। इसका काम है बात इस खूबसूरती से कहना की सुननेवाला उसे समझ भी जाय और उससे प्रभावित भी हो।

मुहावरा की विशेषता

(1) मुहावरे का प्रयोग वाक्य के प्रसंग में होता है, अलग नही। जैसे, कोई कहे कि 'पेट काटना' तो इससे कोई विलक्षण अर्थ प्रकट नही होता है। इसके विपरीत, कोई कहे कि 'मैने पेट काटकर' अपने लड़के को पढ़ाया, तो वाक्य के अर्थ में लाक्षणिकता, लालित्य और प्रवाह उत्पत्र होगा।

(2) मुहावरा अपना असली रूप कभी नही बदलता अर्थात उसे पर्यायवाची शब्दों में अनूदित नही किया जा सकता। जैसे- कमर टूटना एक मुहावरा है, लेकिन स्थान पर कटिभंग जैसे शब्द का प्रयोग गलत होगा।

(3) मुहावरे का शब्दार्थ नहीं, उसका अवबोधक अर्थ ही ग्रहण किया जाता है; जैसे- 'खिचड़ी पकाना'। ये दोनों शब्द जब मुहावरे के रूप में प्रयुक्त होंगे, तब इनका शब्दार्थ कोई काम न देगा। लेकिन, वाक्य में जब इन शब्दों का प्रयोग होगा, तब अवबोधक अर्थ होगा- 'गुप्तरूप से सलाह करना'।

KD Job Updates

Muhavare (मुहावरे)

(4) मुहावरे का अर्थ प्रसंग के अनुसार होता है। जैसे- 'लड़ाई में खेत आना' । इसका अर्थ 'युद्ध में शहीद हो जाना' है, न कि लड़ाई के स्थान पर किसी 'खेत' का चला आना।

(5) मुहावरे भाषा की समृद्धि और सभ्यता के विकास के मापक है। इनकी अधिकता अथवा न्यूनता से भाषा के बोलनेवालों के श्रम, सामाजिक सम्बन्ध, औद्योगिक स्थिति, भाषा-निर्माण की शक्ति, सांस्कृतिक योग्यता, अध्ययन, मनन और आमोदक भाव, सबका एक साथ पता चलता है। जो समाज जितना अधिक व्यवहारिक और कर्मठ होगा, उसकी भाषा में इनका प्रयोग उतना ही अधिक होगा।

(6) समाज और देश की तरह मुहावरे भी बनते-बिगड़ते हैं। नये समाज के साथ नये मुहावरे बनते है। प्रचलित मुहावरों का वैज्ञानिक अध्ययन करने पर यह स्पष्ट हो जायेगा कि हमारे सामाजिक जीवन का विकास कितना हुआ। मशीन युग के मुहावरों और सामन्तवादी युग के मुहावरों तथा उनके प्रयोग में बड़ा अन्तर है।

(7) हिन्दी के अधिकतर मुहावरों का सीधा सम्बन्ध शरीर के भित्र-भित्र अंगों से है। यह बात दूसरी भाषाओं के मुहावरों में भी पायी जाती है; जैसे- मुँह, कान, हाथ, पाँव इत्यादि पर अनेक मुहावरे प्रचलित हैं। हमारे अधिकतर कार्य इन्हीं के सहारे चलते हैं।

मुहावरे के प्रयोग में निम्नलिखित सावधानियाँ बरतनी चाहिए :

(1) मुहावरे वाक्यों में ही शोभते हैं, अलग नहीं। जैसे- यदि कहें 'कान काटना' तो इसका कोई अर्थ व्यंजित नहीं होता; किन्तु यदि ऐसा कहा जाय- 'वह छोटा बच्चा तो बड़ों-बड़ों के कान काटता है' तो वाक्य में अदभुत लाक्षणिकता, लालित्य और प्रवाह स्वतः आ जाता है।

(2) मुहावरों का प्रयोग उनके असली रूपों में ही करना चाहिए। उनके शब्द बदले नहीं जाते हैं। उनके पद-समूहों में रूप-भेद करने से उसकी लाक्षणिकता और विलक्षणता नष्ट हो जाती है। जैसे- 'नौ-दो ग्यारह होना' की जगह 'आठ तीन ग्यारह होना' । सर्वथा अनुचित है।

(3) मुहावरे का एक विलक्षण अर्थ होता है। इसमें वाच्यार्थ का कोई स्थान नहीं होता। जैसे- 'उलटी गंगा बहाना' का जब वाक्य-प्रयोग होगा, तब इसका अर्थ होगा- 'रीति-रिवाज के खिलाफ काम करना'।

YD Job Updates

(4) मुहावरे का प्रयोग प्रसंग के अनुसार होता है और उसके अर्थ की प्रतीति भी प्रसंगानुसार ही होती है। जैसे- अमरीका की निति को सभी विकासशील राष्ट्र धोखे और अविश्वास की मानते हैं। यदि ऐसा कहा जाय- 'पाकिस्तान अपना उल्लू सीधा करने के लिए अमीरीका की आरती उतारता है'- तो यहाँ न तो टेढ़े उल्लू को सीधा करने की बात है, न ही, दीप जलाकर किसी की आरती उतारने की। यहाँ दोनों की प्रकृति से अर्थ निकलता है- 'मतलब निकालना और 'खुशामद करना'।

अतएव, मुहावरे का प्रयोग करते समय इस बात का सदैव ख्याल रखना चाहिए कि समुचित परिस्थिति, पात्र, घटना और प्रसंग का वाक्य में उल्लेख अवश्य हो। केवल वाक्य-प्रयोग कर देने पर संदर्भ के अभाव में मुहावरे अपने अर्थ को अभिव्यक्ति नहीं कर सकते हैं।

मुहावरे : भेद-प्रभेद

मुहावरों को निम्नलिखित आधारों पर वर्गीकृत किया जा सकता है-

(1) सादृश्य पर आधारित
(2) शारीरिक अंगों पर आधारित
(3) असंभव स्थितियों पर आधारित
(4) कथाओं पर आधारित
(5) प्रतीकों पर आधारित
(6) घटनाओं पर आधारित

(1) सादृश्य पर आधारित मुहावरे- बहुत से मुहावरे सादृश्य या समानता पर आधारित होते हैं।

जैसे- चूड़ियाँ पहनना, दाल न गलना, सोने पर सुहागा, कुंदन-सा चमकना, पापड़ बेलना आदि।

(2) शारीरिक अंगों पर आधारित मुहावरे- हिंदी भाषा के अंतर्गत इस वर्ग में बहुत मुहावरे मिलते हैं।

जैसे- अंग-अंग ढीला होना, आँखें चुराना, अँगूठा दिखाना, आँखों से गिरना, सिर हिलाना, उँगली उठाना, कमर टूटना, कलेजा मुँह को आना, गरदन पर सवार होना, छाती पर साँप लोटना, तलवे चाटना, दाँत खट्टे करना, नाक रगड़ना, पीठ दिखाना, बगलें झाँकन, मुँह काला करना आदि।

KD Job Updates

Muhavare (मुहावरे)

(3) असंभव स्थितियों पर आधारित मुहावरे- इस तरह के मुहावरों में वाच्यार्थ के स्तर पर इस तरह की स्थितियाँ दिखाई देती हैं जो असंभव प्रतीत होती हैं।
जैसे- पानी में आग लगाना, पत्थर का कलेजा होना, जमीन आसमान एक करना, सिर पर पाँव रखकर भागना, हथेली पर सरसों जमाना, हवाई किले बनाना, दिन में तारे दिखाई देना आदि।

(4) कथाओं पर आधारित मुहावरे- कुछ मुहावरों का जन्म लोक में प्रचलित कुछ कथा-कहानियों से होता हैं।
जैसे-टेढ़ी खीर होना, एक और एक ग्यारह होना, हाथों-हाथ बिक जाना, साँप को दूध पिलाना, रँगा सियार होना, दुम दबाकर भागना, काठ में पाँव देना आदि।

(5) प्रतीकों पर आधारित मुहावरे- कुछ मुहावरे प्रतीकों पर आधारित होते हैं।
जैसे- एक आँख से देखना, एक ही लकड़ी से हाँकना, एक ही थैले के चट्टे-बट्टे होना, तीनों मुहावरों में प्रयुक्त 'एक' शब्द 'समानता' का प्रतीक है।
इसी तरह से डेढ़ पसली का होना, ढाई चावल की खीर पकाना, ढाई दिन की बादशाहत होना, में डेढ़ तथा ढाई शब्द 'नगण्यता' के प्रतीक है।

(6) घटनाओं पर आधारित मुहावरे- कुछ मुहावरों के मूल में कोई घटना भी रहती है।
जैसे- काँटा निकालना, काँव-काँव करना, ऊपर की आमदनी, गड़े मुर्दे उखाड़ना आदि।

उपर्युक्त भेदों के अलावा मुहावरों का वर्गीकरण स्रोत के आधार पर भी किया जा सकता है। हिंदी में कुछ मुहावरे संस्कृत से आए हैं तो कुछ अरबी-फारसी से आए हैं। इसके अतिरिक्त मुहावरों की विषयवस्तु क्या है, इस आधार पर भी उनका वर्गीकरण किया जा सकता है। जैसे- स्वास्थ्य विषयक, युद्ध विषयक आदि। कुछ मुहावरों का वर्गीकरण किसी क्षेत्र विशेष के आधार पर भी किया जा सकता है। जैसे- क्रीडाक्षेत्र में प्रयुक्त होने वाले मुहावरे, सेना के क्षेत्र में प्रयुक्त होने वाले मुहावरे आदि।

KD Job Updates

पर्यायवाची शब्द

Paryayvachi Shabd (पर्यायवाची शब्द)

- पर्यायवाची शब्द का hindi mein या अर्थ है समान अर्थ वाले शब्द। पर्यायवाची शब्द किसी भी भाषा की सबलता की बहुता को दर्शाता है। जिस भाषा में जितने अधिक पर्यायवाची शब्द होंगे, वह उतनी ही सबल व सशक्त भाषा होगी। इस दृष्टि से संस्कृत सर्वाधिक सम्पन्न भाषा है। भाषा में पर्यायवाची शब्दों के प्रयोग से पूर्ण अभिव्यक्ति की क्षमता आती है।
- पर्याय का अर्थ है-समान। अतः समान अर्थ व्यक्त करने वाले शब्दों को पर्यायवाची शब्द (Synonym words) कहते हैं। इन्हें प्रतिशब्द या समानार्थक शब्द भी कहा जाता है। व्यवहार में पर्याय या पर्यायवाची शब्द ही अधिक प्रचलित हैं। विद्यार्थियों के अध्ययन हेतु पर्यायवाची शब्दों की सूची प्रस्तुत है-

KD Job Updates

शब्द – पर्यायवाची शब्द

(अ)

अंक – संख्या, गिनती, क्रमांक, निशान, चिह्न, छाप।
अंकुर – कोंपल, अँखुवा, कल्ला, नवोद्भिद्, कलिका, गाभा
अंकुश – प्रतिबन्ध, रोक, दबाव, रुकावट, नियन्त्रण।
अंग – अवयव, अंश, काया, हिस्सा, भाग, खण्ड, उपांश, घटक, टुकड़ा, तन, कलेवर, शरीर, देह।
'अग्नि – आग, अनल, पावक, जातवेद, कृशानु, वैश्वानर, हुताशन, रोहिताश्व, वायुसखा, हव्यवाहन, दहन, अरुण।
अंचल – पल्लू, छोर, क्षेत्र, अंत, प्रदेश, आँचल, किनारा।
अचानक – अकस्मात, अनायास, एकाएक, दैवयोगा।
अटल – अडिग, स्थिर, पक्का, दृढ़, अचल, निश्चल, गिरि, शैल, नग।

अठखेली – कौतुक, क्रीड़ा, खेल–कूद, चुलबुलापन, उछल–कूद, हँसी–मज़ाक।
अमृत – अमिय, पीयूष, अमी, मधु, सोम, सुधा, सुरभोग, जीवनोदक, शुभा।
अयोग्य – अनर्ह, योग्यताहीन, नालायक, नाकाबिल।
अभिप्राय – प्रयोजन, आशय, तात्पर्य, मतलब, अर्थ, मंतव्य, मंशा, उद्देश्य, विचार
अर्जुन – भारत, गुडाकेश, पार्थ, सहस्रार्जुन, धनंजय।
अवज्ञा – अनादर, तिरस्कार, अवमानना, अपमान, अवहेलना, तौहीन।
अश्व – घोड़ा, तुरंग, हय, बाजि, सैन्धव, घोटक, बछेड़ा, रविसुत, अर्दा
असुर – रजनीचर, निशाचर, दानव, दैत्य, राक्षस, दनुज, यातुधान, तमीचर।
अवरोध – रुकावट, विघ्न, व्यवधान, अरुंगा।
अतिथि – मेहमान, पहुना, अभ्यागत, रिश्तेदार, नातेदार, आगन्तुका.
अतीत – पूर्वकाल, भूतकाल, विगत, गत।
अनाज – अन्न, शस्य, धान्य, गल्ला, खाद्यान्न।
अनाड़ी – अनजान, अनभिज्ञ, अज्ञानी, अकुशल, अदक्ष, अपटु, मूर्ख, अल्पज्ञ, नौसिखिया।
अनार – सुनील, वल्कफल, मणिबीज, बीदाना, दाडिम, रामबीज, शुकप्रिय।
अनिष्ट – बुरा, अपकार, अहित, नुकसान, हानि, अमंगल।
अनुकम्पा – दया, कृपा, करम, मेहरबानी।
अनुपम – सुन्दर, अतुल, अपूर्व, अद्वितीय, अनोखा, अप्रतिम, अद्‌भुत, अनूठा, विलक्षण, विचित्र।
अनुसरण – नकल, अनुकृत, अनुगमन।
अपमान – अनादर, उपेक्षा, निरादर, बेइज्जती, अवज्ञा, तिरस्कार, अवमाना।
अप्सरा – परी, देवकन्या, अरुणप्रिया, सुखवनिता, देवांगना, दिव्यांगना, देवबाला।
अभय – निडर, साहसी, निर्भीक, निर्भय, निश्चिन्त।
अभिजात – कुलीन, सुजात, खानदानी, उच्च, पूज्य, श्रेष्ठ।
अभिज्ञ – जानकार, विज्ञ, परिचित, ज्ञाता।
अभिमान – गौरव, गर्व, नाज, घमंड, दर्प, स्वाभिमान, अस्मिता, अहं, अहंकार, अहमिका, मान, मिथ्याभिमान, दंभ।
अभियोग – दोषारोपण, कसूर, अपराध, गलती, आक्षेप, आरोप, दोषारोपण, इल्ज़ामा।
अभिलाषा – कामना, मनोरथ, इच्छा, आकांक्षा, ईहा, ईप्सा, चाह, लालसा, मनोकामना।

KD Job Updates

पर्यायवाची शब्द

अभ्यास – रियाज़, पुनरावृत्ति, दोहराना, मश्क।
अमर – मृत्युंजय, अविनाशी, अनश्वर, अक्षर, अक्षय।
अमीर – धनी, धनाढ्य, सम्पन्न, धनवान, पैसेवाला।
अनन्त – असंख्य, अपरिमित, अगणित, बेशुमार।
अनभिज्ञ – अज्ञानी, मूर्ख, मूढ़, अबोध, नासमझ, अल्पज्ञ, अदक्ष, अपटु, अकुशल, अनजान।
अगुआ – अग्रणी, सरदार, मुखिया, प्रधान, नायक।
अधर – रदच्छद, रदपुट, होंठ, ओष्ठ, लब।
अध्यापक – आचार्य, शिक्षक, गुरु, व्याख्याता, अवबोधक, अनुदेशक।
अंधकार – तम, तिमिर, ध्वान्त, अँधियारा, तिमिस्रा।
अनुरूप – अनुकूल, संगत, अनुसार, मुआफिक
अन्तःपुर – रनिवास, भोगपुर, जनानखाना।
अदृश्य – अन्तर्ध्यान, तिरोहित, ओझल, लुप्त, गायब।
अकाल – भुखमरी, कुकाल, दुष्काल, दुर्भिक्षा।
अशुद्ध – दूषित, गंदा, अपवित्र, अशुचि, नापाक।
असभ्य – अभद्र, अविनीत, अशिष्ट, गँवार, उजड्ड।
अधम – नीच, निकृष्ट, पतित।
अपकीर्ति – अपयश, बदनामी, निंदा, अकीर्ति।
अध्ययन – अनुशीलन, पारायण, पठनपाठन, पढ़ना।
अनुरोध – अभ्यर्थना, प्रार्थना, विनती, याचना, निवेदन।
अखण्ड – पूर्ण, समस्त, सम्पूर्ण, अविभक्त, समूचा, पूरा।
अपराधी – मुजरिम, दोषी, कसूरवार, सदोष।
अधीन – आश्रित, मातहत, निर्भर, पराश्रित, पराधीन।
अनुचित – नाजायज़, गैरवाजिब, बेजा, अनुपयुक्त, अयुत।
अन्वेषण – अनुसन्धान, गवेषण, खोज, जाँच, शोध।
अमूल्य – अनमोल, बहुमूल्य, मूल्यवान, बेशकीमती।
अज – ब्रह्मा, ईश्वर, दशरथ के जनक, बकरा।
अंधा – नेत्रहीन, सूरदास, अंध, चक्षुविहीन, प्रज्ञाचक्षु।
अनुवाद – भाषांतर, उल्था, तर्जुमा।

KD Job Updates

अरण्य – जंगल, कान्तार, विपिन, वन, कानन।
अवनति – अपकर्ष, गिराव, गिरावट, घटाव, ह्रास।
अश्लील – अभद्र, अधिभ्रष्ट, निर्लज्ज बेशर्म, असभ्य।
आकुल – व्यग्र, बेचैन, क्षुब्ध, बेकल।
आकृति – आकार, चेहरा–मोहरा, नैन–नक्श, डील–डौला
आदर्श – प्रतिरूप, प्रतिमान, मानक, नमूना।
आलसी – निठल्ला, बैठा–ठाला, ठलुआ, सस्त, निकम्मा, काहिला
आयुष्मान् – चिरायु, दीर्घायु, शतायु, दीर्घजीवी, चिरंजीव।
आज्ञा – आदेश, निदेश, फ़रमान, हुक्म, अनुमति, मंजूरी, स्वीकृति, सहमति, इजाज़ता
आश्रय – सहारा, आधार, भरोसा, अवलम्ब, प्रश्रय।
आख्यान – कहानी, वृत्तांत, कथा, किस्सा, इतिवृत्ता
आधुनिक – अर्वाचीन, नूतन, नव्य, वर्तमानकालीन, नवीन, अधुनातन।
आवेग – तेज़ी, स्फूर्ति, जोश, त्वरा, तीव्र, फुरती, चपलता।
आलोचना – समीक्षा, टीका, टिप्पणी, नुक्ताचीनी, समालोचना।
आरम्भ – श्रीगणेश, शुरुआत, सूत्रपात, प्रारम्भ, उपक्रम।
आवश्यक – अनिवार्य, अपरिहार्य, ज़रूरी, बाध्यकारी।
आदि – पहला, प्रथम, आरम्भिक, आदिमा
आपत्ति – विपदा, मुसीबत, आपदा, विपत्ति।
आकाश – नभ, अम्बर, अन्तरिक्ष, आसमान, व्योम, गगन, दिव, द्यौ, पुष्कर, शून्य।
आचरण – चाल–चलन, चरित्र, व्यवहार, आदत, बर्ताव, सदाचार, शिष्टाचार।
आडम्बर – पाखण्ड, ढकोसला, ढोंग, प्रपंच, दिखावा।
आँख – अक्षि, नैन, नेत्र, लोचन, दृग, चक्षु, ईक्षण, विलोचन, प्रेक्षण, दृष्टि।
आँगन – प्रांगण, बगड़, बाखर, अजिर, अँगना, सहन।
आम – रसाल, आम्र, फलराज, पिकबन्धु, सहकार, अमृतफल, मधुरासव, अंब।
आनन्द – आमोद, प्रमोद, विनोद, उल्लास, प्रसन्नता, सुख, हर्ष, आहलाद।
आशा – उम्मीद, तवक्को, आस।
आशीर्वाद – आशीष, दुआ, शुभाशीष, शुभकामना, आशीर्वचन, मंगलकामना।
आश्चर्य – अचम्भा, अचरज, विस्मय, हैरानी, ताज्जुब।

KD Job Updates

पर्यायवाची शब्द

आहार – भोजन, खुराक, खाना, भक्ष्य, भोज्य।
आस्था – विश्वास, श्रद्धा, मान, कदर, महत्त्व, आदर।
आँसू – अश्रु, नेत्रनीर, नयनजल, नेत्रवारि, नयननीर।

(इ)

इन्दिरा – लक्ष्मी, रमा, श्री, कमला।
इच्छा – लालसा, कामना, चाह, मनोरथ, ईहा, ईप्सा, आकांक्षा, अभिलाषा, मनोकामना।
इन्द्र – महेन्द्र, सुरेन्द्र, सुरेश, पुरन्दर, देवराज, मधवा, पाकरिपु, पाकशासन, पुरहूत।
इन्द्राणी – शची, इन्द्रवधू, महेन्द्री, इन्द्रा, पौलोमी, शतावरी, पुलोमजा।
इनकार – अस्वीकृति, निषेध, मनाही, प्रत्याख्यान।
इच्छुक – अभिलाषी, लालायित, उत्कण्ठित, आतुर
इशारा – संकेत, इंगित, निर्देश।
इन्द्रधनुष – सुरचाप, इन्द्रधनु, शक्रचाप, सप्तवर्णधनु।
इन्द्रपुरी – देवलोक, अमरावती, इन्द्रलोक, देवेन्द्रपुरी, सुरपुर।

(ई)

ईख – गन्ना, ऊख, रसडंड, रसाल, पेंड़ी, रसद।
ईमानदार – सच्चा, निष्कपट, सत्यनिष्ठ, सत्यपरायण।
ईश्वर – परमात्मा, परमेश्वर, ईश, ओम, ब्रह्म, अलख, अनादि, अज, अगोचर, जगदीश।
ईर्ष्या – मत्सर, डाह, जलन, कुढ़न, द्वेष, स्पर्धा।

(उ)

उचित – ठीक, सम्यक्, सही, उपयुक्त, वाजिब।
उत्कर्ष – उन्नति, उत्थान, अभ्युदय, उन्मेष।
उत्पात – दंगा, उपद्रव, फ़साद, हुड़दंग, गड़बड़, उधम।
उत्सव – समारोह, आयोजन, पर्व, त्योहार, मंगलकार्य, जलसा।
उत्साह – जोश, उमंग, हौसला, उत्तेजना।
उत्सुक – आतुर, उत्कण्ठित, व्यग्र, उत्कर्ण, रुचि, रुझान।

KD Job Updates

उदार – उदात्त, सहृदय, महामना, महाशय, दरियादिल।
उदाहरण – मिसाल, नमूना, दृष्टान्त, निदर्शन, उद्धरण।
उद्देश्य – प्रयोजन, ध्येय, लक्ष्य, निमित्त, मकसद, हेतु।
उद्यत – तैयार, प्रस्तुत, तत्पर।
उन्मूलन – निरसन, अन्त, उत्सादन।
उपकार – (1) परोपकार, अच्छाई, भलाई, नेकी। (ii) हित, उद्धार, कल्याण
उपस्थित – विद्यमान, हाज़िर, प्रस्तुत।
उत्कृष्ट – उत्तम, श्रेष्ठ, प्रकृष्ट, प्रवर।
उपमा – तुलना, मिलान, सादृश्य, समानता।
उपासना – पूजा, आराधना, अर्चना, सेवा।।
उद्यम – परिश्रम, पुरुषार्थ, श्रम, मेहनत।
उजाला – प्रकाश, आलोक, प्रभा, ज्योति।
उपाय – युक्ति, ढंग, तरकीब, तरीका, यत्न, जुगत।
उपयुक्त – उचित, ठीक, वाज़िब, मुनासिब, वांछनीय।
उल्टा – प्रतिकूल, विलोम, विपरीत, विरुद्धा.
उजाड़ – निर्जन, वीरान, सुनसान, बियावान।
उग्र – तेज़, प्रबल, प्रचण्ड
उन्नति – प्रगति, तरक्की, विकास, उत्थान, बढ़ोतरी, उठान, उत्क्रमण, चढ़ाव, आरोह
उपवास – निराहार, व्रत, अनशन, फाँका, लंघन।
उपेक्षा – उदासीनता, विरक्ति, अनासक्ति, विराग, उदासीन, उल्लंघन।
उपहार – भेंट, सौगात, तोहफ़ा।
उपालम्भ – उलाहना, शिकवा, शिकायत, गिला।
उल्लू – उलूक, लक्ष्मीवाहन, कौशिक

(ऊ)

ऊँचा – उच्च, शीर्षस्थ, उन्नत, उत्तुंग।
ऊर्जा – ओज, स्फूर्ति, शक्ति।
ऊसर – अनुर्वर, सस्यहीन, अनुपजाऊ, बंजर, रेत, रेह।
ऊष्मा – उष्णता, तपन, ताप, गर्मी।

KD Job Updates

पर्यायवाची शब्द

ऊँट – लम्बोष्ठ, महाग्रीव, क्रमेलक, उष्ट्र।
ऊँघ – तंद्रा, ऊँचाई, झपकी, अर्द्धनिद्रा, अलसाई।

(ऋ)

ऋषि – मुनि, मनीषी, महात्मा, साधु, सन्त, संन्यासी, मन्त्रदृष्टा।
ऋद्धि – बढ़ती, बढ़ोतरी, वृद्धि, सम्पन्नता, समृद्धि।

(ए)

एकता – एका, सहमति, एकत्व, मेल–जोल, समानता, एकरूपता, एकसूत्रता, ऐक्य, अभिन्नता।
एहसान – आभार, कृतज्ञता, अनुग्रह।
एकांत – सुनसान, शून्य, सूना, निर्जन, विजन।
एकाएक – अकस्मात, अचानक, सहसा, एकदम।

(ऐ)

ऐश – विलास, ऐयाशी, सुख–चैन।
ऐश्वर्य – वैभव, प्रभुता, सम्पन्नता, समृद्धि, सम्पदा।
ऐच्छिक – स्वेच्छाकृत, वैकल्पिक, अख्तियारी।
ऐब – खोट, दोष, बुराई, अवगुण, कलंक, खामी, कमी, त्रुटि।

(ओ)

ओज – दम, ज़ोर, पराक्रम, बल, शक्ति, ताकत।
ओझल – अन्तर्ध्यान, तिरोहित, अदृश्य, लुप्त, गायब।
ओस – तुषार, हिमकण, हिमसीकर, हिमबिन्दु, तुहिनकण।
ओंठ – होंठ, अधर, ओष्ठ, दन्तच्छद, रदनच्छद, लब।

(औ)

और – (i) अन्य, दूसरा, इतर, भिन्न (ii) अधिक, ज़्यादा (ii) एवं, तथा।
औषधि – दवा, दवाई, भेषज, औषध

KD Job Updates

(क)

कपड़ा – चीर, वस्त्र, वसन, अम्बर, पट, पोशाक चैल, दुकूल।
कमल – सरोज, सरोरुह, जलज, पंकज, नीरज, वारिज, अम्बुज, अम्बोज, अब्ज, सतदल, अरविन्द, कुवलय, अम्भोरुह, राजीव, नलिन, पद्म, तामरस, पुण्डरीक, सरसिज, कंज।
कर्ण – अंगराज, सूर्यसुत, अर्कनन्दन, राधेय, सूतपुत्र, रविसुत, आदित्यनन्दन।
कली – मुकुल, जालक, ताम्रपल्लव, कलिका, कुडमल, कोरक, नवपल्लव, अँखुवा, कोंपल, गुंचा।
कल्पवृक्ष – कल्पतरु, कल्पशाल, कल्पद्रुम, कल्पपादप, कल्पविटप।
कन्या – कुमारिका, बालिका, किशोरी, बाला।
कठिन – दुर्बोध, जटिल, दुरूह।
कंगाल – निर्धन, गरीब, अकिंचन, दरिद्र।
कमज़ोर – दुर्बल, निर्बल, अशक्त, क्षीण।
कुटिल – छली, कपटी, धोखेबाज़, चालबाज़।
काक – काग, काण, वायस, पिशुन, करठ, कौआ।
कुत्ता – कुक्कर, श्वान, शुनक, कूकुर।
कबूतर – कपोत, रक्तलोचन, हारीत, पारावत।
कृत्रिम – अवास्तविक, नकली, झूठा, दिखावटी, बनावटी।
कल्याण – मंगल, योगक्षेम, शुभ, हित, भलाई, उपकार।
कूल – किनारा, तट, तीर।
कृषक – किसान, काश्तकार, हलधर, जोतकार, खेतिहर।
क्लिष्ट – दुरूह, संकुल, कठिन, दुःसाध्य।
कौशल – कला, हुनर, फ़न, योग्यता, कुशलता।
कर्म – कार्य, कृत्य, क्रिया, काम, काज।
कंदरा – गुहा, गुफा, खोह, दरी।
कथन – विचार, वक्तव्य, मत, बयाना
कटाक्षे – आक्षेप, व्यंग्य, ताना, छींटाकशी।
कुरूप – भद्दा, बेडौल, बदसूरत, असुन्दर।
कलंक – दोष, दाग, धब्बा, लांछन, कलुषता।

KD Job Updates

पर्यायवाची शब्द

कोमल – मृदुल, सुकुमार, नाजुक, नरम, सौम्य, मुलायम।
किरण – रश्मि, केतु, अंशु, कर, मरीचि, मखूख, प्रभा, अर्चि, पुंज।
कसक – पीड़ा, दर्द, टीस, दुःख।
कोयल – कोकिल, श्यामा, पिक, मदनशलाका।
कायरता – भीरुता, अपौरुष, पामरता, साहसहीनता।
कंटक – काँटा, शूल, खार।
कामदेव – मनोज, कन्दर्प, आत्मभू, अनंग, अतनु, काम, मकरकेतु, पुष्पचाप, स्मर, मन्मथ
कार्तिकेय – कुमार, पार्वतीनन्दन, शरभव, स्कन्ध, षडानन, गुह, मयूरवाहन, शिवसुत, षड्वदन।
कटु – कठोर, कड़वा, तीखा, तेज़, तीक्ष्ण, चरपरा, कर्कश, रूखा, रुक्ष, परुष, कड़ा, सत्ता
किला – दुर्ग, कोट, गढ़, शिविर
किंचित – (i) कतिपय, कुछ एक, कई एक (ii) कुछ, अल्प, ज़रा।
किताब – पुस्तक, ग्रंथ, पोथी।
किनारा – (i) तट, मुहाना, तीर, पुलिन, कूल। (ii) अंचल, छोर, सिरा, पर्यन्त।
कीमत – मूल्य, दाम, लागता
कुबेर – राजराज, किन्नरेश, धनाधिप, धनेश, यक्षराज, धनद।
कुमुदनी – नलिनी, कैरव, कुमुद, इन्दुकमल, चन्द्रप्रिया।
कृष्ण – नन्दनन्दन, मधुसूदन, जनार्दन, माधव, मुरारि, कन्हैया, द्वारकाधीश, गोपाल, केशव, नन्दकुमार, नन्दकिशोर, बिहारी।
कृतज्ञ – आभारी, उपकृत, अनुगृहीत, ऋणी, कृतार्थ, एहसानमंद।
केला – रम्भा, कदली, वारण, अशुमत्फला, भानुफल, काष्ठीला।
क्रोध – गुस्सा, अमर्ष, रोष, कोप, आक्रोश, ताव।
करुणा – दया, तरस, रहम, आत्मीयभाव।

(ख)

खग – पक्षी, चिड़िया, पखेरू, द्विज, पंछी, विहंग, शकुनि।
खंजन – नीलकण्ठ, सारंग, कलकण्ठ।
खंड – अंश, भाग, हिस्सा, टुकड़ा।

KD Job Updates

खल – शठ, दुष्ट, धूर्त, दुर्जन, कुटिल, नालायक, अधम।
खूबसूरत – सुन्दर, सुरम्य, मनोज्ञ, रूपवान, सौरम्य, रमणीक।
खून – रुधिर, लहू, रक्त, शोणित।
खम्भा – खम्भ, स्तूप, स्तम्भ।
खतरा – अंदेशा, भय, डर, आशंका।
खत – चिट्ठी, पत्र, पत्री, पाती।
खामोश – नीरव, शान्त, चुप, मौन।
खीझ – झुंझलाहट, झल्लाहट, खीझना, चिढ़ना।

(ग)

गरुड़ – खगेश्वर, सुपर्ण, वैतनेय, नागान्तका
गौरव – मान, सम्मान, महत्त्व, बड़प्पन।
गम्भीर – गहरा, अथाह, अतला
गाँव – ग्राम, मौजा, पुरवा, बस्ती, देहात।
गृह – घर, सदन, भवन, धाम, निकेतन, आलय, मकान, गेह, शाला।
गुफा – गुहा, कन्दरा, विवर, गह्वर।
गीदड़ – शृगाल, सियार, जम्बुका
गुप्त – निभृत, अप्रकट, गूढ, अज्ञात, परोक्ष।
गति – हाल, दशा, अवस्था, स्थिति, चाल, रफ़्तार।
गंगा – भागीरथी, देवसरिता, मंदाकिनी, विष्णुपदी, त्रिपथगा, देवापगा, जाहनवी, देवनदी, ध्रुवनन्दा, सुरसरि, पापछालिका।
गणेश – लम्बोदर, मूषकवाहन, भवानीनन्दन, विनायक, गजानन, मोदकप्रिय, जगवन्द्य, हेरम्ब, एकदन्त, गजवदन, विघ्ननाशका
गज – हस्ती, सिंधुर, मातंग, कुम्भी, नाग, हाथी, वितुण्ड, कुंजर, करी, द्विपा
गधा – गदहा, खर, धूसर, गर्दभ, चक्रीवाहन, रासभ, लम्बकर्ण, बैशाखनन्दन, बेसर।
गाय – धेनु, सुरभि, माता, कल्याणी, पयस्विनी, गौ।
गुलाब – सुमना, शतपत्र, स्थलकमल, पाटल, वृन्तपुष्प
गुनाह – गलती, अधर्म, पाप, अपराध, खता, त्रुटि, कुकर्म।

KD Job Updates

पर्यायवाची शब्द

(घ)

घड़ा – कलश, घट, कुम्भ, गागर, निप, गगरी, कुट।
घी – घृत, हवि, अमृतसार।
घाटा – हानि, नुकसान, टोटा।
घन – जलधर, वारिद, अंबुधर, बादल, मेघ, अम्बुद, पयोद, नीरद।।
घृणा – जुगुप्सा, अरुचि, घिन, बीभत्स।
घुमक्कड़ – रमता, सैलानी, पर्यटक, घुमन्तू, विचरण शील, यायावर।
घिनौना – घृण्य, घृणास्पद, बीभत्स, गंदा, घृणित।
Ghumantu/घुमंतू – बंजारा, घुमक्कड़

(च)

चंदन – मंगल्य, मलयज, श्रीखण्ड।
चाँदी – रजत, रूपा, रौप्य, रूपक
चरित्र – आचार, सदाचार, शील, आचरण।
चिन्ता – फ़िक्र, सोच, ऊहापोह।
चौकीदार – आरक्षी, पहरेदार, प्रहरी, गारद, गश्तकार।
चोटी – शृंग, तुंग, शिखर, परकोटि।
चक्र – पहिया, चाक, चक्का।
चिकित्सा – उपचार, इलाज, दवादारू।
चतुर – कुशल, नागर, प्रवीण, दक्ष, निपुण, योग्य, होशियार, चालाक, सयाना, विज्ञा
चन्द्र – सोम, राकेश, रजनीश, राकापति, चाँद, निशाकर, हिमांशु, मयंक, सुधांशु, मृगांक, चन्द्रमा, कला–निधि, ओषधीश।
चाँदनी – चन्द्रिका, ज्योत्स्ना, कौमुदी, कुमुदकला, जुन्हाई, अमृतवर्षिणी, चन्द्रातप, चन्द्रमरीचि।
चपला – विद्युत्, बिजली, चंचला, दामिनी, तड़िता
चश्मा – ऐनक, उपनेत्र, सहनेत्र, उपनयन।
चाटुकारी – खुशामद, चापलूसी, मिथ्या प्रशंसा, चिरौरी, चमचागीरी।

KD Job Updates

चिह्न – प्रतीक, निशान, लक्षण, पहचान, संकेत।
चोर – रजनीचर, दस्यु, साहसिक, कभिज, खनक, मोषक, तस्कर।

(छ)

छ्त्र। – विद्यार्थी, शिक्षार्थी, शिष्य।
छाया – साया, प्रतिबिम्ब, परछाई, छाँव।
छल – प्रपंच, झाँसा, फ़रेब, कपट।
छटा – आभा, कांति, चमक, सौन्दर्य, सुन्दरता।
छानबीन – जाँच–पड़ताल, पूछताछ, जाँच, तहकीकात।
छेद – छिद्र, सूराख, रंध्रा
छली – ठग, छद्मी, कपटी, कैतव, धूर्त, मायावी।
छाती – उर, वक्ष, वक्षःस्थल, हृदय, मन, सीना।

(ज)

जननी – माँ, माता, माई. मइया. अम्बा, अम्मा।
जीव – प्राणी, देहधारी, जीवधारी।
जिज्ञासा – उत्सुकता, उत्कंठा, कुतूहल।
जंग – युद्ध, रण, समर, लड़ाई, संग्राम।
जग – दुनिया, संसार, विश्व, भुवन, मृत्युलोक।
जल – सलिल, उदक, तोय, अम्बु, पानी, नीर, वारि, पय, अमृत, जीवक, रस, अप।
जहाज़ – जलयान, वायुयान, विमान, पोत, जलवाहन।
जानकी – जनकसुता, वैदेही, मैथिली, सीता, रामप्रिया, जनकदुलारी, जनकनन्दिनी।
जुटाना – बटोरना, संग्रह करना, जुगाड़ करना, एकत्र करना, जमा करना, संचय करना।
जोश – आवेश, साहस, उत्साह, उमंग, हौसला।
जीभ – जिह्वा, रसना, रसज्ञा, चंचला।
जमुना – सूर्यतनया, सूर्यसुता, कालिंदी, अर्कजा, कृष्णा।
ज्योति – प्रभा, प्रकाश, लौ, अग्निशिखा, आलोक

(झ)

KD Job Updates

पर्यायवाची शब्द

झंडा – ध्वजा, केतु, पताका, निसान।
झरना – सोता, स्रोत, उत्स, निर्झर, जलप्रपात, प्रस्रवण, प्रपात।
झुकाव – रुझान, प्रवृत्ति, प्रवणता, उन्मुखता।
झकोर – हवा का झोंका, झटका, झोंक, बयार।
झुठ – मिथ्या, मृषा, अनृत, असत, असत्य।

(ट)

टीका – भाष्य, वृत्ति, विवृति, व्याख्या, भाषांतरण।
टक्कर – भिडंत, संघट्ट, समाघात, ठोकर।
टोल – समूह, मण्डली, जत्था, झुण्ड, चटसाल, पाठशाला।
टीस – साल, कसक, शूल, शूक्त, चसक, दर्द, पीड़ा।
टेढा – (i) बंक, कुटिल, तिरछा, वक्रा (ii) कठिन, पेचीदा, मुश्किल, दुर्गम।
टंच – सूम, कृपण, कंजूस, निष्ठुर।

(ठ)

ठंड – शीत, ठिठुरन, सर्दी, जाड़ा, ठंडक
ठेस – आघात, चोट, ठोकर, धक्का।
ठौर – ठिकाना, स्थल, जगह।
ठग – जालसाज, प्रवंचक, वंचक, प्रतारक।
ठाठ –आडम्बर, सजावट, वैभवा
ठिठोली – मज़ाक, उपहास, फ़बती, व्यंग्य, व्यंग्योक्ति।
ठगी – प्रतारणा, वंचना, मायाजाल, फ़रेब, जालसाज़।

(ड)

डगर – बाट, मार्ग; राह, रास्ता, पथ, पंथा
डर – त्रास, भीति, दहशत, आतंक, भय, खौफ़
डेरा – पड़ाव, खेमा, शिविर
डोर – डोरी, रज्जु, तांत, रस्सी, पगहा, तन्तु।

KD Job Updates

डकैत – डाकू, लुटेरा, बटमार।
डायरी – दैनिकी, दैनन्दिनी, रोज़नामचा।

(ढ)

ढीठ – धृष्ट, प्रगल्भ, अविनीत, गुस्ताख।
ढोंग – स्वाँग, पाखण्ड, कपट, छल।
ढंग – पद्धति, विधि, तरीका, रीति, प्रणाली, करीना।
ढाढ़स – आश्वासन, तसल्ली, दिलासा, धीरज, सांत्वना।
ढोंगी – पाखण्डी, बगुला भगत, रंगासियार, कपटी, छली।

(त)

तन – शरीर, काया, जिस्म, देह, वपु।
तपस्या – साधना, तप, योग, अनुष्ठान।
तरंग – हिलोर, लहर, ऊर्मि, मौज, वीचि।
तरु – वृक्ष, पेड़, विटप, पादप, द्रुम, दरख्त।
तलवार – असि, खडग, सिरोही, चन्द्रहास, कृपाण, शमशीर, करवाल, करौली, तेग।
तम – अंधकार, ध्वान्त, तिमिर, अँधेरा, तमसा।
तरुणी – युवती, मनोज्ञा, सुंदरी, यौवनवक्षी, प्रमदा, रमणी।
तारा – नखत, उड्डगण, नक्षत्र, तारका
तम्बू – डेरा, खेमा, शिविर।
तस्वीर – चित्र, फोटो, प्रतिबिम्ब, प्रतिकृति, आकृति।
तालाब – जलाशय, सरोवर, ताल, सर, तड़ाग, जलधर, सरसी, पद्माकर, पुष्कर
तारीफ़ – बड़ाई, प्रशंसा, सराहना, प्रशस्ति, गुणगाना
तीर – नाराच, बाण, शिलीमुख, शर, सायक।
तोता – सुवा, शुक, दाडिमप्रिय, कीर, सुग्गा, रक्ततुंड।
तत्पर – तैयार, कटिबद्ध, उद्यत, सन्नद्ध।
तन्मय – मग्न, तल्लीन, लीन, ध्यानमग्न।
तालमेल – समन्वय, संगति, सामंजस्य।
तरकारी – शाक, सब्जी, भाजी।

KD Job Updates

पर्यायवाची शब्द

तूफान – झंझावात, अंधड़, आँधी, प्रभंजना
त्रुटि – अशुद्धि, भूल–चूक, गलती।

(थ)

थकान – क्लान्ति, श्रान्ति, थकावट, थकन।
थोड़ा – कम, ज़रा, अल्प, स्वल्प, न्यून।
थाह – अन्त, छोर, सिरा, सीना।
थोथा – पोला, खाली, खोखला, रिक्त, छूछा।
थल – धरती, ज़मीन, पृथ्वी, भूतल, भूमि।

(द)

दर्पण – शीशा, आइना, मुकुर, आरसी।
दास – चाकर, नौकर, सेवक, परिचारक, परिचर, किंकर, गुलाम, अनुचर।
दुःख – क्लेश, खेद, पीड़ा, यातना, विषाद, यन्त्रणा, क्षोभ, कष्ट
दूध – पय, दुग्ध, स्तन्य, क्षीर, अमृत।
देवता – सुर, आदित्य, अमर, देव, वसु।
दोस्त – सखा, मित्र, स्नेही, अन्तरंग, हितैषी, सहचर।
द्रोपदी – श्यामा, पाँचाली, कृष्णा, सैरन्ध्री, याज्ञसेनी, द्रुपदसुता, नित्ययौवना।
दासी – बाँदी, सेविका, किंकरी, परिचारिका।
दीपक – आदित्य, दीप, प्रदीप, दीया।
दुर्गा – सिंहवाहिनी, कालिका, अजा, भवानी, चण्डिका, कल्याणी, सुभद्रा, चामुण्डा।
दिव्य – अलौकिक, स्वर्गिक, लोकातीत, लोकोत्तर।
दीपावली – दीवाली, दीपमाला, दीपोत्सव, दीपमालिका।
दामिनी – बिजली, चपला, तड़ित, पीत–प्रभा, चंचला, विजय, विद्युत्, सौदामिनी।
देह – तन, रपु, शरीर, घट, काया, गात, कलेवर, तनु, मूर्ति।
दुर्लभ – अलभ्य, नायाब, विरल, दुष्प्राप्य।
दर्शन – भेंट, साक्षात्कार, मुलाकाता
दंगा – उपद्रव, फ़साद, उत्पात, उधम।।

KD Job Updates

द्वेष – बैर, शत्रुता, दुश्मनी, खार, ईर्ष्या, जलन, डाह, मात्सर्य।
दरवाज़ा – किवाड़, पल्ला, कपाट, द्वार।
दाई – धाया, धात्री, अम्मा, सेविका।
देवालय – देवमन्दिर, देवस्थान, मन्दिर।
दृढ़ – पुष्ट, मज़बूत, पक्का, तगड़ा।
दुर्गम – अगम्य, विकट, कठिन, दुस्तर।
द्विज – ब्राह्मण, ब्रह्मज्ञानी, वेदविद्, पण्डित, विप्रा
दिनांक – तारीख, तिथि, मिति।

(ध)

धनुष – चाप, धनु, शरासन, पिनाक, कोदण्ड, कमान, विशिखासन।
धीरज – धीरता, धीरत्व, धैर्य, धारण, धृति।
धरती – धरा, धरणी, पृथ्वी, क्षिति, वसुधा, अवनी, मेदिनी।
धवल – श्वेत, सफ़ेद, उजला।
धुंध – कुहरा, नीहार, कुहासा।
ध्वस्त – नष्ट, भ्रष्ट, भग्न, खण्डित।
धूल – रज, खेहट, मिट्टी, गर्द, धूलि
धंधा – दृढ़, अटल, स्थिर, निश्चित।
धनुर्धर – रोज़गार, व्यापार, कारोबार, व्यवसाय
धाक – धन्वी, तीरंदाज़, धनुषधारी, निषंगी।
धक्का – रोब, दबदबा, धौंस। टक्कर, रेला, झोंका।

(न)

नदी – सरिता, दरिया, अपगा, तटिनी, सलिला, स्रोतस्विनी, कल्लोलिनी, प्रवाहिणी।
नमक – लवण, लोन, रामरस, नोन।
नया – 'नवीन, नव्य, नूतन, आधुनिक, अभिनव, अर्वाचीन, नव, ताज़ा।
नाश – (i) समाप्ति, अवसान (i) विनाश, संहार, ध्वंस, नष्ट–भ्रष्ट।
नित्य – हमेशा, रोज़, सनातन, सर्वदा, सदा, सदैव, चिरंतन, शाश्वत।
नियम – विधि, तरीका, विधान, ढंग, कानून, रीति।

KD Job Updates

पर्यायवाची शब्द

नीलकमल – इंदीवर, नीलाम्बुज, नीलसरोज, उत्पल, असितकमल, कुवलय, सौगन्धित।
नौका – तरिणी, डोंगी, नाव, जलयान, नैया, तरी।
नारी – स्त्री, महिला, रमणी, वनिता, वामा, अबला, औरत।
निन्दा – अपयश, बदनामी, बुराई, बदगोई।
नैसर्गिक – प्राकृतिक, स्वाभाविक, वास्तविक
नरेश – नरेन्द्र, राजा, नरपति, भूपति, भूपाल
निष्पक्ष – उदासीन, अलग, निरपेक्ष, तटस्थ।
नियति – भाग्य, प्रारब्ध, विधि, भावी, दैव्य, होनी।
नक्षत्र – तारा, सितारा, खद्योत, तारक
नाग – सर्प, विषधर, भुजंग, व्याल, फणी, फणधर, उरग।
नग – भूधर, पहाड़, पर्वत, शैल, गिरि।
नरक – यमपुर, यमलोक, जहन्नुम, दौजख।
निधि – कोष, खज़ाना, भण्डार।
नग्न – नंगा, दिगम्बर, निर्वस्त्र, अनावृत।
नीरस – रसहीन, फीका, सूखा, स्वादहीन।
नीरव – मौन, चुप, शान्त, खामोश, निःशब्द।
निरर्थक – बेमानी, बेकार, अर्थहीन, व्यर्थी
निष्ठा – श्रद्धा, आस्था, विश्वास
निर्णय – निष्कर्ष, फ़ैसला, परिणाम।
निष्ठुर – निर्दय, निर्मम, बेदर्द, बेरहमा

(प)

पत्थर – पाहन, प्रस्तर, संग, अश्म, पाषाण।
पति – स्वामी, कान्त, भर्तार, बल्लभ, भर्ता, ईश।
पत्नी – दुलहिन, अर्धांगिनी, गृहिणी, त्रिया, दारा, जोरू, गृहलक्ष्मी, सहधर्मिणी, सहचरी, जाया।
पथिक – राही, बटाऊ, पंथी, मुसाफ़िर, बटोही।
पण्डित – विद्वान्, सुधी, ज्ञानी, धीर, कोविद, प्राज्ञा

KD Job Updates

परशुराम – भृगुसुत, जामदग्न्य, भार्गव, परशुधर, भृगुनन्दन, रेणुकातनय।
पर्वत – पहाड़, अचल, शैल, नग, भूधर, मेरू, महीधर, गिरि।
पवन – समीर, अनिल, मारुत, वात, पवमान, वायु, बयार।
पवित्र – पुनीत, पावन, शुद्ध, शुचि, साफ़, स्वच्छ
पार्वती – भवानी, अम्बिका, गौरी, अभया, गिरिजा, उमा, सती, शिवप्रिया।
पिता – जनक, बाप, तात, गुरु, फ़ादर, वालिद।
पुत्र – तनय, आत्मज, सुत, लड़का, बेटा, औरस, पूता
परिणय – शादी, विवाह, पाणिग्रहण।
पूज्य – आराध्य, अर्चनीय, उपास्य, वंद्य, वंदनीय, पूजनीय।
पुत्री – तनया, आत्मजा, सुता, लड़की, बेटी, दुहिता।
पृथ्वी – वसुधा, वसुन्धरा, मेदिनी, मही, भू, भूमि, इला, उर्वी, ज़मीन, क्षिति, धरती, धात्री।
प्रकाश – चमक, ज्योति, द्युति, दीप्ति, तेज़, आलोक।
प्रभात – सवेरा, सुबह, विहान, प्रातःकाल, भोर, ऊषाकाल
प्रथा – प्रचलन, चलन, रीति–रिवाज़, परम्परा, परिपाटी, रूढ़ि।
प्रलय – कयामत, विप्लव, कल्पान्त, गज़ब
प्रसिद्ध – मशहूर, नामी, ख्यात, नामवर, विख्यात, प्रख्यात, यशस्वी, मकबूला
प्रार्थना – विनय, विनती, निवेदन, अनुरोध, स्तुति, अभ्यर्थना, अर्चना, अनुनय।
प्रिया – प्रियतमा, प्रेयसी, सजनी, दिलरुबा, प्यारी।
प्रेम – प्रीति, स्नेह, दुलार, लाड़–प्यार, ममता, अनुराग, प्रणय।
पैर – पाँव, पाद, चरण, गोड़, पग, पद, पगु, टाँग
प्रभा – छवि, दीप्ति, द्युति, आभा।
पंथ – राह, डगर, पथ, मार्ग।
परतन्त्र – पराधीन, परवश, पराश्रित।
परिवार – कुल, घराना, कुटुम्ब, कुनबा।
परछाई – प्रतिच्छाया, साया, प्रतिबिम्ब, छाया, छवि।
पक्षी – विहग, निहंग, खग, अण्डज़, शकुन्त।
पल – क्षण, लम्हा, दमा
पश्चात्ताप – अनुताप, पछतावा, ग्लानि, संताप।

KD Job Updates

पर्यायवाची शब्द

पाश – जालबंधन, फंदा, बंधन, जकड़न।
पराग – रंज, पुष्परज, कुसुमरज, पुष्पधूलि।
परिवर्तन – क्रांति, हेर–फेर, बदलाव, तब्दीली।
पड़ोसी – हमसाया, प्रतिवासी, प्रतिवेशी।
पुरातन – प्राचीन, पूर्वकालीन, पुराना।
पूजा – आराधना, अर्चना, उपासना।
प्रकांड – अतिशय, विपुल, अधिक, भारी।।
प्रज्ञा – बुद्धि, ज्ञान, मेधा, प्रतिभा।
प्रचण्ड – भीषण, उग्र, भयंकर।
प्रणय – स्नेह, अनुराग, प्रीति, अनुरक्ति।
प्रताप – प्रभाव, धाक, बोलबाला, इकबाल।
प्रतिज्ञा – प्रण, वचन, वायदा।
प्रेक्षागार – नाट्यशाला, रंगशाला, अभिनयशाला, प्रेक्षागृह।
प्रौढ़ – अधेड़, प्रबुद्ध।
पल्लव – किसलय, घर्ण, पत्ती, पात, कोपल, फुनगी।
पांडुलिपि – हस्तलिपी, मसौदा, पांडुलेख।
फणी – सर्प, साँप, फणधर, नाग, उरग।
फ़ौरन – तत्काल, तत्क्षण, तुरन्त।
फूल – सुमन, कुसुम, गुल, प्रसून, पुष्प, पुहुप, मंजरी, लतांता
फौज़ – सेना, लश्कर, पल्टन, वाहिनी, सैन्य।
फणीन्द्र – शेषनाग, वासुकी, उरगाधिपति, सर्पराज, नागराज।

(ब)

बलराम – हलधर, बलवीर, रेवतीरमण, बलभद्र, हली, श्यामबन्धु।
बाग – उपवन, वाटिका, उद्यान, निकुंज, फुलवाड़ी, बगीचा।
बन्दर – कपि, वानर, मर्कट, शाखामृग, कीश।
बट्टा – घाटा, हानि, टोटा, नुकसान।
बलिदान – कुर्बानी, आत्मोत्सर्ग, जीवनदान।

KD Job Updates

बंजर – ऊसर, परती, अनुपजाऊ, अनुर्वर।
बिछोह – वियोग, जुदाई, बिछोड़ा, विप्रलंभ।
बियावान – निर्जन, सूनसान, वीरान, उजाड़।
बंक – टेढ़ा, तिर्यक्, तिरछा, वक्र
बहुत – ज़्यादा, प्रचुर, प्रभूत, विपुल, इफ़रात, अधिक।
बुद्धि – प्रज्ञा, मेधा, ज़ेहन, समझ, अकल, गति।
ब्रह्मा – विधि, चतुरानन, कमलासन, विधाता, विरंचि, पितामह, अज, प्रजापति, स्वयंभू।
बादल – मेघ, पयोधर, नीरद, वारिद, अम्बुद, बलाहक, जलधर, घन, जीमूत।
बाल – केश, अलक, कुन्तल, रोम, शिरोरूह, चिकुर।
बिजली – तड़ित, दामिनी, विद्युत, सौदामिनी, चंचला, बीजुरी।
बसंत – ऋतुराज, ऋतुपति, मधुमास, कुसुमाकर, माधव।
बाण – तीर, तोमर, विशिख, शिलीमुख, नाराच, शर, इषु।
बारिश – पावस, वृष्टि, वर्षा, बरसात, मेह, बरखा।
बालिका – बाला, कन्या, बच्ची, लड़की, किशोरी।

(भ)

भगवान – परमेश्वर, परमात्मा, सर्वेश्वर, प्रभु, ईश्वर।
भगिनी – दीदी, जीजी, बहिन
भारती – सरस्वती, ब्राह्मी, विद्या देवी, शारदा, वीणावादिनी।
भाल – ललाट, मस्तक, माथा, कपाल।
भरोसा – सहारा, अवलम्ब, आश्रय, प्रश्रय।
भास्कर – चमकीला, आभामय, दीप्तिमान, प्रकाशवान।
भुगतान – भरपाई, अदायगी, बेबाकी।
भोला – सीधा, सरल, निष्कपट, निश्छल।
भूखा – बुभुक्षित, क्षुधातुर, क्षुधालु, क्षुधात।
भँवरा – भ्रमर, ग, मधुकर, मधुप, अलि, द्विरेफ।
भाई – अग्रज, अनुज, सहोदर, तात, भइया, बन्धु।
भाँड – विदूषक, मसखरा, जोकर।
भिक्षुक – भिखमंगा, भिखारी, याचक

KD Job Updates

पर्यायवाची शब्द

(म)

मछली – मीन, मत्स्य, सफरी, झष, जलजीवन।
मज़ाक – दिल्लगी, उपहास, हँसी, मखौल, मसखरी, व्यंग्य, छींटाकशी।
मदिरा – शराब, हाला, आसव, मद्य, सुरा।
महादेव – शंकर, शंभू, शिव, पशुपति, चन्द्रशेखर, महेश्वर, भूतेश, आशुतोष, गिरीश
मक्खन – नवनीत, दधिसार, माखन, लौनी।
मंगनी – वाग्दान, फलदान, सगाई।
मनीषी – पण्डित, विचारक, ज्ञानी, विद्वान्।
मुँह – मुख, आनन, बदन।
मित्र – सखा, दोस्त, सहचर, सुहृद।
माँ – मातु, माता, मातृ, मातरि, मैया, महतारी, अम्ब, जननी, जनयित्री, जन्मदात्री।
मेघ – धराधर, घन, जलचर, वारिद, जीमूत, बादल, नीरद, पयोधर, जगलीवन, अम्बुद।
मैना – सारिका, चित्रलोचना, कलहप्रिया।
मंथन – बिलोना, विलोड़न, आलोड़न।
महक – परिमल, वास, सुवास, खुशबू, सुगंध, सौरभ।
मृत्यु – देहावसान, देहान्त, पंचतत्वलीन, निधन, मौत, इंतकाल।
माँझी – मल्लाह, नाविक, केवट।
माया – छल, छलना, प्रपंच, प्रतारणा।
माधुरी – माधुर्य, मिठास, मधुरता।
मानव – मनुज, मनुष्य, मानुष, नर, इंसान।
मोती – सीपिज, मौक्तिक, मुक्ता, शशिप्रभा।
मेंदकं – दादुर, दर्दुर, मण्डूक, वर्षाप्रिय, भेका
मोर – मयूर, नीलकण्ठ, शिखी, केकी, कलापी।
मोक्ष – मुक्ति, निर्वाण, कैवल्य, परमधाम, परमपद, अपवर्ग, सदगति।
मंदिर – देवालय, देवस्थान, देवगृह, ईशगृह।
मधु – शहद, बसंत–ऋत. भसमासव, मकरंद, पुष्पासव।

(य)

KD Job Updates

यम – सूर्यपुत्र, धर्मराज, श्राद्धदेव, कीनाश, शमन, दण्डधर, यमुनाभ्राता।
यत्न – प्रयत्न, चेष्टा, उद्यम
यामिनी – निशा, रजनी, राका, विभावरी।
योग्य – कुशल, सक्षम, कार्यक्षम, काबिला
यात्रा – भ्रमण, देशाटन, पर्यटन, सफ़र, घूमना।
याद – सुधि, स्मृति, ख्याल, स्मरण।
यंत्र – औज़ार, कल, मशीन।
यती – संन्यासी, वीतरागी, वैरागी।
युद्ध – रण, जंग, समर, लड़ाई, संग्राम।
याचिका – आवेदन–पत्र, अभ्यर्थना, प्रार्थना पत्र।

(र)

रक्त – खून, लहू, रुधिर, शोणित, लोहित, रोहित।
राधा – ब्रजरानी, हरिप्रिया, राधिका, वृषभानुजा।
रानी – राज्ञी, महिषी, राजपत्नी।
रावण – लंकेश, दशानन, दशकंठ, दशकंधर, लंकाधिपति, दैत्येन्द्र।
राज्यपाल – प्रान्तपति, सूबेदार, गवर्नर।
राय – मत, सलाह, सम्मति, मंत्रणा, परामर्श
रूढ़ि – प्रथा, दस्तूर, रस्म।
रक्षा – बचाव, संरक्षण, हिफ़ाजत, देखरेख।
रमा – कमला, इन्दिरा, लक्ष्मी, हरिप्रिया, समुद्रजा, चंचला, क्षीरोदतनया, पद्मा, श्री, भार्गवी।
रसना – जीभ, जबान, रसेन्द्रिय, जिह्वा, रसीका।
रविवार – इतवार, आदित्य–वार, सूर्यवार, रविवासर।
राजा – नरेन्द्र, नरेश, नृप, भूपाल, राव, भूप, महीप, नरपति, सम्राट।
रामचन्द्र – रघुवर, रघुनाथ, सीतापति, कौशल्यानन्दन, अमिताभ, राघव, रघुराज, अवधेश
रात – रैन, रजनी, निशा, विभावरी, यामिनी, तमी, तमस्विनी, शर्वरी, विभा, क्षपा, रात्रि
रिपु – बैरी, दुश्मन, विपक्षी, विरोधी, प्रतिवादी, अमित्र, शत्रु।
रोना – विलाप, रोदन, रुदन, क्रंदन, विलपन।

KD Job Updates

पर्यायवाची शब्द

(ल)

लक्ष्मण – अनंत, लखन, सौमित्र।
लग्न – संलग्न, सम्बद्ध, संयुक्ता
लज्जा – शर्म, हया, लाज, व्रीडा।
लहर – लहरी, हिलोर, तरंग, उर्मि।
लालसा – तृष्णा, अभिलाषा, लिप्सा, लालच।
लगातार – सतत, निरन्तर, अजस्र, अनवरत।
लता – बेल, वल्लरी, लतिका, प्रतान, वीरुध।
लघु – थोड़ा, न्यून, हल्का, छोटा।
लक्ष्मी – श्री, कमला, रमा, पद्मा, हरिप्रिया, क्षीरोद, इन्दिरा, समुद्रजा।

(व)

वर्षा – बरसात, मेह, बारिश, पावस, चौमास।
वक्ष – सीना, छाती, वक्षस्थल, उदरस्थला
वन – अरण्य, अटवी, कानन, विपिन।
वस्त्र – परिधान, पट, चीर, वसन, कपड़ा, पोशाक, अम्बर।
विकार – विकृति, दोष, बुराई, बिगाड़!
विष – गरल, माहुर, हलाहल, कालकूट, ज़हर।
विरुद – प्रशस्ति, कीर्ति, यशोगान, गुणगान।
विविध – नाना, प्रकीर्ण, विभिन्न।
विभोर – मस्त, मुग्ध, मग्न, लीना
विप्र – भूदेव, ब्राह्मण, महीसुर, पुरोहित, पण्डित।
विभा – प्रभा, आभा, कांति, शोभा।
विशारद – पण्डित, ज्ञानी, विशेषज्ञ, सुधी।
विलास – आनन्द, भोग, सन्तुष्टि, वासना।
व्यसन – लत, वान, टेक, आसक्ति।
वृक्ष – द्रुम, पादप, तरु, विटप।

KD Job Updates

विवाद – अनबन, झगड़ा, तकरार, बखेरा।
वंक – टेढ़ा, वक्र, कुटिल।
विपरीत – उलटा, प्रतिकूल, खिलाफ़, विरुद्ध।
व्रण – घाव, फोड़ा, ज़ख्म, नासूर।
वेश्या – गणिका, वारांगना, पतुरिया, रंडी, तवायफ़
वसन्त – मधुमास, ऋतुराज, माधव, कुसुमाकर, कामसखा, मधुऋतु।
विद्या – ज्ञान, शिक्षा, गुण, इल्म, सरस्वती।
विधि – शैली, तरीका, नियम, रीति, पद्धति, प्रणाली, चाल।
विमल – स्वच्छ, निर्मल, पवित्र, पावन, विशुद्ध।
विष्णु – नारायण, केशव, गोविन्द, माधव, जनार्दन, विशम्भर, मुकुन्द, लक्ष्मीपति, कमलापति।

(श)

शपथ – कसम, प्रतिज्ञा, सौगन्ध, हलफ़, सौं।
शहद – मधु, मकरंद, पुष्परस, पुष्पासव।
शब्द – ध्वनि, नाद, आश्व, घोष, रव, मुखर।
शरण – संश्रय, आश्रय, त्राण, रक्षा।
शिष्ट – शालीन, भद्र, संभ्रान्त, सौम्य, सज्जन, सभ्य।
शेर – सिंह, नाहर, केहरि, वनराज, केशरी, मृगेन्द, शार्दूल, व्याघ्र।
शिरा – नाड़ी, धमनी, नस।
शुभ – मंगल, कल्याणकारी, शुभंकर।
शिक्षा – नसीहत, सीख, तालीम, प्रशिक्षण, उपदेश, शिक्षण, ज्ञान।
श्वेत – सफ़ेद, धवल, शुक्ल, उजला, सिता
शंकर – शिव, उमापति, शम्भू, भोलेनाथ, त्रिपुरारि, महेश, देवाधिदेव, कैलाशपति, आशुतोष
शाश्वत – सर्वकालिक, अक्षय, सनातन, नित्य।
शिकारी – आखेटक, लुब्धक, बहेलिया, अहेरी, व्याध
श्मशान – मरघट, मसान, दाहस्थल।

(ष)

KD Job Updates

पर्यायवाची शब्द

षड्यंत्र – साज़िश, दुरभिसंधि, अभिसंधि, कुचक्र

(स)

सब – अखिल, सम्पूर्ण, सकल, सर्व, समस्त, समग्र, निखिल।
संकल्प – वृत, दृढ़ निश्चय, प्रतिज्ञा, प्रण।
संग्रह – संकलन, संचय, जमावा
संन्यासी – बैरागी, दंडी, विरत, परिव्राजका
सजग – सतर्क, चौकस, चौकन्ना, सावधान।
संहार – अन्त, नाश, समाप्ति, ध्वंसा
समसामयिक – समकालिक, समकालीन, समवयस्क, वर्तमान।
समीक्षा – विवेचना, मीमांसा, आलोचना, निरूपण।
समुद्र – नदीश, वारीश, रत्नाकर, उदधि, पारावार।
सखी – सहेली, सहचरी, सैरंध्री।
सज्जन – भद्र, साधु, पुंगव, सभ्य, कुलीन।
संसार – विश्व, दुनिया, जग, जगत्, इहलोक।
समाप्ति – इतिश्री, इति, अंत, समापन।
सार – रस, सत्त, निचोड़, सत्त्व।
स्तन – पयोधर, छाती, कुच, उरस, उरोज।
सुन्दरी – ललिता, सुनेत्रा, सुनयना, विलासिनी, कामिनी।
सूची – अनुक्रम, अनुक्रमणिका, तालिका, फेहरिस्त, सारणी।
स्वर्ण – सुवर्ण, सोना, कनक, हिरण्य, हेम।
स्वर्ग – सुरलोक, धुलोक, बैकुंठ, परलोक, दिव।
स्वच्छन्द – निरंकुश, स्वतन्त्र, निबंध।
स्वावलम्बन – आत्माश्रय, आत्मनिर्भरता, स्वाश्रय।
स्नेह – प्रेम, प्रीति, अनुराग, प्यार, मोहब्बत, इश्क।
समुद्र – सागर, रत्नाकर, पयोधि, नदीश, सिन्धु, जलधि, पारावार, वारीश, अर्णव, अब्धि।
सरस्वती – भारती, शारदा, वीणापाणि, गिरा, वाणी, महाश्वेता, श्री, भाष, वाक्, हंसवाहिनी, ज्ञानदायिनी।

KD Job Updates

सूर्य – सूरज, दिनकर, दिवाकर, भास्कर, रवि, नारायण, सविता, कमलबन्धु, आदित्य, प्रभाकर, मार्तण्ड।
सम्पूर्ण – पूर्ण, समग्र, सारा, पूरा, मुकम्मल।
सर्प – भुजंग, अहि, विषधर, व्याल, फणी, उरग, साँप, नाग, अहि।
सुरपुर – सुलोक, स्वर्गलोक, हरिधाम, अमरपुर, देवराज्य, स्वर्ग।
सेठ – महाजन, सूदखोर, साहूकार, ब्याजजीवी, पूँजीपति, मालदार, धनवान, धनी, ताल्लुकदार।
संध्या – निशारंभ, दिनावसान, दिनांत, सायंकाल, गोधूलि, साँझ।
स्तुति – प्रार्थना, पूजा, आराधना, अर्चना।

(ह)

हंस – मुक्तमुक, मराल, सरस्वतीवाहन।
हाँसी – स्मिति, मुस्कान, हास्य।
हित – कल्याण, भलाई, भला, उपकार।
हक – अधिकार, स्वत्व, दावा, फर्ज़, उचित पक्ष।
हिमालय – हिमगिरि, हिमाद्रि, गिरिराज, शैलेन्द्र।
हनुमान् – पवनसुत, महावीर, आंजनेय, कपीश, बजरंगी, मारुतिनन्दन, बजरंग।
हाथ – कर, हस्त, पाणि, भुजा, बाहु, भुजाना
हाथी – गज, कुंजर, वितुण्ड, मतंग, नाग, द्विरद।
हार – (i) पराजय, पराभव, शिकस्त, मात। (ii) माला, कंठहार, मोहनमाला, अंकमालिका।
हिम – तुषार, तुहिन, नीहार, बर्फी
हिरन – मृग, हरिण, कुरंग, सारंग।
होशियार – समझदार, पटु, चतुर, बुद्धिमान, विवेकशील।
हेम – स्वर्ण, सोना, कंचन।
हरि – बंदर, इन्द्र, विष्णु, चंद्र, सिंह।

(क्ष)

क्षेत्र – प्रदेश, इलाका, भू–भाग, भूखण्ड।
क्षणभंगुर – अस्थिर, अनित्य, नश्वर, क्षणिका

KD Job Updates

पर्यायवाची शब्द

क्षय – तपेदिक, यक्ष्मा, राजरोग।
क्षुब्ध – व्याकुल, विकल, उद्विग्न।
क्षमता – शक्ति, सामर्थ्य, बल, ताकत।
क्षीण – दुर्बल, कमज़ोर, बलहीन, कृश

****

(Paryayvachi Shabd) पर्यायवाची शब्द वस्तुनिष्ठ प्रश्नावली

निर्देश (प्र.सं. 1-2) प्रश्नों में दिए गए शब्द के समानार्थक शब्द का चयन उसके नीचे दिए गए विकल्पों में से कीजिए।

प्रश्न 1.
विप्र (के.वी.एस.पी.आर.टी 2015)
(a) निर्धन
(b) धनी
(c) ब्राह्मण
(d) सैनिक
उत्तर :
(c) ब्राह्मण

प्रश्न 2.
आविर्भाव
(a) मृत्यु
(b) मोक्ष
(c) वानप्रस्थ
(d) उत्पत्ति
उत्तर :
(d) उत्पत्ति

KD Job Updates

प्रश्न 3.
निम्नलिखित में पर्यायवाची शब्द है (अन्वेषक सीधी भर्ती परीक्षा 2014)
(a) अचिर, अचर
(b) राधारमण, कंसनिकन्दन
(c) अम्बुज, अम्बुधि
(d) नीरद, नीरज
उत्तर :
(b) राधारमण, कंसनिकन्दन

प्रश्न 4.
कौन-सा विकल्प वैचारिक अन्तर के समानार्थी शब्दों का है?
(a) देखना, घूरना
(b) बेहद, असीम
(c) जल, नीर
(d) सौन्दर्य, खूबसूरती
उत्तर :
(a) देखना, घूरना

प्रश्न 5.
'नौका' शब्द का पर्याय बताइए।
(a) तिया
(b) तरंगिणी
(c) तरी
(d) तरणिजा
उत्तर :
(c) तरी

प्रश्न 6.
'घर' के लिए यह पर्यायवाची नहीं है (डी.एस.एस.एस.बी. असिस्टेंट टीचर परीक्षा 2015)
(a) गृह

KD Job Updates

(b) ग्रह
(c) आलय
(d) निलय
उत्तर :
(b) ग्रह

प्रश्न 7.
'पवन' का पर्यायवाची शब्द है (सहायक उपनिरीक्षक भर्ती परीक्षा 2014)
(a) मिलना
(b) पूजना
(c) समीर
(d) आदर
उत्तर :
(c) समीर

प्रश्न 8.
'खर' का पर्यायवाची शब्द है । (उपनिरीक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 2014)
(a) खरगोश
(b) शशक
(c) मूर्ख
(d) गधा
उत्तर :
(d) गधा

प्रश्न 9.
अनिल पर्यायवाची है (उपनिरीक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 2014)
(a) पवन का
(b) चक्रवात का
(c) पावस का

KD Job Updates

(d) अनल का
उत्तर :
(a) पवन का

प्रश्न 10.
'प्रसून' शब्द का पर्यायवाची है। (उपनिरीक्षक सीधी भर्ती परीक्षा 2014)
(a) वृक्ष
(b) पुष्प
(c) चन्द्रमा
(d) अग्नि
उत्तर :
(b) पुष्प

KD Job Updates

प्रत्यय

Pratyaya(Suffix)(प्रत्यय)

प्रत्यय (Suffix)की परिभाषा

- जो शब्दांश, शब्दों के अंत में जुड़कर अर्थ में परिवर्तन लाये, प्रत्यय कहलाते है।
- **दूसरे अर्थ में-** शब्द निर्माण के लिए शब्दों के अंत में जो शब्दांश जोड़े जाते हैं, वे प्रत्यय कहलाते हैं।

प्रत्यय दो शब्दों से बना है- प्रति+अय। 'प्रति' का अर्थ 'साथ में, 'पर बाद में' है और 'अय' का अर्थ 'चलनेवाला' है। अतएव, 'प्रत्यय' का अर्थ है 'शब्दों के साथ, पर बाद में चलनेवाला या लगनेवाला। प्रत्यय उपसर्गों की तरह अविकारी शब्दांश है, जो शब्दों के बाद जोड़े जाते है।

जैसे- पाठक, शक्ति, भलाई, मनुष्यता आदि। 'पठ' और 'शक' धातुओं से क्रमशः 'अक' एवं 'ति' प्रत्यय लगाने पर
पठ + अक= पाठक और शक + ति= 'शक्ति' शब्द बनते हैं। 'भलाई' और 'मनुष्यता' शब्द भी 'भला' शब्द में 'आई' तथा 'मनुष्य' शब्द में 'ता' प्रत्यय लगाने पर बने हैं।

प्रत्यय के भेद

- मूलतः प्रत्यय के दो प्रकार है -
  (1) कृत् प्रत्यय (कृदन्त) (Agentive)
  (2) तद्धित प्रत्यय (Nominal)

(1) कृत् प्रत्यय(Agentive):-

- क्रिया या धातु के अन्त में प्रयुक्त होनेवाले प्रत्ययों को 'कृत्' प्रत्यय कहते है और उनके मेल से बने शब्द को 'कृदन्त' कहते है।

KD Job Updates

- **दूसरे शब्दो में**- वे प्रत्यय जो क्रिया के मूल रूप यानी धातु (root word) में जोड़े जाते है, कृत् प्रत्यय कहलाते है।
  जैसे- लिख् + अक =लेखक। यहाँ अक कृत् प्रत्यय है तथा लेखक कृदंत शब्द है।

ये प्रत्यय क्रिया या धातु को नया अर्थ देते है। कृत् प्रत्यय के योग से संज्ञा और विशेषण बनते है। हिंदी में क्रिया के नाम के अंत का 'ना' (कृत् प्रत्यय) हटा देने पर जो अंश बच जाता है, वही धातु है। जैसे- कहना की कह्, चलना की चल् धातु में ही प्रत्यय लगते है।

कुछ उदाहरण इस प्रकार है-

(क)

कृत्-प्रत्यय	**क्रिया**	**शब्द**
वाला	गाना	गानेवाला
हार	होना	होनहार
इया	छलना	छलिया

(ख)

कृत्-प्रत्यय	**धातु**	**शब्द**
अक	कृ	कारक
अन	नी	नयन
ति	शक्	शक्ति

(ग़)

KD Job Updates

प्रत्यय

कृत्-प्रत्यय	क्रिया या धातु	शब्द (संज्ञा)
तव्य (संस्कृत)	कृ	कर्तव्य
यत्	दा	देय
वैया (हिंदी)	खेना-खे	खेवैया
अना (संस्कृत)	विद्	वेदना
आ (संस्कृत)	इश् (इच्छ्)	इच्छा
अन	मोह, झाड़, पठ, भक्ष	मोहन, झाड़न, पठन, भक्षण
आई	सुन, लड़, चढ़	सुनाई, लड़ाई, चढ़ाई
आन	थक, चढ़, पठ	थकान, चढ़ान, पठान
आव	बह, चढ़, खिंच, बच	बहाव, चढ़ाव, खिंचाव, बचाव
आवट	सज, लिख, मिल	सजावट, लिखावट, मिलावट
आहट	चिल्ला, गुर्रा, घबरा	चिल्लाहट, गुर्राहट, घबराहट
आवा	छल, दिख, चढ़	छलावा, दिखावा, चढ़ावा
ई	हँस, बोल, घुड़, रेत, फाँस	हँसी, बोली, घुड़की, रेती, फाँसी

KD Job Updates

कृत्-प्रत्यय	क्रिया या धातु	शब्द (संज्ञा)
आ	झूल, ठेल, घेर, भूल	झूला, ठेला, घेरा, भूला
ऊ	झाड़, आड़, उतार	झाड़ू, आड़ू, उतारू
न	बंध, बेल, झाड़	बंधन, बेलन, झाड़न
नी	चट, धौंक, मथ	चटनी, धौंकनी, मथनी
औटी	कस	कसौटी
इया	बढ़, घट, जड़	बढ़िया, घटिया, जड़िया
अक	पाठ, धाव, सहाय, पाल	पाठक, धावक, सहायक, पालक
ऐया	चढ़, रख, लूट, खेव	चढ़ैया, रखैया, लुटैया, खेवैया

(घ)

कृत्-प्रत्यय	धातु	विशेषण
क्त	भू	भूत
क्त	मद्	मत्त
क्त (न)	खिद्	खिन्न

KD Job Updates

प्रत्यय

कृत्-प्रत्यय	धातु	विशेषण
क्त (ण)	जृ	जीर्ण
मान	विद्	विद्यमान
अनीय (संस्कृत)	दृश्	दर्शनीय
य (संस्कृत)	दा	देय
य (संस्कृत)	पूज्	पूज्य
आऊ (हिंदी)	चल, बिक, टिक	चलाऊ, बिकाऊ, टिकाऊ
आका (हिंदी)	लड़, धम, कड़	लड़ाका, धमाका, कड़ाका
आड़ी (हिंदी)	खेल, कब, आगे, पीछे	खिलाड़ी, कबाड़ी, अगाड़ी, पिछाड़ी
आकू	पढ़, लड़	पढ़ाकू, लड़ाकू
आलू/आलु	झगड़ा, दया, कृपा	झगड़ालू, दयालु, कृपालु
एरा	लूट, काम	लुटेरा, कमेरा
इयल	सड़, अड़, मर	सड़ियल, अड़ियल, मरियल

KD Job Updates

कृत्-प्रत्यय	धातु	विशेषण
ऊ	डाका, खा, चाल	डाकू, खाऊ, चालू

कृत् प्रत्यय के भेद

- हिंदी में रूप के अनुसार 'कृत् प्रत्यय' के दो भेद है-
  (i)विकारी कृत् प्रत्यय (ii)अविकारी कृत् प्रत्यय

(2)तद्धित प्रत्यय(Nominal):-

- संज्ञा सर्वनाम और विशेषण के अन्त में लगनेवाले प्रत्यय को 'तद्धित' कहा जाता है और उनके मेल से बने शब्द को 'तद्धितान्त'।

दूसरे शब्दों में- धातुओं को छोड़कर अन्य शब्दों में लगनेवाले प्रत्ययों को तद्धित कहते हैं।
जैसे-
मानव + ता = मानवता
अच्छा + आई = अच्छाई
अपना + पन = अपनापन
एक + ता = एकता
ड़का + पन = लडकपन
मम + ता = ममता
अपना + पन = अपनत्व

कृत-प्रत्यय क्रिया या धातु के अन्त में लगता है, जबकि तद्धित प्रत्यय संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण के अन्त में। तद्धित और कृत-प्रत्यय में यही अन्तर है। उपसर्ग की तरह तद्धित-प्रत्यय भी तीन स्रोतों- संस्कृत, हिंदी और उर्दू- से आकर हिन्दी शब्दों की रचना में सहायक हुए है। नीचे इनके उदाहरण दिये गए है।

KD Job Updates

प्रत्यय

हिंदी के तद्धित-प्रत्यय (Nominal suffixes)

हिंदी के तद्धित-प्रत्यय ये है- आ, आई, ताई, आऊ, आका, आटा, आन, आनी, आयत आर, आरी आरा, आलू, आस आह, इन, ई, ऊ, ए, ऐला एला, ओ, ओट, ओटा औटी, औती, ओला, क, की, जा, टा, टी, त, ता, ती, नी, पन, री, ला, ली, ल, वंत, वाल, वा, स, सरा, सा, हरा, हला, इत्यादि।

तद्धित-प्रत्यय के प्रकार

हिंदी में तद्धित-प्रत्यय के आठ प्रकार हैं-

(1) कर्तृवाचक तद्धित प्रत्यय
(2) भाववाचक तद्धित प्रत्यय
(3) संबंधवाचक तद्धित प्रत्यय
(4) गणनावाचक तद्धित प्रत्यय
(5) गुणवाचक तद्धित प्रत्यय
(6) स्थानवाचक तद्धित प्रत्यय
(7) ऊनवाचक तद्धित प्रत्यय
(8) सादृश्यवाचक तद्धित प्रत्यय

KD Job Updates

समास

Samas(Compound)(समास)

समास(Compound) की परिभाषा-

- अनेक शब्दों को संक्षिप्त करके नए शब्द बनाने की प्रक्रिया समास कहलाती है।
- **दूसरे अर्थ में-** कम-से-कम शब्दों में अधिक-से-अधिक अर्थ प्रकट करना 'समास' कहलाता है।

अथवा,

- दो या अधिक शब्दों (पदों) का परस्पर संबद्ध बतानेवाले शब्दों अथवा प्रत्ययों का लोप होने पर उन दो या अधिक शब्दों से जो एक स्वतन्त्र शब्द बनता है, उस शब्द को सामासिक शब्द कहते है और उन दो या अधिक शब्दों का जो संयोग होता है, वह समास कहलाता है।

KD Job Updates

 समास में कम-से-कम दो पदों का योग होता है।

 वे दो या अधिक पद एक पद हो जाते है: 'एकपदीभावः समासः'।

 समास में समस्त होनेवाले पदों का विभक्ति-प्रत्यय लुप्त हो जाता है।

 समस्त पदों के बीच सन्धि की स्थिति होने पर सन्धि अवश्य होती है। यह नियम संस्कृत तत्सम में अत्यावश्यक है।

 समास की प्रक्रिया से बनने वाले शब्द को समस्तपद कहते हैं; जैसे- देशभक्ति, मुरलीधर, राम-लक्ष्मण, चौराहा, महात्मा तथा रसोईघर आदि।

 समस्तपद का विग्रह करके उसे पुनः पहले वाली स्थिति में लाने की प्रक्रिया को समास-विग्रह कहते हैं; जैसे- देश के लिए भक्ति; मुरली को धारण किया है जिसने; राम और लक्ष्मण; चार राहों का समूह; महान है जो आत्मा; रसोई के लिए घर आदि।

 समस्तपद में मुख्यतः दो पद होते हैं- पूर्वपद तथा उत्तरपद।
पहले वाले पद को पूर्वपद कहा जाता है तथा बाद वाले पद को उत्तरपद; जैसे-
पूजाघर(समस्तपद) - पूजा(पूर्वपद) + घर(उत्तरपद) - पूजा के लिए घर (समास-विग्रह)
राजपुत्र(समस्तपद) - राजा(पूर्वपद) + पुत्र(उत्तरपद) - राजा का पुत्र (समास-विग्रह)

समास के भेद

समास के मुख्य सात भेद है:-

(1)तत्पुरुष समास (Determinative Compound)
(2)कर्मधारय समास (Appositional Compound)
(3)द्विगु समास (Numeral Compound)
(4)बहुव्रीहि समास (Attributive Compound)
(5)द्वन्द समास (Copulative Compound)
(6)अव्ययीभाव समास(Adverbial Compound)
(7)नञ समास

(1)तत्पुरुष समास :-

- जिस समास में बाद का अथवा उत्तरपद प्रधान होता है तथा दोनों पदों के बीच का कारक-चिह्न लुप्त हो जाता है, उसे तत्पुरुष समास कहते है।

जैसे-

तुलसीकृत= तुलसी से कृत
शराहत= शर से आहत
राहखर्च= राह के लिए खर्च
राजा का कुमार= राजकुमार

तत्पुरुष समास में अन्तिम पद प्रधान होता है। इस समास में साधारणतः प्रथम पद विशेषण और द्वितीय पद विशेष्य होता है। द्वितीय पद, अर्थात बादवाले पद के विशेष्य होने के कारण इस समास में उसकी प्रधानता रहती है।

KD Job Updates

समास

तत्पुरुष समास के भेद----

तत्पुरुष समास के छह भेद होते है-

(i)कर्म तत्पुरुष

(ii)करण तत्पुरुष

(iii)सम्प्रदान तत्पुरुष

(iv)अपादान तत्पुरुष

(v)सम्बन्ध तत्पुरुष

(vi)अधिकरण तत्पुरुष

(2)कर्मधारय समास:-

- जिस समस्त-पद का उत्तरपद प्रधान हो तथा पूर्वपद व उत्तरपद में उपमान-उपमेय अथवा विशेषण-विशेष्य संबंध हो, कर्मधारय समास कहलाता है।
- **दूसरे शब्दों में-** वह समास जिसमें विशेषण तथा विशेष्य अथवा उपमान तथा उपमेय का मेल हो और विग्रह करने पर दोनों खंडों में एक ही कर्त्ताकारक की विभक्ति रहे। उसे कर्मधारय समास कहते हैं।
  सरल शब्दों में- कर्ता-तत्पुरुष को ही कर्मधारय कहते हैं।

पहचान: विग्रह करने पर दोनों पद के मध्य में 'है जो', 'के समान' आदि आते है।

समानाधिकरण तत्पुरुष का ही दूसरा नाम कर्मधारय है। जिस तत्पुरुष समास के समस्त होनेवाले पद समानाधिकरण हों, अर्थात विशेष्य-विशेषण-भाव को प्राप्त हों, कर्ताकारक के हों और लिंग-वचन में समान हों, वहाँ 'कर्मधारयतत्पुरुष' समास होता है।

कर्मधारय समास की निम्नलिखित स्थितियाँ होती हैं-

(a) पहला पद विशेषण दूसरा विशेष्य : महान्, पुरुष =महापुरुष

(b) दोनों पद विशेषण : श्वेत और रक्त =श्वेतरक्त

भला और बुरा = भलाबुरा

कृष्ण और लोहित =कृष्णलोहित

KD Job Updates

(c) पहला पद विशेष्य दूसरा विशेषण : श्याम जो सुन्दर है =श्यामसुन्दर
(d) दोनों पद विशेष्य : आम्र जो वृक्ष है =आम्रवृक्ष
(e) पहला पद उपमान : घन की भाँति श्याम =घनश्याम
व्रज के समान कठोर =वज्रकठोर
(f) पहला पद उपमेय : सिंह के समान नर =नरसिंह
(g) उपमान के बाद उपमेय : चन्द्र के समान मुख =चन्द्रमुख
(h) रूपक कर्मधारय : मुखरूपी चन्द्र =मुखचन्द्र
(i) पहला पद कु : कुत्सित पुत्र =कुपुत्र

(3)द्विगु समास:-

जिस समस्त-पद का पूर्वपद संख्यावाचक विशेषण हो, वह द्विगु कर्मधारय समास कहलाता है।
इस समास को संख्यापूर्वपद कर्मधारय कहा जाता है। इसका पहला पद संख्यावाची और दूसरा पद संज्ञा होता है। जैसे-

समस्त-पद	**विग्रह**
सप्तसिंधु	सात सिंधुओं का समूह
दोपहर	दो पहरों का समूह
त्रिलोक	तीनों लोको का समाहार
तिरंगा	तीन रंगों का समूह
दुअत्री	दो आनों का समाहार

KD Job Updates

समास

समस्त-पद	विग्रह
पंचतंत्र	पाँच तंत्रों का समूह
पंजाब	पाँच आबों (नदियों) का समूह
पंचरत्न	पाँच रत्नों का समूह
नवरात्रि	नौ रात्रियों का समूह
त्रिवेणी	तीन वेणियों (नदियों) का समूह
सतसई	सात सौ दोहों का समूह

द्विगु के भेद

इसके दो भेद होते है- **(i)समाहार द्विगु और (ii)उत्तरपदप्रधान द्विगु।**

(i)समाहार द्विगु:- समाहार का अर्थ है 'समुदाय' 'इकट्ठा होना' 'समेटना' उसे समाहार द्विगु समास कहते हैं।
जैसे- तीनों लोकों का समाहार= त्रिलोक
पाँचों वटों का समाहार= पंचवटी
पाँच सेरों का समाहार= पसेरी
तीनो भुवनों का समाहार= त्रिभुवन

(ii)उत्तरपदप्रधान द्विगु:- इसका दूसरा पद प्रधान रहता है और पहला पद संख्यावाची। इसमें समाहार नहीं जोड़ा जाता।
उत्तरपदप्रधान द्विगु के दो प्रकार है-
(a) बेटा या उत्पत्र के अर्थ में; जैसे- दो माँ का- द्वैमातुर या दुमाता; दो सूतों के मेल का- दुसूती;

KD Job Updates

(b) जहाँ सचमुच ही उत्तरपद पर जोर हो; जैसे- पाँच प्रमाण (नाम) =पंचप्रमाण; पाँच हत्थड़ (हैण्डिल)= पँचहत्थड़।

(4)बहुव्रीहि समास:-

- समास में आये पदों को छोड़कर जब किसी अन्य पदार्थ की प्रधानता हो, तब उसे बहुव्रीहि समास कहते है।
- **दूसरे शब्दों में**- जिस समास में पूर्वपद तथा उत्तरपद- दोनों में से कोई भी पद प्रधान न होकर कोई अन्य पद ही प्रधान हो, वह बहुव्रीहि समास कहलाता है।

जैसे- दशानन- दस मुहवाला- रावण।

जिस समस्त-पद में कोई पद प्रधान नहीं होता, दोनों पद मिल कर किसी तीसरे पद की ओर संकेत करते है, उसमें बहुव्रीहि समास होता है। 'नीलकंठ', नीला है कंठ जिसका अर्थात शिव। यहाँ पर दोनों पदों ने मिल कर एक तीसरे पद 'शिव' का संकेत किया, इसलिए यह बहुव्रीहि समास है।

इस समास के समासगत पदों में कोई भी प्रधान नहीं होता, बल्कि पूरा समस्तपद ही किसी अन्य पद का विशेषण होता है।

समस्त-पद	**विग्रह**
प्रधानमंत्री	मंत्रियो में प्रधान है जो (प्रधानमंत्री)
पंकज	(पंक में पैदा हो जो (कमल)
अनहोनी	न होने वाली घटना (कोई विशेष घटना)
निशाचर	निशा में विचरण करने वाला (राक्षस)

KD Job Updates

समास

समस्त-पद	विग्रह
चौलड़ी	चार है लड़ियाँ जिसमे (माला)
विषधर	(विष को धारण करने वाला (सर्प)
मृगनयनी	मृग के समान नयन हैं जिसके अर्थात सुंदर स्त्री
त्रिलोचन	तीन लोचन हैं जिसके अर्थात शिव
महावीर	महान वीर है जो अर्थात हनुमान
सत्यप्रिय	सत्य प्रिय है जिसे अर्थात विशेष व्यक्ति

तत्पुरुष और बहुव्रीहि में अन्तर- तत्पुरुष और बहुव्रीहि में यह भेद है कि तत्पुरुष में प्रथम पद द्वितीय पद का विशेषण होता है, जबकि बहुव्रीहि में प्रथम और द्वितीय दोनों पद मिलकर अपने से अलग किसी तीसरे के विशेषण होते है।
जैसे- 'पीत अम्बर =पीताम्बर (पीला कपड़ा)' कर्मधारय तत्पुरुष है तो 'पीत है अम्बर जिसका वह- पीताम्बर (विष्णु)' बहुव्रीहि। इस प्रकार, यह विग्रह के अन्तर से ही समझा जा सकता है कि कौन तत्पुरुष है और कौन बहुव्रीहि। विग्रह के अन्तर होने से समास का और उसके साथ ही अर्थ का भी अन्तर हो जाता है। 'पीताम्बर' का तत्पुरुष में विग्रह करने पर 'पीला कपड़ा' और बहुव्रीहि में विग्रह करने पर 'विष्णु' अर्थ होता है।

बहुव्रीहि समास के भेद--

बहुव्रीहि समास के चार भेद है-
(i) समानाधिकरणबहुव्रीहि
(ii) व्यधिकरणबहुव्रीहि

KD Job Updates

(iii) तुल्ययोगबहुव्रीहि
(iv) व्यतिहारबहुव्रीहि

(5)द्वन्द्व समास :-

- जिस समस्त-पद के दोनों पद प्रधान हो तथा विग्रह करने पर 'और', 'अथवा', 'या', 'एवं' लगता हो वह द्वन्द्व समास कहलाता है।

समस्त-पद	विग्रह
रात-दिन	रात और दिन
सुख-दुख	सुख और दुख
दाल-चावल	दाल और चावल
भाई-बहन	भाई और बहन
माता-पिता	माता और पिता
ऊपर-नीचे	ऊपर और नीचे
गंगा-यमुना	गंगा और यमुना
दूध-दही	दूध और दही
आयात-निर्यात	आयात और निर्यात
देश-विदेश	देश और विदेश

KD Job Updates

समास

समस्त-पद	विग्रह
आना-जाना	आना और जाना
राजा-रंक	राजा और रंक

पहचान : दोनों पदों के बीच प्रायः योजक चिह्न (Hyphen (-) का प्रयोग होता है।

द्वन्द्व समास में सभी पद प्रधान होते है। द्वन्द्व और तत्पुरुष से बने पदों का लिंग अन्तिम शब्द के अनुसार होता है।

द्वन्द्व समास के भेद--

द्वन्द्व समास के तीन भेद है-
(i) इतरेतर द्वन्द्व
(ii) समाहार द्वन्द्व
(iii) वैकल्पिक द्वन्द्व

KD Job Updates

(6) अव्ययीभाव समास:-

- अव्ययीभाव का लक्षण है- जिसमे पूर्वपद की प्रधानता हो और सामासिक या समास पद अव्यय हो जाय, उसे अव्ययीभाव समास कहते है।
- **सरल शब्दो में-** जिस समास का पहला पद (पूर्वपद) अव्यय तथा प्रधान हो, उसे अव्ययीभाव समास कहते है।

इस समास में समूचा पद क्रियाविशेषण अव्यय हो जाता है। इसमें पहला पद उपसर्ग आदि जाति का अव्यय होता है और वही प्रधान होता है। जैसे- प्रतिदिन, यथासम्भव, यथाशक्ति, बेकाम, भरसक इत्यादि।

अव्ययीभाववाले पदों का विग्रह- ऐसे समस्तपदों को तोड़ने में, अर्थात उनका विग्रह करने में हिन्दी में बड़ी कठिनाई होती है, विशेषतः संस्कृत के समस्त पदों का विग्रह करने में

हिन्दी में जिन समस्त पदों में द्विरुक्तिमात्र होती है, वहाँ विग्रह करने में केवल दोनों पदों को अलग कर दिया जाता है।

जैसे- प्रतिदिन- दिन-दिन
यथाविधि- विधि के अनुसार
यथाक्रम- क्रम के अनुसार
यथाशक्ति- शक्ति के अनुसार
बेखटके- बिना खटके के
बेखबर- बिना खबर के
रातोंरात- रात ही रात में
कानोंकान- कान ही कान में
भुखमरा- भूख से मरा हुआ
आजन्म- जन्म से लेकर

पूर्वपद-अव्यय	**+**	**उत्तरपद**	**=**	**समस्त-पद**	**विग्रह**
प्रति	+	दिन	=	प्रतिदिन	प्रत्येक दिन
आ	+	जन्म	=	आजन्म	जन्म से लेकर
यथा	+	संभव	=	यथासंभव	जैसा संभव हो
अनु	+	रूप	=	अनुरूप	रूप के योग्य
भर	+	पेट	=	भरपेट	पेट भर के
हाथ	+	हाथ	=	हाथों-हाथ	हाथ ही हाथ में

अव्ययीभाव समास की पहचान के लक्षण:- अव्ययीभाव समास को पहचानने के लिए निम्नलिखित विधियाँ अपनायी जा सकती हैं-

KD Job Updates

समास

(i) यदि समस्तपद के आरंभ में भर, निर्, प्रति, यथा, बे, आ, ब, उप, यावत्, अधि, अनु आदि उपसर्ग/अव्यय हों। जैसे-
यथाशक्ति, प्रत्येक, उपकूल, निर्विवाद अनुरूप, आजीवन आदि।

(ii) यदि समस्तपद वाक्य में क्रियाविशेषण का काम करे। जैसे-
उसने भरपेट (क्रियाविशेषण) खाया (क्रिया)

(7)नञ समास:-

जिस समास में पहला पद निषेधात्मक हो उसे नञ तत्पुरुष समास कहते हैं। इसमे नहीं का बोध होता है।

इस समास का पहला पद 'नञ' (अर्थात नकारात्मक) होता है। समास में यह नञ 'अन, अ,' रूप में पाया जाता है। कभी-कभी यह 'न' रूप में भी पाया जाता है।
जैसे- **(संस्कृत)** न भाव=अभाव, न धर्म=अधर्म, न न्याय= अन्याय, न योग्य= अयोग्य

समस्त-पद	**विग्रह**
अनाचार	न आचार
अनदेखा	न देखा हुआ
अन्याय	न न्याय
अनभिज्ञ	न अभिज्ञ
नालायक	नहीं लायक
अचल	न चल

KD Job Updates

समस्त-पद	विग्रह
नास्तिक	न आस्तिक
अनुचित	न उचित

KD Job Updates

संधि

Sandhi (Seam)-संधि

संधि (Seam)की परिभाषा

- दो वर्णों (स्वर या व्यंजन) के मेल से होने वाले विकार को संधि कहते हैं।
- **दूसरे अर्थ में-** संधि का सामान्य अर्थ है मेल। इसमें दो अक्षर मिलने से तीसरे शब्द की रचना होती है, इसी को संधि कहते हैं।
- **सरल शब्दों में-** दो शब्दों या शब्दांशों के मिलने से नया शब्द बनने पर उनके निकटवर्ती वर्णों में होने वाले परिवर्तन या विकार को संधि कहते हैं।

संधि का शाब्दिक अर्थ है- मेल या समझौता। जब दो वर्णों का मिलन अत्यन्त निकटता के कारण होता है तब उनमें कोई-न-कोई परिवर्तन होता है और वही परिवर्तन संधि के नाम से जाना जाता है।

- **संधि विच्छेद-** उन पदों को मूल रूप में पृथक कर देना संधि विच्छेद है।
  जैसे- हिम + आलय= हिमालय (यह संधि है), अत्यधिक= अति + अधिक (यह संधि विच्छेद है)
- यथा + उचित= यथोचित
- यशः + इच्छा= यशइच्छ
- अखि + ईश्वर= अखिलेश्वर
- आत्मा + उत्सर्ग= आत्मोत्सर्ग
- महा + ऋषि= महर्षि
- लोक + उक्ति= लोकोक्ति

KD Job Updates

संधि निरथर्क अक्षरों मिलकर सार्थक शब्द बनती है। संधि में प्रायः शब्द का रूप छोटा हो जाता है। संधि संस्कृत का शब्द है।

संधि के भेद

वर्णों के आधार पर संधि के तीन भेद है-

(1)स्वर संधि (vowel sandhi)

(2)व्यंजन संधि (Combination of Consonants)

(3)विसर्ग संधि (Combination Of Visarga)

(1)स्वर संधि (vowel sandhi) :-

- दो स्वरों से उत्पत्र विकार अथवा रूप-परिवर्तन को स्वर संधि कहते है।
- **दूसरे शब्दों में-** "स्वर वर्ण के साथ स्वर वर्ण के मेल से जो विकार उत्पत्र होता है, उसे 'स्वर संधि' कहते हैं।"

जैसे- विद्या + अर्थी = विद्यार्थी, सूर्य + उदय = सूर्योदय, मुनि + इंद्र = मुनीन्द्र, कवि + ईश्वर = कवीश्वर,
महा + ईश = महेश

इनके पाँच भेद होते है -

(i)दीर्घ संधि

(ii)गुण संधि

(iii)वृद्धि संधि

(iv)यण संधि

(v)अयादी संधि

(2)व्यंजन संधि (Combination of Consonants) :-

- व्यंजन से स्वर अथवा व्यंजन के मेल से उत्पत्र विकार को व्यंजन संधि कहते है।
- **दूसरे शब्दों में-** एक व्यंजन के दूसरे व्यंजन या स्वर से मेल को व्यंजन-संधि कहते हैं।

कुछ नियम इस प्रकार हैं-

KD Job Updates

संधि

(1) यदि 'म्' के बाद कोई व्यंजन वर्ण आये तो 'म्' का अनुस्वार हो जाता है या वह बादवाले वर्ग के पंचम वर्ण में भी बदल सकता है।
जैसे- अहम् + कार =अहंकार
पम् + चम =पंचम
सम् + गम =संगम

(2) यदि 'त्-द्' के बाद 'ल' रहे तो 'त्-द्' 'ल्' में बदल जाते है और 'न्' के बाद 'ल' रहे तो 'न्' का अनुनासिक के बाद 'ल्' हो जाता है।
जैसे- उत् + लास =उल्लास
महान् + लाभ =महांल्लाभ

(3) किसी वर्ग के पहले वर्ण ('क्', 'च्', 'ट्', 'त्', 'प') का मेल किसी स्वर या वर्ग के तीसरे, चौथे वर्ण या र ल व में से किसी वर्ण से हो तो वर्ण का पहला वर्ण स्वयं ही तीसरे वर्ण में परिवर्तित हो जाता है। यथा-

दिक् + गज =दिग्गज (वर्ग के तीसरे वर्ण से संधि)
षट् + आनन =षडानन (किसी स्वर से संधि)
षट् + रिपु =षड्रिपु (र से संधि)

अन्य उदाहरण
जगत् + ईश =जगतदीश
तत् + अनुसार =तदनुसार
वाक् + दान =वाग्दान
दिक् + दर्शन =दिग्दर्शन
वाक् + जाल =वगजाल
अप् + इन्धन =अबिन्धन
तत् + रूप =तद्रूप

(4) यदि 'क्', 'च्', 'ट्', 'त्', 'प', के बाद 'न' या 'म' आये, तो क्, च्, ट्, त्, प, अपने वर्ग के पंचम वर्ण में बदल जाते हैं। जैसे-

KD Job Updates

वाक्+मय =वाङ्मय
अप् +मय =अम्मय
षट्+मार्ग =षणमार्ग
जगत् +नाथ=जगन्नाथ
उत् +नति =उन्नति
षट् +मास =षण्मास

(5) सकार और तवर्ग का शकार और चवर्ग के योग में शकार और चवर्ग तथा षकार और टवर्ग के योग में षकार और टवर्ग हो जाता है। जैसे-

स्+श	रामस् +शेते =रामश्शेते
त्+च	सत् +चित् =सच्चित्
त्+छ	महत् +छात्र =महच्छत्र
त् +ण	महत् +णकार =महण्णकार
ष्+त	द्रष् +ता =द्रष्टा
त्+ट	बृहत् +टिट्टिभ=बृहटिट्टिभ

(6) यदि वर्गों के अन्तिम वर्णों को छोड़ शेष वर्णों के बाद 'ह' आये, तो 'ह' पूर्ववर्ण के वर्ग का चतुर्थ वर्ण हो जाता है और 'ह्' के पूर्ववाला वर्ण अपने वर्ग का तृतीय वर्ण।
जैसे-

उत्+हत =उद्धत
उत्+हार =उद्धार
वाक् +हरि =वाग्घरि

KD Job Updates

संधि

(7) स्वर के साथ छ का मेल होने पर छ के स्थान पर 'च्छ' हो जाता है।
जैसे-

परि + छेद= परिच्छेद
शाला + छादन= शालाच्छादन
आ + छादन= आच्छादन

(8) त् या द् का मेल च या छ से होने पर त् या द् के स्थान पर च् होता है; ज या झ से होने पर ज्; ट या ठ से होने पर ट्; ड या ढ से होने पर ड् और ल होने पर ल् होता है।
उदाहरण-

जगत् + छाया =जगच्छाया
उत् + चारण =उच्चारण
सत् + जन =सज्जन
तत् + लीन =तल्लीन

(9) त् का मेल किसी स्वर, ग, घ, द, ध, ब, भ, र से होने पर त् के स्थान पर द् हो जाता है।
जैसे-

सत् + इच्छा =सदिच्छा
जगत् + ईश =जगदीश
तत् + रूप =तद्रूप
भगवत् + भक्ति =भगवद् भक्ति

(10) त् या द् का मेल श से होने पर त् या द् के स्थान पर च् और श के स्थान पर छ हो जाता है।
जैसे-

उत् + श्वास =उच्छवास
सत् + शास्त्र =सच्छास्त्र

KD Job Updates

(11) त् या द् का मेल ह से होने पर त् या द् के स्थान पर द् और ह से स्थान पर ध हो जाता है।
जैसे-

पद् + हति =पद्धति
उत् + हार =उद्धार

(12) म् का क से म तक किसी वर्ण से मेल होने पर म् के स्थान पर उस वर्ण वाले वर्ग का पाँचवाँ वर्ण हो जाएगा।
जैसे-

सम् + तुष्ट =सन्तुष्ट
सम् + योग =संयोग

(3)विसर्ग संधि (Combination Of Visarga) :-

- विसर्ग के साथ स्वर या व्यंजन मेल से जो विकार होता है, उसे 'विसर्ग संधि' कहते है।
- **दूसरे शब्दों में**- स्वर और व्यंजन के मेल से विसर्ग में जो विसर्ग होता है, उसे 'विसर्ग संधि' कहते है।
  इसे हम ऐसे भी कह सकते हैं- विसर्ग (:) के साथ जब किसी स्वर अथवा व्यंजन का मेल होता है, तो उसे विसर्ग-संधि कहते हैं।

KD Job Updates

कुछ नियम इस प्रकार हैं-

(1) यदि विसर्ग के पहले 'अ' आये और उसके बाद वर्ग का तृतीय, चतुर्थ या पंचम वर्ण आये या य, र, ल, व, ह रहे तो विसर्ग का 'उ' हो जाता है और यह 'उ' पूर्ववर्ती 'अ' से मिलकर गुणसन्धि द्वारा 'ओ' हो जाता है।
जैसे-

मनः + रथ =मनोरथ
सरः + ज =सरोज
मनः + भाव =मनोभाव

संधि

पयः + द =पयोद
मनः + विकार = मनोविकार
पयः + धर =पयोधर
मनः + हर =मनोहर
वयः + वृद्ध =वयोवृद्ध
यशः + धरा =यशोधरा
सरः + वर =सरोवर
तेजः + मय =तेजोमय
यशः + दा =यशोदा
पुरः + हित =पुरोहित
मनः + योग =मनोयोग

(2) यदि विसर्ग के पहले इ या उ आये और विसर्ग के बाद का वर्ण क, ख, प, फ हो, तो विसर्ग 'ष्' में बदल जाता है।
जैसे-

निः + कपट =निष्कपट
निः + फल =निष्फल
निः + पाप =निष्पाप
दुः + कर =दुष्कर

(3) विसर्ग से पूर्व अ, आ तथा बाद में क, ख या प, फ हो तो कोई परिवर्तन नहीं होता।
जैसे-

प्रातः + काल= प्रातःकाल
पयः + पान= पयःपान
अन्तः + करण= अन्तःकरण
अंतः + पुर= अंतःपुर

KD Job Updates

(4) यदि 'इ' - 'उ' के बाद विसर्ग हो और इसके बाद 'र' आये, तो 'इ' - 'उ' का 'ई' - 'ऊ' हो जाता है और विसर्ग लुप्त हो जाता है।
जैसे-

निः + रव =नीरव
निः + रस =नीरस
निः + रोग =नीरोग
दुः + राज =दूराज

(5) यदि विसर्ग के पहले 'अ' और 'आ' को छोड़कर कोई दूसरा स्वर आये और विसर्ग के बाद कोई स्वर हो या किसी वर्ग का तृतीय, चतुर्थ या पंचम वर्ण हो या य, र, ल, व, ह हो, तो विसर्ग के स्थान में 'र्' हो जाता है। जैसे-

निः + उपाय =निरुपाय
निः + झर =निर्झर
निः + जल =निर्जल
निः + धन =निर्धन
दुः + गन्ध =दुर्गन्ध
निः + गुण =निर्गुण
निः + विकार =निर्विकार
दुः + आत्मा =दुरात्मा
दुः + नीति =दुर्नीति
निः + मल =निर्मल

(6) यदि विसर्ग के बाद 'च-छ-श' हो तो विसर्ग का 'श्', 'ट-ठ-ष' हो तो 'ष्' और 'त-थ-स' हो तो 'स्' हो जाता है।
जैसे-

निः + चय=निश्चय
निः + छल =निश्छल
निः + तार =निस्तार

KD Job Updates

संधि

निः + सार =निस्सार
निः + शेष =निश्शेष
निः + ष्ठीव =निष्ष्ठीव

(7) यदि विसर्ग के आगे-पीछे 'अ' हो तो पहला 'अ' और विसर्ग मिलकर 'ओ' हो जाता है और विसर्ग के बादवाले 'अ' का लोप होता है तथा उसके स्थान पर लुप्ताकार का चिह्न (ऽ) लगा दिया जाता है।
जैसे-

प्रथमः + अध्याय =प्रथमोऽध्याय
मनः + अभिलषित =मनोऽभिलषित
यशः + अभिलाषी= यशोऽभिलाषी

(8) विसर्ग से पहले आ को छोड़कर किसी अन्य स्वर के होने पर और विसर्ग के बाद र रहने पर विसर्ग लुप्त हो जाता है और यदि उससे पहले ह्रस्व स्वर हो तो वह दीर्घ हो जाता है।
जैसे-

नि: + रस =नीरस
नि: + रोग =नीरोग

(9) विसर्ग के बाद श, ष, स होने पर या तो विसर्ग यथावत् रहता है या अपने से आगे वाला वर्ण हो जाता है।
जैसे-

नि: + संदेह =निःसंदेह अथवा निस्संदेह
नि: + सहाय =निःसहाय अथवा निस्सहाय

KD Job Updates

उपसर्ग (UPSARG)

परिभाषा, भेद और उदाहरण- UPSARG IN HINDI

उपसर्ग की परिभाषा

- संस्कृत एवं संस्कृत से उत्पन्न भाषाओं में उस अव्यय या शब्द को उपसर्ग (prefix) कहते हैं जो कुछ शब्दों के आरंभ में लगकर उनके अर्थों का विस्तार करता अथवा उनमें कोई विशेषता उत्पन्न करता है। उपसर्ग = उपसृज् (त्याग) + घञ्। जैसे - अ, अनु, अप, वि, आदि उपसर्ग है।

  or

  उपसर्ग = उप (समीप) + सर्ग (सृष्टि करना) इसका अर्थ है- किसी शब्द के समीप आ कर नया शब्द बनाना। जो शब्दांश शब्दों के आदि में जुड़ कर उनके अर्थ में कुछ विशेषता लाते हैं, वे उपसर्ग कहलाते हैं।

  'हार' शब्द का अर्थ है पराजय। परंतु इसी शब्द के आगे 'प्र' शब्दांश को जोड़ने से नया शब्द बनेगा - 'प्रहार' (प्र + हार) जिसका अर्थ है चोट करना।

KD Jon Updates

इसी तरह 'आ' जोड़ने से आहार (भोजन), 'सम्' जोड़ने से संहार (विनाश) तथा 'वि' जोड़ने से 'विहार' (घूमना) इत्यादि शब्द बन जाएँगे।

उपर्युक्त उदाहरण में 'प्र', 'आ', 'सम्' और 'वि' का अलग से कोई अर्थ नहीं है, 'हार' शब्द के आदि में जुड़ने से उसके अर्थ में इन्होंने परिवर्तन कर दिया है। इसका मतलब हुआ कि ये सभी शब्दांश हैं और ऐसे शब्दांशों को उपसर्ग कहते हैं।

हिन्दी में प्रचलित उपसर्गों को निम्नलिखित भागों में विभाजित किया जा सकता है।

1. संस्कृत के उपसर्ग
2. हिन्दी के उपसर्ग
3. उर्दू और फ़ारसी के उपसर्ग अंग्रेज़ी के उपसर्ग
4. उपसर्ग के समान प्रयुक्त होने वाले संस्कृत के अव्यय।

संस्कृत के उपसर्ग

संस्कृत में बाइस (22) उपसर्ग हैं। प्र, परा, अप, सम्, अनु, अव, निस्, निर्, दुस्, दुर्, वि, आ (आङ्), नि, अधि, अपि, अति, सु, उत् /उद्, अभि, प्रति, परि तथा उप।

उदाहरण

- अति - (आधिक्य) अतिशय, अतिरेक;
- अधि - (मुख्य) अधिपति, अध्यक्ष
- अधि - (वर) अध्ययन, अध्यापन
- अनु - (मागुन) अनुक्रम, अनुताप, अनुज;
- अनु - (प्रमाणें) अनुकरण, अनुमोदन.
- अप - (खालीं येणें) अपकर्ष, अपमान;
- अप - (विरुद्ध होणें) अपकार, अपजय.
- अपि - (आवरण) अपिधान = अच्छादन
- अभि - (अधिक) अभिनंदन, अभिलाप
- अभि - (जवळ) अभिमुख, अभिनय
- अभि - (पुढें) अभ्युत्थान, अभ्युदय.

KD Job Updates

उपसर्ग (UPSARG)

- अव - (खालीं) अवगणना, अवतरण;
- अव - (अभाव, विरूद्धता) अवकृपा, अवगुण.
- आ - (पासून, पर्यंत) आकंठ, आजन्म;
- आ - (किंचीत) आरक्त;
- आ - (उलट) आगमन, आदान;
- आ - (पलीकडे) आक्रमण, आकलन.
- उत् - (वर) उत्कर्ष, उत्तीर्ण, उद्भिज्ज
- उप - (जवळ) उपाध्यक्ष, उपदिशा;
- उप - (गौण) उपग्रह, उपवेद, उपनेत्र
- दुर्, दुस् - (वाईट) दुराशा, दुरुक्ति, दुश्चिन्ह, दुष्कृत्य.
- नि - (अत्यंत) निमग्न, निबंध
- नि - (नकार) निकामी, निजोर.
- निर् - (अभाव) निरंजन, निराषा
- निस् (अभाव) निष्फळ, निश्चल, नि:शेष.
- परा - (उलट) पराजय, पराभव
- परि - (पूर्ण) परिपाक, परिपूर्ण (व्याप्त), परिमित, परिश्रम, परिवार
- प्र - (आधिक्य) प्रकोप, प्रबल, प्रपिता
- प्रति - (उलट) प्रतिकूल, प्रतिच्छाया,
- प्रति - (एकेक) प्रतिदिन, प्रतिवर्ष, प्रत्येक
- वि - (विशेष) विख्यात, विनंती, विवाद
- वि - (अभाव) विफल, विधवा, विसंगति

KD Job Updates

- सम् - (चांगले) संस्कृत, संस्कार, संगीत,
- सम् - (बरोबर) संयम, संयोग, संकीर्ण.
- सु - (चांगले) सुभाषित, सुकृत, सुग्रास;
- सु - (सोपें) सुगम, सुकर, स्वल्प;
- सु - (अधिक) सुबोधित, सुशिक्षित.

कुछ शब्दों के पूर्व एक से अधिक उपसर्ग भी लग सकते हैं। जैसे -

- प्रति + अप + वाद = प्रत्यपवाद
- सम् + आ + लोचन = समालोचन
- वि + आ + करण = व्याकरण

हिन्दी के उपसर्ग

1. अ- अभाव, निषेध - अछूता, अथाह, अटल
2. अन- अभाव, निषेध - अनमोल, अनबन, अनपढ़
3. कु- बुरा - कुचाल, कुचैला, कुचक्र
4. दु- कम, बुरा - दुबला, दुलारा, दुधारू
5. नि- कमी - निगोड़ा, निडर, निहत्था, निकम्मा
6. औ- हीन, निषेध - औगुन, औघर, औसर, औसान
7. भर- पूरा - भरपेट, भरपूर, भरसक, भरमार
8. सु- अच्छा - सुडौल, सुजान, सुघड़, सुफल
9. अध- आधा - अधपका, अधकच्चा, अधमरा, अधकचरा

KD Job Updates

10. उन- एक कम - उनतीस, उनसठ, उनहत्तर, उंतालीस
11. पर- दूसरा, बाद का - परलोक, परोपकार, परसर्ग, परहित
12. बिन- बिना, निषेध - बिनब्याहा, बिनबादल, बिनपाए, बिनजाने

अरबी-फ़ारसी के उपसर्ग

1. कम- थोड़ा, हीन - कमज़ोर, कमबख़्त, कमअक्ल
2. खुश- अच्छा - खुशनसीब, खुशखबरी, खुशहाल, खुशबू
3. गैर- निषेध - गैरहाज़िर, गैरक़ानूनी, गैरमुल्क, गैर-ज़िम्मेदार
4. ना- अभाव - नापसंद, नासमझ, नाराज़, नालायक
5. ब- और, अनुसार - बनाम, बदौलत, बदस्तूर, बगैर
6. बा- सहित - बाकायदा, बाइज्ज़त, बाअदब, बामौका
7. बद- बुरा - बदमाश, बदनाम, बदक़िस्मत,बदबू
8. बे- बिना - बेईमान, बेइज्ज़त, बेचारा, बेवकूफ़
9. ला- रहित - लापरवाह, लाचार, लावारिस, लाजवाब
10. सर- मुख्य - सरताज, सरदार, सरपंच, सरकार
11. हम- समान, साथवाला - हमदर्दी, हमराह, हमउम्र, हमदम
12. हर- प्रत्येक - हरदिन, हरसाल, हरएक, हरबार

उपसर्ग के अन्य अर्थ:

- बुरा लक्षण या अपशगुन

KD Job Updates

- वह पदार्थ जो कोई पदार्थ बनाते समय बीच में संयोगवश बन जाता या निकल आता है (बाई प्राडक्ट)। जैसे-गुड़ बनाते समय जो शीरा निकलता है, वह गुड़ का उपसर्ग है।
- किसी प्रकार का उत्पात, उपद्रव या विघ्न
- योगियों की योगसाधना के बीच होनेवाले विघ्न को उपसर्ग कहते हैं।

मुनियों पर होनेवाले उक्त उपसर्गों के विस्तृत विवरण मिलते हैं। जैन साहित्य में विशेष रूप से इनका उल्लेख रहता है क्योंकि जैन धर्म के अनुसार साधना करते समय उपसर्गो का होना अनिवार्य है और केवल वे ही व्यक्ति अपनी साधना में सफल हो सकते हैं जो उक्त सभी उपसर्गों को अविचलित रहकर झेल लें। हिंदू धर्मकथाओं में भी साधना करनेवाले व्यक्तियों को अनेक विघ्नबाधाओं का सामना करना पड़ता है किंतु वहाँ उन्हें उपसर्ग की संज्ञा यदाकदा ही गई है।

KD Job Updates

एकार्थी शब्द

एकार्थी शब्द (One Word Substitution)

एकार्थी शब्द - अनेक शब्दों के लिए एक शब्द (One Word Substitution)

- यहाँ हम कुछ ऐसे शब्दों को जानेंगे जो भाषा को अधिक प्रभावशाली बना देते हैं। कहने का अभिप्राय यह है कि भाषा में बहुत से ऐसे वाक्य होते हैं जो किसी एक शब्द को दर्शाते हैं अर्थात हम उस वाक्य के स्थान पर पूरा वाक्य न लिख कर एक शब्द लिख कर अपनी भाषा को और अधिक प्रभावशाली बना सकते हैं।
- आसान तरीके से जानने के लिए पहले एकार्थी शब्द की परिभाषा को जान लेना आवश्यक है।

KD Job Updates

अनेक शब्दों के लिए एक शब्द की सूची--

यहाँ पर 120 शब्दों की एक सूची दी जा रही है जिससे आप एकार्थी शब्दों के बारे में अच्छी तरह समझ जाएँगे –

क्रमांक	**शब्द-समूह**	**एकार्थी शब्द**
1	अण्डे से जन्म लेने वाला	**अण्डज**
2	अपने देश से दूसरे देश में सामान जाना	**निर्यात**

3	दूसरे देश से अपने देश में सामान आना	**आयात**
4	अपनी हत्या स्वयं करना	**आत्महत्या**
5	अवसर के अनुसार बदल जाने वाला	**अवसरवादी**
6	आज्ञा का पालन करने वाला	**आज्ञाकारी**
7	आँखों के सामने	**प्रत्यक्ष**
8	आँखों से परे	**परोक्ष**
9	अचानक हो जाने वाला	**आकस्मिक**
10	आवश्यकता से अधिक वर्षा	**अतिवृष्टि**
11	अपने परिवार के साथ	**सपरिवार**

KD Job Updates

एकार्थी शब्द

12	अभिनय करने वाला पुरुष	**अभिनेता**
13	अभिनय करने वाली स्त्री	**अभिनेत्री**
14	अपने कर्तव्य का निर्णय न कर सकने वाला	**किंकर्तव्यविमूढ़**
15	अनुचित या बुरा आचरण करने वाला	**दुराचारी**
16	अपना हित चाहने वाला	**स्वार्थी**
17	अपनी इच्छा से दूसरों की सेवा करने वाला	**स्वयंसेवक**
18	अपने देश से प्यार करने वाला	**देशभक्त**
19	अपने देश के साथ विश्वासघात करने वाला	**देशद्रोही**
20	अविवाहित लड़की	**कुमारी**

KD Job Updates

21	अधः (नीचे) लिखा हुआ	**अधोलिखित**
22	ऊपर कहा हुआ	**उपर्युक्त**
23	आठ पदवाला	**अष्टपदी**
24	ईश्वर में आस्था रखने वाला	**आस्तिक**
25	ईश्वर पर विश्वास न रखने वाला	**नास्तिक**
26	इतिहास को जानने वाला	**इतिहासज्ञ**
27	उच्च न्यायालय का न्यायाधीश	**न्यायमूर्ति**
28	उपकार के प्रति किया गया उपकार	**प्रत्युपकार**
29	एक स्थान से दूसरे स्थान को हटाया हुआ	**स्थानान्तरित**

KD Job Updates

एकार्थी शब्द

30	एक भाषा की लिखी हुई बात को दूसरी भाषा में लिखना या कहना	**अनुवाद**
31	एक व्यक्ति द्वारा चलायी जाने वाली शासन प्रणाली	**तानाशाही**
32	एक राजनीतिक दल को छोड़कर दूसरे दल में शामिल होने वाला	**दलबदलू**
33	एक महीने में होने वाला	**मासिक**
34	एक सप्ताह में होने वाला	**साप्ताहिक**
35	कम जानने वाला	**अल्पज्ञ**
36	कम बोलनेवाला	**मितभाषी**
37	कम अक्लवाला	**अल्पबुद्धि**

KD Job Updates

38	किसी बात को बढ़ा-चढ़ाकर कहना	**अतिशयोक्ति**
39	किसी कार्यालय या विभाग का वह अधिकारी जो अपने अधीन कार्य करने वाले कर्मचारियों की निगरानी रखे	**अधीक्षक**
40	किसी कार्य को बार-बार करना	**अभ्यास**
41	किसी प्राणी को न मारना	**अहिंसा**
42	किसी के बाद उसकी संपत्ति प्राप्त करने वाला	**उत्तराधिकारी**
43	किसी के इर्द-गिर्द घेरा डालने की क्रिया	**घेराबन्दी**
44	किसी को सावधान करने के लिए कही जाने वाली बात	**चेतावनी**
45	कुछ जानने या ज्ञान प्राप्त करने की चाह	**जिज्ञासा**

KD Job Updates

एकार्थी शब्द

46	किराए पर चलनेवाली मोटर गाड़ी	**टैक्सी**
47	कोई काम या पद छोड़ देने के लिये लिखा गया पत्र	**त्यागपत्र**
48	चारों ओर जल से घिरा हुआ भू-भाग	**टापू**
49	जो अपने लाभ या स्वार्थ का ध्यान न रखता हो	**निःस्वार्थी**
50	जिसका जन्म अनु (बाद में) हुआ हो	**अनुज**
51	जिस स्त्री के कभी संतान न हुई हो	**वंध्या, बाँझ**
52	जिस पर विश्वास न किया जा सके	**अविश्वनीय**
53	जल में जन्म लेने वाला	**जलज**

KD Job Updates

54	जल में रहने वाले जीव-जन्तु	**जलचर**
55	पृथ्वी की वह शक्ति जो सभी चीजों की अपनी ओर खींचती हो	**गुरुत्वाकर्षण**
56	पति के छोटे भाई की स्त्री	**देवरानी**
57	पाप या अपराध करने पर दोषमुक्त होने के लिए किया जाने वाला धार्मिक या शुभ कार्य	**प्रायश्चित**
58	बच्चों को सुलाने के लिए गाया जाने वाला गीत	**लोरी**
59	रोगियों की चिकित्सा करने का स्थान	**चिकित्सालय**
60	हवा में मिली हुई धूल या भाप के कारण होने वाला अँधेरा	**धुन्ध**

KD Job Updates

एकार्थी शब्द

61	वह स्त्री जो पढ़ी-लिखी या ज्ञानी हो	**विदुषी**
62	जो सत्य बोलता हो	**सत्यवादी**
63	सबको प्रिय लगने वाला	**सर्वप्रिय**
64	पति/पत्नी का पिता	**श्वसुर**
65	पति/पत्नी की माता	**श्वश्रू (सास)**
66	रंगमंच पर पर्दे के पीछे का स्थान	**नेपथ्य**
67	मछली पकड़ कर आजीविका चलाने वाला	**धीवर**
68	जो शीघ्रता से चलता हो	**द्रुतगामी**
69	जहाँ धरती और आकाश मिलते हुए दिखाई देते हैं	**क्षितिज**

KD Job Updates

70	जिस लड़के का विवाह न हुआ हो	**कुमार**
71	भूत-वर्तमान-भविष्य को देखने (जानने) वाला	**त्रिकालदर्शी**
72	जिसे क्षमा न किया जा सके	**अक्षम्य**
73	जो स्मरण रखने योग्य है	**स्मरणीय**
74	जिसे कभी बुढ़ापा न आये	**अजर**
75	जिसका आकार न हो	**निराकार**
76	जहाँ पहुँचा न जा सके	**अगम, अगम्य**
77	जिसके कोई संतान न हो	**निसंतान**
78	जो कभी न मरे	**अमर**

KD Job Updates

एकार्थी शब्द

79	जिसका कोई मूल्य न हो	**अमूल्य**
80	जो वन में घूमता हो	**वनचर**
81	जो इस लोक से बाहर की बात हो	**अलौकिक**
82	जो इस लोक की बात हो	**लौकिक**
83	हित चाहने वाला	**हितैषी**
84	हाथ से लिखा हुआ	**हस्तलिखित**
85	सब कुछ जानने वाला	**सर्वज्ञ**
86	फल-फूल खाने वाला	**शाकाहारी**
87	माँस खाने वाला	**माँसाहारी**

KD Job Updates

88	फल-फूल और माँस दोनों को खाने वाला	**सर्वहारी**
89	जिसकी पत्नी मर गई हो	**विधुर**
90	मयूर की तरह आँखों वाली	**मयूराक्षी**
91	अत्यंत सुन्दर स्त्री	**रूपसी**
92	जो थोड़ी देर पहले पैदा हुआ हो	**नवजात**
93	नगर में वास करने वाला	**नागरिक**
94	गाँव में वास करने वाला	**ग्रामीण**
95	रात में घूमने वाला	**निशाचर**
96	तप करने वाला	**तपस्वी**

KD Job Updates

एकार्थी शब्द

97	जो जन्म से अंधा हो	**जन्मांध**
98	जिसकी चार भुजाएँ हों	**चतुर्भुज**
99	जिसकी आठ भुजायें हों	**अष्टभुज**
100	आकाश में उड़ने वाला	**नभचर**
101	तेज बुद्धिवाला	**कुशाग्रबुद्धि**
102	जिसका कोई शत्रु ही न जन्मा हो	**अजातशत्रु**
103	जिसके समान कोई दूसरा न हो	**अद्वितीय**
104	दूर की सोचने वाला	**दूरदर्शी**
105	जिसका पति जीवित हो	**सधवा**

KD Job Updates

106	जिसके आने की तिथि न हो	**अतिथि**
107	विद्या की चाह रखने वाला	**विद्यार्थी**
108	हर दिन/प्रति दिन होने वाला	**प्रतिदिन**
109	पंद्रह दिन में एक बार होने वाला	**पाक्षिक**
110	साल में एक बार होने वाला	**वार्षिक**
111	जन्म से सौ वर्ष बीत जाने पर मनाया जाने वाला उत्सव	**जन्मशती**
112	सौ वर्षों का समाहार	**शताब्दी**
113	एक हजार वर्षों का समाहार	**सहस्राब्दी**

KD Job Updates

एकार्थी शब्द

114	जो जरायु (गर्भ की थैली) से जन्म लेता है	**जरायुज**
115	जो स्वेद (पसीने) से जन्म लेता हो	**स्वेदज**
116	जो किसी के बदले में कुछ बोलता है या कुछ करता है	**प्रतिनिधि**
117	जो आसानी से उपलब्ध हो	**सुलभ**
118	जो आसानी से उपलब्ध न हो	**दुर्लभ**
119	जो हो सकता है	**संभव**
120	जो नहीं हो सकता	**असंभव**

KD Job Updates

कारक (KARAK)

परिभाषा, भेद और उदाहरण : हिन्दी व्याकरण, KARAK IN HINDI

कारक क्या होता है?

- संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से वाक्य के अन्य शब्दों के साथ उसके सम्बन्ध का बोध होता है, उसे कारक कहते हैं। हिन्दी में आठ कारक होते हैं
- विभक्ति या परसर्ग-जिन प्रत्ययों से कारकों की स्थितियों का बोध होता है, उन्हें विभक्ति या परसर्ग कहते हैं।

(संस्कृत व्याकरण के कारक देखने के लिए Karak Prakaran पर क्लिक करें ।)

कारक के विभक्ति चिह्न या परसर्ग

कारक विभक्ति - संज्ञा अथवा सर्वनाम शब्दों के बाद 'ने, को, से, के लिए', आदि जो चिह्न लगते हैं वे चिह्न कारक 'विभक्ति' कहलाते हैं। अथवा - व्याकरण में शब्द (संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण) के आगे लगा हुआ वह प्रत्यय या चिह्न विभक्ति कहलाता है जिससे पता लगता है कि उस शब्द का क्रियापद से क्या संबंध है।

KD Job Updates

कारक के उदाहरण

- राम ने रावण को बाण मारा।
- रोहन ने पत्र लिखा।
- मोहन ने कुत्ते को डंडा मारा।

कारक चिह्न स्मरण करने के लिए इस पद की रचना की गई हैं-

कर्ता ने अरु कर्म को, करण रीति से जान।
संप्रदान को, के लिए, अपादान से मान।।
का, के, की, संबंध हैं, अधिकरणादिक में मान।
रे ! हे ! हो ! संबोधन, मित्र धरहु यह ध्यान।।

विशेष - कर्ता से अधिकरण तक विभक्ति चिह्न (परसर्ग) शब्दों के अंत में लगाए जाते हैं, किन्तु संबोधन कारक के चिह्न-हे, रे, आदि प्रायः शब्द से पूर्व लगाए जाते हैं।

कारक के भेद

क्रम	कारक	चिह्न	अर्थ
1	कर्ता	ने	काम करने वाला
2	कर्म	को	जिस पर काम का प्रभाव पड़े
3	करण	से, द्वारा	जिसके द्वारा कर्ता काम करें
4	सम्प्रदान	को,के लिए	जिसके लिए क्रिया की जाए
5	अपादान	से (अलग होना)	जिससे अलगाव हो
6	सम्बन्ध	का, की, के; ना, नी, ने; रा, री, रे	अन्य पदों से सम्बन्ध
7	अधिकरण	में,पर	क्रिया का आधार
8	संबोधन	हे! अरे! अजी!	किसी को पुकारना, बुलाना

KD Job Updates

कारक

1. कर्ता कारक

जिस रूप से क्रिया (कार्य) के करने वाले का बोध होता है वह कर्ता कारक कहलाता है। इसका विभक्ति-चिह्न 'ने' है। इस 'ने' चिह्न का वर्तमानकाल और भविष्यकाल में प्रयोग नहीं होता है। इसका सकर्मक धातुओं के साथ भूतकाल में प्रयोग होता है। *or* जो वाक्य में कार्य करता है उसे कर्ता कहा जाता है। अथार्त वाक्य के जिस रूप से क्रिया को करने वाले का पता चले उसे कर्ता कहते हैं। कर्ता कारक की विभक्ति ने होती है। ने विभक्ति का प्रयोग भूतकाल की क्रिया में किया जाता है। कर्ता स्वतंत्र होता है। कर्ता कारक में ने विभक्ति का लोप भी होता है। इस पद को संज्ञा या सर्वनाम माना जाता है। हम प्रश्नवाचक शब्दों के प्रयोग से भी कर्ता का पता लगा सकते हैं। संस्कृत का कर्ता ही हिंदी का कर्ताकारक होता है। कर्ता की ने विभक्ति का प्रयोग ज्यादातर पश्चिमी हिंदी में होता है। ने का प्रयोग केवल हिंदी और उर्दू में ही होता है। जैसे-

- राम ने रावण को मारा।
- लड़की स्कूल जाती है।

पहले वाक्य में क्रिया का कर्ता राम है। इसमें 'ने' कर्ता कारक का विभक्ति-चिह्न है। इस वाक्य में 'मारा' भूतकाल की क्रिया है। 'ने' का प्रयोग प्रायः भूतकाल में होता है। दूसरे वाक्य में वर्तमानकाल की क्रिया का कर्ता लड़की है। इसमें 'ने' विभक्ति का प्रयोग नहीं हुआ है। विशेष-

- भूतकाल में अकर्मक क्रिया के कर्ता के साथ भी ने परसर्ग (विभक्ति चिह्न) नहीं लगता है। जैसे-वह हँसा।
- वर्तमानकाल व भविष्यतकाल की सकर्मक क्रिया के कर्ता के साथ ने परसर्ग का प्रयोग नहीं होता है।
- जैसे- वह फल खाता है।, वह फल खाएगा।

KD Job Updates

- कभी-कभी कर्ता के साथ 'को' तथा 'स' का प्रयोग भी किया जाता है। जैसे- बालक को सो जाना चाहिए।, सीता से पुस्तक पढ़ी गई।, रोगी से चला भी नहीं जाता।, उससे शब्द लिखा नहीं गया।

कर्ता कारक का प्रयोग

1. परसर्ग सहित
2. परसर्ग रहित

1. परसर्ग सहित :

- भूतकाल की सकर्मक क्रिया में कर्ता के साथ ने परसर्ग लगाया जाता है। जैसे :- राम ने पुस्तक पढ़ी।
- प्रेरणार्थक क्रियाओं के साथ ने का प्रयोग किया जाता हैं। जैसे :- मैंने उसे पढ़ाया।
- जब संयुक्त क्रिया के दोनों खण्ड सकर्मक होते हैं तो कर्ता के आगे ने का प्रयोग किया जाता है। जैसे :- श्याम ने उत्तर कह दिया।

2. परसर्ग रहित :

- भूतकाल की अकर्मक क्रिया में परसर्ग का प्रयोग नहीं किया जाता है। जैसे :- राम गिरा।
- वर्तमान और भविष्यकाल में परसर्ग नहीं लगता। जैसे :- बालक लिखता है।
- जिन वाक्यों में लगना , जाना , सकना , चूकना आदि आते हैं वहाँ पर ने का प्रयोग नहीं किया जाता हैं। जैसे :- उसे पटना जाना है।

कर्ता कारक में को का प्रयोग

विधि क्रिया और संभाव्य बहुत में कर्ता प्राय: को के साथ आता है। जैसे:- राम को जाना चाहिए।

2. कर्म कारक

KD Job Updates

कारक

क्रिया के कार्य का फल जिस पर पड़ता है, वह कर्म कारक कहलाता है। इसका विभक्ति-चिह्न 'को' है। यह चिह्न भी बहुत-से स्थानों पर नहीं लगता। बुलाना , सुलाना , कोसना , पुकारना , जमाना , भगाना आदि क्रियाओं के प्रयोग में अगर कर्म संज्ञा हो तो को विभक्ति जरुर लगती है। जब विशेषण का प्रयोग संज्ञा की तरह किया जाता है तब कर्म विभक्ति को जरुर लगती है। कर्म संज्ञा का एक रूप होता है। जैसे-

- मोहन ने साँप को मारा।
- लड़की ने पत्र लिखा।

पहले वाक्य में 'मारने' की क्रिया का फल साँप पर पड़ा है। अतः साँप कर्म कारक है। इसके साथ परसर्ग 'को' लगा है। दूसरे वाक्य में 'लिखने' की क्रिया का फल पत्र पर पड़ा। अतः पत्र कर्म कारक है। इसमें कर्म कारक का विभक्ति चिह्न 'को' नहीं लगा।

कर्म कारक के अन्य उदाहरण:

- अध्यापक छात्र को पीटता है।
- सीता फल खाती है।
- ममता सितार बजा रही है।
- राम ने रावण को मारा।
- गोपाल ने राधा को बुलाया।
- मेरे द्वारा यह काम हुआ।
- कृष्ण ने कंस को मारा।
- राम को बुलाओ।
- बड़ों को सम्मान दो।
- माँ बच्चे को सुला रही है।
- उसने पत्र लिखा।

KD Job Updates

3. करण कारक

संज्ञा आदि शब्दों के जिस रूप से क्रिया के करने के साधन का बोध हो अर्थात् जिसकी सहायता से कार्य संपन्न हो वह करण कारक कहलाता है। इसके विभक्ति-चिह्न 'से' के 'द्वारा' है। जैसे-

- अर्जुन ने जयद्रथ को बाण से मारा।
- बालक गेंद से खेल रहे है।

पहले वाक्य में कर्ता अर्जुन ने मारने का कार्य 'बाण' से किया। अतः 'बाण से' करण कारक है। दूसरे वाक्य में कर्ता बालक खेलने का कार्य 'गेंद से' कर रहे हैं। अतः 'गेंद से' करण कारक है।

4. संप्रदान कारक

- संप्रदान का अर्थ है-देना। अर्थात कर्ता जिसके लिए कुछ कार्य करता है, अथवा जिसे कुछ देता है उसे व्यक्त करने वाले रूप को संप्रदान कारक कहते हैं। लेने वाले को संप्रदान कारक कहते हैं। इसके विभक्ति चिह्न 'के लिए' को हैं। इसको किसके लिए' प्रश्नवाचक शब्द लगाकर भी पहचाना जा सकता है। समान्य रूप से जिसे कुछ दिया जाता है या जिसके लिए कोई कार्य किया जाता है उसे सम्प्रदान कारक कहते हैं। जैसे -

- स्वास्थ्य के लिए सूर्य को नमस्कार करो।
- गुरुजी को फल दो।

इन दो वाक्यों में 'स्वास्थ्य के लिए' और 'गुरुजी को' संप्रदान कारक हैं।

संप्रदान कारक के अन्य उदाहरण:

- गरीबों को खाना दो।

KD Job Updates

- मेरे लिए दूध लेकर आओ।
- माँ बेटे के लिए सेब लायी।
- अमन ने श्याम को गाड़ी दी।
- मैं सूरज के लिए चाय बना रहा हूँ।
- मैं बाजार को जा रहा हूँ।
- भूखे के लिए रोटी लाओ।
- वे मेरे लिए उपहार लाये हैं।
- सोहन रमेश को पुस्तक देता है।
- भूखों को अन्न देना चाहिए।
- मोहन ब्राह्मण को दान देता है।

KD Job Updates

5. अपादान कारक

संज्ञा के जिस रूप से एक वस्तु का दूसरी से अलग होना पाया जाए वह अपादान कारक कहलाता है। इसका विभक्ति-चिह्न 'से' है। इसकी पहचान किससे जैसे' प्रश्नवाचक शब्द से भी की जा सकती है। जैसे-

- बच्चा छत से गिर पड़ा।
- संगीता घोड़े से गिर पड़ी।

इन दोनों वाक्यों में 'छत से' और घोड़े 'से' गिरने में अलग होना प्रकट होता है। अतः घोड़े से और छत से अपादान कारक हैं।

6. संबंध कारक

- शब्द के जिस रूप से किसी एक वस्तु का दूसरी वस्तु से संबंध प्रकट हो वह संबंध कारक कहलाता है। इसका विभक्ति चिह्न 'का', 'के', 'की', 'रा', 'रे', 'री' है। इसकी विभक्तियाँ संज्ञा , लिंग , वचन के अनुसार बदल जाती हैं। जैसे-

- यह राधेश्याम का बेटा है।
- यह कमला की गाय है।

इन दोनों वाक्यों में 'राधेश्याम का बेटे' से और 'कमला का' गाय से संबंध प्रकट हो रहा है। अतः यहाँ संबंध कारक है। जहाँ एक संज्ञा या सर्वनाम का सम्बन्ध दूसरी संज्ञा या सर्वनाम से सूचित होता है, वहाँ सम्बन्ध कारक होता है। इसके विभक्ति चिह्न का, की, के; रा, री, रे; ना, नी, ने हैं। जैसे-

- राम का लड़का, श्याम की लड़की, गीता के बच्चे।
- मेरा लड़का, मेरी लड़की, हमारे बच्चे।
- अपना लड़का, अपना लड़की, अपने लड़के।

7. अधिकरण कारक

- शब्द के जिस रूप से क्रिया के आधार का बोध होता है उसे अधिकरण कारक कहते हैं। इसके विभक्ति-चिह्न 'में', 'पर' हैं। भीतर , अंदर , ऊपर , बीच आदि शब्दों का प्रयोग इस कारक में किया जाता है। इसकी पहचान किसमें , किसपर , किस पे आदि प्रश्नवाचक शब्द लगाकर भी की जा सकती है। कहीं कहीं पर विभक्तियों का लोप होता है तो उनकी जगह पर किनारे , आसरे , दीनों , यहाँ , वहाँ , समय आदि पदों का प्रयोग किया जाता है। कभी कभी में के अर्थ में पर और पर के अर्थ में में लगा दिया जाता है। जैसे-

- भँवरा फूलों पर मँडरा रहा है।

KD Job Updates

- कमरे में टी.वी. रखा है।

इन दोनों वाक्यों में 'फूलों पर' और 'कमरे में' अधिकरण कारक है।

अधिकरण कारक के अन्य उदाहरण :

- हरी घर में है।
- पुस्तक मेज पर है।
- पानी में मछली रहती है।
- फ्रिज में सेब रखा है।
- कमरे के अंदर क्या है।
- कुर्सी आँगन के बीच बिछा दो।
- महल में दीपक जल रहा है।
- मुझमें शक्ति बहुत कम है।
- रमा ने पुस्तक मेज पर रखी।
- वह सुबह गंगा किनारे जाता है।
- कुरुक्षेत्र में महाभारत का युद्ध हुआ था।
- तुम्हारे घर पर चार आदमी है।
- उस कमरे में चार चोर हैं।

8. संबोधन कारक

- जिससे किसी को बुलाने अथवा सचेत करने का भाव प्रकट हो उसे संबोधन कारक कहते है और संबोधन चिह्न (!) लगाया जाता है। जैसे-

KD Job Updates

- अरे भैया ! क्यों रो रहे हो ?
- हे गोपाल ! यहाँ आओ।

इन वाक्यों में 'अरे भैया' और 'हे गोपाल' ! संबोधन कारक है।

कर्म कारक और सम्प्रदान कारक में अंतर :

- इन दोनों कारक में को विभक्ति का प्रयोग होता है। कर्म कारक में क्रिया के व्यापार का फल कर्म पर पड़ता है और सम्प्रदान कारक में देने के भाव में या उपकार के भाव में को का प्रयोग होता है। जैसे :-

- विकास ने सोहन को आम खिलाया।
- मोहन ने साँप को मारा।
- राजू ने रोगी को दवाई दी।
- स्वास्थ्य के लिए सूर्य को नमस्कार करो।

करण कारक और अपादान कारक में अंतर :

- करण और अपादान दोनों ही कारकों में से चिन्ह का प्रयोग होता है। परन्तु अर्थ के आधार पर दोनों में अंतर होता है। करण कारक में जहाँ पर से का प्रयोग साधन के लिए होता है वहीं पर अपादान कारक में अलग होने के लिए किया जाता है। कर्ता कार्य करने के लिए जिस साधन का प्रयोग करता है उसे करण कारक कहते हैं। लेकिन अपादान में अलगाव या दूर जाने का भाव निहित होता है। जैसे :-

- मैं कलम से लिखता हूँ।
- जेब से सिक्का गिरा।
- बालक गेंद से खेल रहे हैं।

KD Job Updates

- सुनीता घोड़े से गिर पड़ी।
- गंगा हिमालय से निकलती है।

विभक्तियों की प्रयोगिक विशेषताएं

1. विभक्तियाँ स्वतंत्र होती हैं और इनका अस्तित्व भी स्वतंत्र होता है। क्योंकि एक काम शब्दों का संबंध दिखाना है इस वजह से इनका अर्थ नहीं होता। जैसे :- ने , से आदि।
2. हिंदी की विभक्तियाँ विशेष रूप से सर्वनामों के साथ प्रयोग होकर विकार उत्पन्न करती हैं और उनसे मिल जाती हैं। जैसे :- मेरा , हमारा , उसे , उन्हें आदि।
3. विभक्तियों को संज्ञा या सर्वनाम के साथ प्रयोग किया जाता है। जैसे :- मोहन के घर से यह चीज आई है।

विभक्तियों का प्रयोग :

हिंदी व्याकरण में विभक्तियों के प्रयोग की विधि निश्चित होती हैं।

विभक्तियाँ दो तरह की होती हैं –

- विश्लिष्ट
- संश्लिष्ट

जो विभक्तियाँ संज्ञाओं के साथ आती हैं उन्हें विश्लिष्ट विभक्ति कहते हैं। लेकिन जो विभक्तियाँ सर्वनामों के साथ मिलकर बनी होती है उसे संश्लिष्ट विभक्ति कहते हैं। जैसे :- के लिए में दो विभक्तियाँ होती हैं इसमें पहला शब्द संश्लिष्ट होता है और दूसरा शब्द विश्लिष्ट होता है।

KD Job Updates

क्रिया (Kriya)

क्रिया की परिभाषा

- जिस शब्द अथवा शब्द-समूह के द्वारा किसी कार्य के होने अथवा किये जाने का बोध हो उसे क्रिया कहते हैं। जैसे-

- सीता '**नाच** रही है'।
- बच्चा दूध '**पी** रहा है'।
- सुरेश कॉलेज '**जा** रहा है'।
- शिवा जी बहुत 'वीर' थे।
- इनमें '**नाच रही है**', '**पी रहा है**', '**जा रहा है**' शब्दों से कार्य-व्यापार का बोध हो रहा हैं। इन सभी शब्दों से किसी कार्य के करने अथवा होने का बोध हो रहा है। अतः ये क्रियाएँ हैं।

- क्रिया सार्थक शब्दों के आठ भेदों में एक भेद है।
- व्याकरण में क्रिया एक **विकारी शब्द** है।
- क्रिया के भी कई रूप होते हैं, जो प्रत्यय और सहायक क्रियाओं द्वारा बदले जाते हैं। क्रिया के रूप से उसके विषय संज्ञा या सर्वनाम के लिंग और वचन का भी पता चल जात है। क्रिया वह विकारी शब्द है, जिससे किसी पदार्थ या प्राणी के विषय में कुछ विधान किया जाता है। अथवा जिस विकारी शब्द के प्रयोग से हम किसी वस्तु के विषय में कुछ विधान करते हैं, उसे क्रिया कहते हैं। जैसे-

- घोड़ा जाता है।
- पुस्तक मेज पर पड़ी है।
- मोहन खाना खाता है।
- राम स्कूल जाता है।

KD Job Updates

- उपर्युक्त वाक्यों में जाता है, पड़ी है और खाता है क्रियाएँ हैं।

धातु - हिन्दी व्याकरण

क्रिया का मूल रूप धातु कहलाता है।

क्रिया के साधारण रूपों के अंत में ना लगा रहता है जैसे-आना, जाना, पाना, खोना, खेलना, कूदना आदि। साधारण रूपों के अंत का ना निकाल देने से जो बाकी बचे उसे क्रिया की धातु कहते हैं। आना, जाना, पाना, खोना, खेलना, कूदना क्रियाओं में आ, जा, पा, खो, खेल, कूद धातुएँ हैं। शब्दकोश में क्रिया का जो रूप मिलता है उसमें धातु के साथ ना जुड़ा रहता है। ना हटा देने से धातु शेष रह जाती है।जैसे -

- लिख, पढ़, जा, खा, गा, रो, आदि। इन्हीं धातुओं से लिखता, पढ़ता, आदि क्रियाएँ बनती हैं।

धातु के भेद :

- धातु के दो भेद होते है -

1. मूल धातु ,
2. यौगिक धातु ।

१ - मूल धातु :

यह स्वतंत्र होती है तथा किसी अन्य शब्द पर निर्भर नहीं होती है।

मूल धातु के उदाहरण :

- जा, खा, पी, रह, आदि ।

KD Job Updates

क्रिया

२ - यौगिक धातु :

- यौगिक धातु मूल धातु मे प्रत्यय लगाकर, कई धातुओ को संयुक्त करके, अथवा संज्ञा और विशेषण मे प्रत्यय लगाकर बनाई जाती है ।

यौगिक धातु के उदाहरण :

- उठाना, उठवाना, दिलाना, दिलवाना, कराना, करवाना
- रोना-धोना, चलना-फिरना, खा-लेना, उठ-बैठना, उठ-जाना, खेलना-कूदना, आदि।
- बतियाना, गरमाना चिकनाना।

यौगिक धातुए तीन प्रकार की होती है -

1. प्रेरणार्थक क्रिया
2. यौगिक क्रिया
3. नाम धातु

१- प्रेरणार्थक क्रिया :

प्रेरणार्थक क्रियाए अकर्मक एवं सकर्मक दोनों क्रियाओ से बनती है । **आना** / **लाना** जोड़ने से **प्रथम प्रेरणार्थक** एवं **वाना** जोड़ने से **द्वातीय प्रेरणार्थक रूप** बनते है।

प्रेरणार्थक क्रिया के उदहारण-

मूल धातु - प्रेरणार्थक धातु

- उठ - ना - उठाना, उठवाना
- दे - ना - दिलाना, दिलवाना
- कर-ना - कराना, करवाना

KD Job Updates

- सो-ना - सुलाना, सुलवाना
- खा-ना - खिलाना, खिलवाना

२- यौगिक क्रिया :

- दो या दो से अधिक धातुओं के संयोग से यौगिक क्रिया बनती है।

यौगिक क्रिया के उदहारण :

- रोना-धोना, चलना-फिरना, खा-लेना, उठ-बैठना, उठ-जाना, खेलना-कूदना, आदि।

३- नाम धातु :

संज्ञा या विशेषण से बनने वाली धातु को नाम धातु क्रिया कहते है। जैसे - गरियाना, लतियाना, बतियाना, गरमाना, चिकनाना, ठण्डाना।

नाम धातु के उदहारण :

- गाली से गरियाना।
- लात से लतियाना।
- चिकना से चिकनाना।
- ठंड से ठण्डाना।

KD Job Updates

क्रिया के भेद :

- कर्म के अनुसार या रचना की दृष्टि से क्रिया के दो भेद हैं-

रचना की दृष्टि से क्रिया के भेद:

1. अकर्मक क्रिया।
2. सकर्मक क्रिया।
- अन्य - द्विकर्मक क्रिया

क्रिया

१- अकर्मक क्रिया:

- जिन क्रियाओं का असर कर्ता पर ही पड़ता है वे अकर्मक क्रिया कहलाती हैं। ऐसी अकर्मक क्रियाओं को कर्म की आवश्यकता नहीं होती।

अकर्मक क्रियाओं के उदाहरण :

- राकेश रोता है।
- साँप रेंगता है।
- बस चलती है।

कुछ अकर्मक क्रियाएँ :

- लजाना, होना, बढ़ना, सोना, खेलना, अकड़ना, डरना, बैठना, हँसना, उगना, जीना, दौड़ना, रोना, ठहरना, चमकना, डोलना, मरना, घटना, जागना, उछलना, कूदना

२- सकर्मक क्रिया

- जिन क्रियाओं का असर कर्ता पर नहीं कर्म पर पड़ता है, वह सकर्मक क्रिया कहलाती हैं। इन क्रियाओं में कर्म का होना आवश्यक होता हैं.

सकर्मक क्रिया के उदाहरण -

- मैं लेख लिखता हूँ।
- सुरेश मिठाई खाता है।
- मीरा फल लाती है।
- भँवरा फूलों का रस पीता है।

KD Job Updates

द्विकर्मक क्रिया

- जिन क्रियाओं के दो कर्म होते हैं, उन्हें द्विकर्मक क्रिया कहते हैं।

द्विकर्मक क्रिया के उदाहरण-

- मैंने राम को पुस्तक दी।
- श्याम ने राधा को रुपये दिए।
- ऊपर के वाक्यों में 'देना' क्रिया के दो कर्म हैं। अतः देना द्विकर्मक क्रिया हैं।

प्रयोग के आधार पर क्रिया के भेद-

अकर्मक क्रिया:

- जिस क्रिया से सूचित होने वाला व्यापार कर्ता करे और उसका फल भी कर्ता पर ही पड़े, उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं।

- जैसे- राम खाता है।

वाक्य में खाने का व्यापार राम से है और खाने का फल भी राम पर ही पड़ता है, इसलिए 'खाता है' अकर्मक क्रिया है।

अन्य उदाहरणः

- गीता गाती है।
- बच्चा खेलता है।
- श्याम हंसता है।
- कीड़ा बिलबिलाता है।
- कुत्ता भोंकता है।

KD Job Updates

क्रिया

अपूर्ण सकर्मक क्रिया:

- जिस क्रिया के पूर्ण अर्थ का बोध कराने के लिए कर्ता के अतिरिक्त अन्य संज्ञा या विशेषण की आवश्यकता पड़ती है, उसे अपूर्ण सकर्मक क्रिया कहते हैं। अपूर्ण सकर्मक क्रिया का अर्थ पूर्ण करने के लिए संज्ञा या विशेषण को जोड़ा जाता है, उसे पूर्ति कहते हैं।

- जैसे- गाँधी कहलाये।

- से अभीष्ट अर्थ की प्राप्ति नहीं होती। अर्थ समझने के लिए यदि पूछा जाय कि गाँधी क्या कहलाये? तो उत्तर होगा- गाँधी महात्मा कहलाये। इस प्रकार कहलाये अपूर्ण अकर्मक क्रिया का अर्थ महात्मा शब्द द्वारा स्पष्ट होता है। इस वाक्य में कहलाये अपूर्ण अकर्मक क्रिया और महात्मा शब्द पूर्ति है।

अन्य उदाहरण:

- मेरा भाई शिक्षक हो गया।
- सोना पीला होता है।
- साधु चोर निकला।
- वह मनुष्य बुद्धिमान है।
- जन्म ही जाति तय करता है।

उपर्युक्त वाक्यों में हो गया, होता है, निकला और है अपूर्ण अकर्मक क्रियाएँ हैं और शिक्षक, पीला, चोर और बुद्धिमान पूर्ति है।

सकर्मक क्रिया:

- जिस क्रिया से सूचित होने वाले व्यापार का फल कर्ता पर न पड़कर कर्म पर पड़े, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं।

- जैसे- श्याम पुस्तक पढ़ता है।

KD Job Updates

- वाक्य में पढ़ता है क्रिया का व्यापार श्याम करता है, किन्तु इस व्यापार का फल पुस्तक पर पड़ता है, इसलिए पढ़ता है सकर्मक क्रिया है और पुस्तक कर्म शब्द कर्म है।

अन्य उदाहरणः

- राम बाण मारता है।
- राधा मूर्ति बनाती है।
- नेता भाषण देता है।
- कुत्ता हड्डी चबाता है।
- लड़के क्रिकेट खेलते हैं।

उपर्युक्त वाक्यों में 'मारता है', 'बनाती है', 'देता है' और 'चबाता है' सकर्मक क्रियाएँ हैं और बाण, मूर्ति, भाषण और हड्डी शब्द कर्म हैं।

अपूर्ण अकर्मक क्रिया:

- जिस अकर्मक क्रिया का पूरा आशय स्पष्ट करने के लिए वाक्य में कर्म के साथ अन्य संज्ञा या विशेषण का पूर्ति के रूप में प्रयोग होता है, उसे अपूर्ण अकर्मक क्रिया कहते हैं।

- जैसे- राजा ने गंगाधर को मंत्री बनाया।

– वाक्य में बनाया अकर्मक क्रिया का कर्म गंगाधर है, किन्तु इतने मात्र से इस कर्म का आशय स्पष्ट नहीं होता। उसका आशय़ स्पष्ट करने के लिए उसके साथ मंत्री संज्ञा भी प्रयुक्त होती है। इस वाक्य में बनाया अपूर्ण अकर्मक क्रिया है, गंगाधर कर्म है और मंत्री शब्द कर्म-पूर्ति है।

उदाहरणः

- अध्यापक ने संतोष को वर्ग-प्रतिनिधि चुना।
- हम अपने मित्र को चतुर समझते हैं।
- हम प्रत्येक भारतीय को अपना मानते हैं।
- हम मानव सेवा को पुण्य मानते हैं।

KD Job Updates

क्रिया

उपर्युक्त वाक्यों में चुना, समझते हैं और मानते हैं अपूर्ण सकर्मक क्रियाएँ हैं। संतोष को, मित्र को और भारतीय को कर्म हैं और वर्ग-प्रतिनिधि, चतुर और अपना कर्म-पूर्ति है।

द्विकर्मक क्रिया:

- जिस सकर्मक क्रिया का अर्थ स्पष्ट करने के लिए वाक्य में दो कर्म प्रयुक्त होते हैं, उसे द्विकर्मक क्रिया कहते हैं। जैसे-शिक्षक ने विद्यार्थी को पुस्तक दी।– इस वाक्य में दी क्रिया के व्यापार का फल दो कर्मों- पुस्तक और विद्यार्थी पर पड़ता है, इसलिए दी वाक्य में द्विकर्मक क्रिया है। पुस्तक मुख्य कर्म और विद्यार्थी गौण कर्म है। द्विकर्मक क्रिया के साथ प्रयुक्त होने वाले दोनों कर्म में से मुख्य कर्म किसी पदार्थ का तो गौण कर्म किसी प्राणी का बोध कराता है। उदाहरणः

- राजा ने ब्राह्मण को दान दिया।
- राम लक्ष्मण को गणित सिखाता है।
- मालिक नौकर को पैसे देता है।
- पुलिस चोरों को पकड़ती है।

उपर्युक्त वाक्यों में दिया, सिखाता है और देता है द्विक्रमक क्रिया है। दान, गणित और पैसे मुख्य कर्म हैं तो ब्राह्मण को, लक्ष्मण को और नौकर को गौण कर्म।

रचना की दृष्टि से क्रिया के भेद :

रचना की दृष्टि से क्रिया दो प्रकार की होती है-

1. रूढ़
2. यौगिक

१- रूढ़ क्रियाः

- जिस क्रिया की रचना धातु से होती है, उसे रूढ़ कहते हैं।
  जैसे, लिखना, पढ़ना, खाना, पीना आदि।

KD Job Updates

२- यौगिक क्रियाः

- जिस क्रिया की रचना एक से अधिक तत्वों से होती है, उसे यौगिक क्रिया कहते हैं। जैसे- लिखवाना, आते जाते रहना, पढ़वाना, बताना, बड़बड़ाना आदि।

यौगिक क्रिया के भेदः

1. प्रेरणार्थक क्रिया।
2. संयुक्त क्रिया।
3. नामधातु क्रिया।
4. अनुकरणात्मक क्रिया।
5. प्रेरणार्थक क्रिया

इनके बारे में पहले ही बता दिया है।

KD Job Updates

लिंग (GENDER/LING)

लिंग - परिभाषा, भेद और उदाहरण - GENDER/LING IN HINDI

लिंग

- लिंग से तात्पर्य भाषा के ऐसे प्रावधानों से है जो वाक्य के कर्ता के स्त्री,पुरुष,निर्जीव होने के अनुसार बदल जाते हैं। विश्व की लगभग एक चौथाई भाषाओं में किसी न किसी प्रकार की लिंग व्यवस्था है।

  हिन्दी में दो लिंग होते हैं - पुल्लिंग तथा स्त्रीलिंग, जबकि संस्कृत में तीन लिंग होते हैं- पुल्लिंग, स्त्रीलिंग तथा नपुंसक लिंग। फ़ारसी जैसे भाषाओं में लिंग होता नहीं, और भी अंग्रेज़ी में लिंग सिर्फ़ सर्वनाम में होता है।
  उदाहरण

- मोहन पढ़ता है। -पढ़ता का रूप पुल्लिंग है, इसका स्त्रीलिंग रूप 'पढ़ती' है। -
- गीता गाती है। -यहाँ, 'गाती' का रूप स्त्रीलिंग है।

KD Job Updates

लिंग किसे कहते हैं (Definition of Gender)

- लिंग संस्कृत का शब्द होता है जिसका अर्थ होता है निशान। जिस संज्ञा शब्द से व्यक्ति की जाति का पता चलता है उसे लिंग कहते हैं। इससे यह पता चलता है की वह पुरुष जाति का है या स्त्री जाति का है।

उदाहरण के लिए :

- पुरुष जाति में = बैल , बकरा , मोर , मोहन , लड़का , हाथी , शेर , घोडा , दरवाजा , पंखा , कुत्ता , भवन , पिता , भाई आदि।

- स्त्री जाति में = गाय , बकरी , मोरनी , मोहिनी , लडकी , हथनी , शेरनी , घोड़ी , खिड़की , कुतिया , माता , बहन आदि।

लिंग के निर्माण में आई कठिनाई और उसका हल

- हिंदी में लिंग के निर्णय का आधार संस्कृत के नियम ही हैं। संस्कृत में हिंदी से अलग एक तीसरा लिंग भी है जिसे नपुंसकलिंग कहते हैं। नपुंसकलिंग में अप्राणीवाचक संज्ञाओं को रखा जाता है। हिंदी में अप्राणीवाचक संज्ञाओं के लिंग निर्णय में सबसे अधिक कठिनाई हिंदी न जानने वालों को होती है।
- जिनकी मातृभाषा हिंदी होती है उन्हें सहज व्यवहार के कारण लिंग निर्णय में परेशानी नहीं होती। लेकिन इनमें भी एक समस्या है की कुछ पुल्लिंग शब्दों के पर्यायवाची स्त्रीलिंग हैं और कुछ स्त्रीलिंग के पुल्लिंग। जैसे :- पुस्तक को स्त्रीलिंग कहते हैं और ग्रन्थ को पुल्लिंग।

हिंदी में लिंग

- व्याकरणाचार्य ने लिंग निर्णय के कुछ नियम बताये हैं लेकिन उन सभी में अपवाद है। लेकिन फिर भी लिंग निर्णय के कुछ नियम इस प्रकार है :-

1. जब प्राणीवाचक संज्ञा पुरुष जाति का बोध कराएँ तो वे पुल्लिंग होते हैं और जब स्त्रीलिंग का बोध कराएँ तो स्त्रीलिंग होती हैं।

जैसे :- कुत्ता , हाथी , शेर पुल्लिंग हैं और कुत्तिया , हथनी , शेरनी स्त्रीलिंग हैं।

2. कुछ प्राणीवाचक संज्ञा जब पुरुष और स्त्री दोनों लिंगों का बोध करती है तो वे नित्य पुल्लिंग में शामिल हो जाते हैं।

जैसे :- खरगोश , खटमल , गैंडा , भालू , उल्लु आदि।

3. कुछ प्राणीवाचक संज्ञा जब पुरुष और स्त्री दोनों का बोध करे तो वे नित्य स्त्रीलिंग में शामिल हो जाते हैं।

KD Job Updates

लिंग

जैसे :- कोमल , चील , तितली , छिपकली आदि।

लिंग के भेद

- संसार में तीन जातियाँ होती हैं – पुरुष ,स्त्री ,जड़। इन्ही जातियों के आधार पर लिंग के भेद बनाए गये हैं।

1. पुल्लिंग

2. स्त्रीलिंग

3. नपुंसकलिंग

1. पुल्लिंग क्या होता है

- जिन संज्ञा के शब्दों से पुरुष जाति का पता चलता है उसे पुल्लिंग कहते हैं।

जैसे :- पिता , राजा , घोडा , कुत्ता , बन्दर , हंस , बकरा , लडकी , आदमी, सेठ , मकान , लोहा , चश्मा , दुःख , प्रेम , लगाव , खटमल , फूल , नाटक , पर्वत , पेड़ , मुर्गा , बैल , भाई , शिव , हनुमान , शेर आदि।

KD Job Updates

पुल्लिंग अपवाद

पक्षी , फरवरी , एवरेस्ट , मोतिया , दिल्ली , स्त्रीत्व आदि।

पुल्लिंग की पहचान

1. जिन शब्दों के पीछे अ , त्व , आ , आव , पा , पन , न आदि प्रत्यय आये वे पुल्लिंग होते हैं।

जैसे :- मन , तन , वन , शेर , राम , कृष्ण , सतीत्व , देवत्व , मोटापा , चढ़ाव , बुढ़ापा , लडकपन , बचपन , लेन -देन आदि।

2. पर्वतों के नाम पुल्लिंग होते हैं ।

जैसे :- हिमालय , हिमाचल , विघ्यांच्ल , सतपुड़ा , आल्प्स , यूराल , कंचनजंगा , एवरेस्ट , फूजियामा , कैलाश , मलयाचल , माउन्ट एवरेस्ट आदि।

3. दिनों के नाम पुल्लिंग होते हैं :-

जैसे :- सोमवार , मंगलवार , बुद्धवार , वीरवार , शुक्रवार , शनिवार , रविवार आदि।

4. देशों के नाम पुल्लिंग होते हैं :-

जैसे :- भारत , चीन , ईरान , यूरान , रूस , जापान , अमेरिका , पाकिस्तान , उत्तर प्रदेश , हिमाचल , मध्य प्रदेश आदि।

5. धातुओं के नाम पुल्लिंग होते हैं :-

जैसे :- सोना , ताम्बा , पीतल , लोहा ,चाँदी , पारा आदि।

6. नक्षत्रों के नाम पुल्लिंग होते हैं :-

जैसे :- सूर्य , चन्द्र , राहू , आकाश , शनि , बुद्ध , बृहस्पति , मंगल , शुक्र आदि।

7. महीनों के नाम पुल्लिंग होते हैं।

जैसे :- फरवरी , मार्च , चैत , आषाढ़ , फागुन आदि।

KD Job Updates

लिंग

8. द्रवों के नाम पुल्लिंग होते हैं।

जैसे :- पानी , तेल , पेट्रोल , घी , शरबत , दही , दूध आदि।

9. पेड़ों के नाम पुल्लिंग होते हैं।

जैसे :- केला , पपीता , शीशम , सागौन , जामुन , बरगद , पीपल , नीम , आम , अमरुद , देवदार , अनार , अशोक , पलाश आदि।

10. सागर के नाम पुल्लिंग होते हैं।

जैसे :- हिन्द महासागर , प्रशांत महासागर , अरब महासागर आदि।

11. समय के नाम पुल्लिंग होते हैं।

जैसे :- घंटा , पल , क्षण , मिनट , सेकेंड आदि।

12. अनाजों के नाम भी पुल्लिंग होते हैं।

जैसे :- गेंहूँ , बाजरा , चना , जौ आदि।

13. वर्णमाला के अक्षरों के नाम पुल्लिंग होते हैं।

जैसे :- अ , उ , ए , ओ , क , ख , ग , घ , च , छ , य , र , ल , व् , श आदि।

14. प्राणीवाचक शब्द हमेशा पुरुष जाति का ही बोध करते हैं।

जैसे :- बालक , गीदड़ , कौआ , कवि , साधु , खटमल , भेडिया , खरगोश , चीता , मच्छर , पक्षी आदि।

KD Job Updates

15. समूह वाचक संज्ञा भी पुल्लिंग होती है।

जैसे :- मण्डल , समाज , दल , समूह , सभा , वर्ग , पंचायत आदि।

16. भारी और बेडौल वस्तु भी पुल्लिंग होती हैं।

जैसे :- जूता , रस्सा , पहाड़ , लोटा आदि।

17. रत्नों के नाम भी पुल्लिंग होते हैं।

जैसे :- नीलम , पुखराज , मूँगा , माणिक्य , पन्ना , मोती , हीरा आदि।

18. फूलों के नाम पुल्लिंग होते हैं।

जैसे :- गेंदा , मोतिया , कमल , गुलाब आदि।

19. द्वीप भी पुल्लिंग होते हैं।

जैसे :- अंडमान -निकोबार , जावा , क्यूबा , न्यू फाउंलैंड आदि।

20. शरीर के अंग पुल्लिंग होते हैं।

जैसे :-हाथ , पैर , गला , अंगूठा , कान , सिर , मुंह , घुटना , हृदय , दांत , मस्तक आदि।

21. दान , खाना , वाला से खत्म होने वाले शब्द हमेशा पुल्लिंग होते हैं।

जैसे :- खानदान , पीकदान , दवाखाना , जेलखाना , दूधवाला , दुकानवाला आदि।

KD Job Updates

22. आकारान्त संज्ञा पुल्लिंग होती है।

जैसे :- गुस्सा , चश्मा , पैसा , छाता आदि।

2. स्त्रीलिंग क्या होता है

- जिन संज्ञा शब्दों से स्त्री जाति का पता चलता है उसे स्त्रीलिंग कहते हैं ।

जैसे :- हंसिनी , लडकी , बकरी , माता , रानी , जूं , सुईं , गर्दन , लज्जा , बनावट , घोड़ी , कुतिया , बंदरिया , कुर्सी , पत्ती , नदी , शाखा , मुर्गी , गाय , बहन , यमुना , बुआ , लक्ष्मी , गंगा , लडकी , औरत , शेरनी , नारी , झोंपड़ी , लोमड़ी आदि ।

स्त्रीलिंग के अपवाद

जैसे :- जनवरी , मई , जुलाई , पृथ्वी , मक्खी , ज्वार , अरहर , मूंग , चाय , काफी , लस्सी , चटनी , इ , ई , ऋ , जीभ , आँख , नाक , उँगलियाँ , सभा , कक्षा , संतान , प्रथम , तिथि , छाया , खटास , मिठास , आदि ।

स्त्रीलिंग प्रत्यय

- जब पुल्लिंग शब्दों को स्त्रीलिंग बनाया जाता है तब प्रत्ययों को शब्दों में जोड़ा जाता है जिन्हें स्त्रीलिंग प्रत्यय कहते हैं । जैसे :-

ई = बड़ा – बड़ी , भला – भली आदि ।

इनी = योगी – योगिनी , कमल – कमलिनी आदि ।

इन = धोबी – धोबिन , तेल – तेली आदि ।

नि = मोर – मोरनी , चोर – चोरनी आदि ।

आनी = जेठ – जेठानी , देवर – देवरानी आदि ।

आइन = ठाकुर – ठकुराइन , पंडित – पण्डिताइन आदि ।

इया = बेटा – बिटिया , लोटा – लुटिया आदि ।

KD Job Updates

स्त्रीलिंग की पहचान

1. जिन संज्ञा शब्दों के पीछे ख , ट , वट , हट , आनी आदि आयें वे सभी स्त्रीलिंग होते हैं ।

जैसे :- कडवाहट , आहट , बनावट , शत्रुता , मूर्खता , मिठाई , छाया , प्यास , ईख , भूख , चोख , राख , कोख , लाख , देखरेख , झंझट , आहट , चिकनाहट , सजावट , इन्द्राणी , जेठानी , ठकुरानी , राजस्थानी आदि ।

2. अनुस्वारांत , ईकारांत , उकारांत , तकारांत , सकारांत आदि संज्ञाएँ आती है वे स्त्रीलिंग होते हैं । जैसे :- रोटी , टोपी , नदी , चिट्ठी , उदासी , रात , बात , छत , भीत , लू , बालू , दारू , सरसों , खड़ाऊं , प्यास , वास , साँस , नानी , बेटी , मामी , भाभी आदि ।

3. भाषा , बोलियों तथा लिपियों के नाम स्त्रीलिंग होती हैं :-

जैसे :- हिंदी , संस्कृत , देवनागरी , पहाड़ी , अंग्रेजी , पंजाबी गुरुमुखी , फ्रांसीसी , अरबी ,फारसी, ज़र्मन ,बंगाली , रुसी आदि ।

4. नदियों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं :-

जैसे :- गंगा , यमुना , गोदावरी , सरस्वती , रावी , कावेरी , कृष्णा , व्यास , सतलुज , झेलम , ताप्ती , नर्मदा आदि।

5. तरीखो और तिथियों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं ।

जैसे :- पहली , दूसरी , प्रतिपदा , पूर्णिमा , पृथ्वी , अमावस्या , एकादशी , चतुर्थी , प्रथमा आदि ।

6. नक्षत्रो के नाम स्त्रीलिंग होते हैं ।

जैसे :- अश्विनी , भरणी , रोहिणी , रेवती , मृगशिरा , चित्रा आदि ।

7. हमेशा स्त्रीलिंग रहने वाली संज्ञा होती हैं ।

जैसे :- मक्खी , कोयल , मछली , तितली , मैना आदि ।

8. समूहवाचक संज्ञा स्त्रीलिंग होते हैं ।

जैसे :- भीड़ , कमेटी , सेना , सभा , कक्षा आदि ।

KD Job Updates

लिंग

9. प्राणीवाचक संज्ञा स्त्रीलिंग होती हैं ।

जैसे :- धाय , संतान , सौतन आदि ।

10. पुस्तकों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं ।

जैसे :- कुरान , रामायण , गीता , रामचरितमानस , बाइबल , महाभारत आदि ।

11. आहारों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं ।

जैसे :- सब्जी , दाल , कचौरी , पूरी , रोटी , पकोड़ी आदि ।

12. शरीर के अंगों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं ।

जैसे :- आँख , नाक , जीभ , पलक , उँगली , ठोड़ी आदि ।

13. अभुष्ण और वस्त्रों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं ।

जैसे :- साड़ी , सलवार , चुन्नी , धोती , टोपी , पेंट , कमीज , पगड़ी , माला , चूड़ी , बिंदी , कंघी , नथ , अंगूठी आदि ।

14. मशालों के नाम भी स्त्रीलिंग होते हैं ।

जैसे :- दालचीनी , लौंग , हल्दी , मिर्च , धनिया , इलायची , अजवाइन , सौंफ , चाय आदि ।

15. राशि के नाम स्त्रीलिंग होते हैं ।

जैसे :- कुम्भ , मीन , तुला , सिंह , मेष , कर्क आदि ।

KD Job Updates

पुल्लिंग और स्त्रीलिंग दोनों में प्रयुक्त होने वाले शब्द इस प्रकार हैं

प्रधानमंत्री , मुख्यमंत्री , राष्ट्रपति , उपराष्ट्रपति , चित्रकार , पत्रकार , गवर्नर ,लेक्चर , वकील , डॉक्टर , सेक्रेटरी , प्रोफेसर , शिशु , दोस्त , बर्फ , मेहमान , मित्र , ग्राहक , प्रिंसिपल , मैनेजर , श्वास , मंत्री आदि ।

पुल्लिंग से स्त्रीलिंग बनाने के नियम इस प्रकार हैं

1. अ , आ पुल्लिंग शब्दों को जब ' ई ' कर दिया जाता है तो वे स्त्रीलिंग हो जाते हैं ।

पुल्लिंग = स्त्रीलिंग के उदहारण इस प्रकार हैं :-

- गूँगा = गूँगी
- गधा = गधी
- देव = देवी
- नर = नारी
- नाला = नाली

2. जब अ , आ , वा आदि पुल्लिंग शब्दों को स्त्रीलिंग में बदला जाता है तो अ, आ, तथा वा की जगह पर ' इया ' लगा दिया जाता हैं ।
पुल्लिंग = स्त्रीलिंग के उदहारण इस प्रकार हैं :-

- लोटा = लुटिया
- बन्दर = बंदरिया
- बुढा = बुढिया
- बेटा = बिटिया
- चिड़ा = चिड़िया

3. जब अक जैसे तत्सम शब्दों में ' इका ' जोडकर भी स्त्रीलिंग बनाए जाते हैं ।
तत्सम शब्द + इका = स्त्रीलिंग के उदहारण इस प्रकार हैं ।

अध्यापक + इका = अध्यापिका

- पत्र + इका = पत्रिका
- चालक + इका = चालिका
- सेवक + इका = सेविका
- लेखक + इका = लेखिका
- गायक + इका = गायिका
- पाठक + इका = पाठिका
- संपादक + इका = संपादिका

4. जब पुल्लिंग को स्त्रीलिंग बनाया जाता है तो कभी कभी नर या मादा लगाना पड़ता है ।

KD Job Updates

लिंग

पुल्लिंग = स्त्रीलिंग के उदहारण इस प्रकार हैं :-

- तोता = मादा तोता
- खरगोश = मादा खरगोश
- मच्छर = मादा मच्छर
- जिराफ = मादा जिराफ
- खटमल = मादा खटमल
- मगरमच्छ = मादा मगरमच्छ
- उल्लू = मादा उल्लू
- कोयल = नर कोयल
- चील = नर चील
- मकड़ी = नर मकड़ी
- भेड़ = नर भेड़
- मक्खी = नर मक्खी
- गिलहरी = नर गिलहरी
- मैना = नर मैना
- कछुआ = नर कछुआ
- भालू = मादा भालू
- भेडिया = मादा भेडिया

5. कुछ शब्द स्वतंत्र रूप से स्त्री -पुरुष के स्वंय में ही जोड़े होते हैं । कुछ पुल्लिंग शब्दों के स्त्रीलिंग बिलकुल उल्टे होते हैं ।

पुल्लिंग = स्त्रीलिंग के उदहारण इस प्रकार हैं

- राजा = रानी
- सम्राट = सम्राज्ञी
- पिता = माता
- भाई = बहन
- वर = वधू
- पति = पत्नी
- मर्द = औरत
- पुरुष = स्त्री
- बैल = गाय
- पुत्र = कन्या

KD Job Updates

- फूफा = बुआ

6. कुछ शब्दों का स्त्रीलिंग न हो पाने की वजह से उनमें ' आनी ' प्रत्यय लगाकर स्त्रीलिंग बनाया जाता है ।

पुल्लिंग + आनी = स्त्रीलिंग के उदहारण इस प्रकार हैं

- ठाकुर + आनी = ठकुरानी
- सेठ + आनी = सेठानी
- चौधरी + आनी = चौधरानी
- देवर +आनी = देवरानी
- नौकर + आनी = नौकरानी
- इंद्र + आनी = इन्द्राणी
- जेठ + आनी = जेठानी
- मेहतर + आनी = मेहतरानी
- पण्डित +आनी = पंडितानी

7. कभी कभी पुल्लिंग के कुछ शब्दों में ' इन ' जोडकर स्त्रीलिंग बनाया जाता है ।

पुल्लिंग + इन = स्त्रीलिंग के उदहारण इस प्रकार हैं :-

- साँप + इन = सांपिन
- सुनार + इन = सुनारिन
- नाती + इन = नातिन
- दर्जी + इन = दर्जिन
- कुम्हार + इन = कुम्हारिन
- लुहार + इन = लुहारिन
- माली + इन = मालिन
- धोबी + इन = धोबिन
- बाघ + इन = बाघिन

8. कभी कभी बहुत से शब्दों में ' आइन ' जोडकर स्त्रीलिंग बनाए जाते हैं ।

पुल्लिंग + आइन = स्त्रीलिंग के उदहारण इस प्रकार हैं :-

- चौधरी + आइन = चौधराइन
- हलवाई + आइन = हलवाइन
- गुरु + आइन = गुरुआइन
- पंडित + आइन = पण्डिताइन

KD Job Updates

- ठाकुर + आइन = ठकुराइन
- बाबू +आइन = बबुआइन

9. जब पुल्लिंग शब्दों में ता की जगह पर ' त्री ' लगा दिया जाता है तो वे स्त्रीलिंग बन जाते हैं ।

पुल्लिंग = स्त्रीलिंग के उदहारण इस प्रकार हैं

- नेता = नेत्री
- दाता = दात्री
- अभिनेता = अभनेत्री
- रचयिता = रचयित्री
- विधाता = विधात्री
- वक्ता = वक्त्री
- धाता = धात्री

10. जब पुल्लिंग के जाति और भाव बताने वाले शब्दों में नी लगा दिया जाता है तो वे स्त्रीलिंग में बदल जाते हैं ।

पुल्लिंग शब्द + नी = स्त्रीलिंग के उदहारण इस प्रकार हैं

- सियार + नी = सियारनी
- हिन्दू + नी = हिन्दुनी
- ऊँट + नी = ऊंटनी
- शेर + नी = शेरनी
- भील + नी = भीलनी
- हंस + नी = हंसनी
- मोर + नी = मोरनी
- चोर + नी = चोरनी
- हाथी + नी = हथिनी

KD Job Updates

वचन (VACHAN)

वचन - परिभाषा, भेद और उदाहरण, VACHAN IN HINDI

वचन

- वचन का शाब्दिक अर्थ संख्यावचन होता है। संख्यावचन को ही वचन कहते हैं। वचन का एक अर्थ कहना भी होता है। संज्ञा के जिस रूप से किसी व्यक्ति , वस्तु के एक से अधिक होने का या एक होने का पता चले उसे वचन कहते हैं। अथार्त संज्ञा के जिस रूप से संख्या का बोध हो उसे वचन कहते हैं अथार्त संज्ञा , सर्वनाम , विशेषण और क्रिया के जिस रूप से हमें संख्या का पता चले उसे वचन कहते हैं।

or

- भाषाविज्ञान में वचन (Number) एक संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया आदि की व्याकरण सम्बन्धी श्रेणी है जो इनकी संख्या की सूचना देती है (एक, दो, अनेक आदि)। अधिकांश भाषाओं में दो वचन ही होते हैं- एकवचन तथा बहुवचन , किन्तु संस्कृत तथा कुछ और भाषाओं में द्विवचन भी होता है।
- जैसे :- लडकी खेलती है। - लडकियाँ खेलती हैं।

KD Job Updates

वचन के भेद

- हिन्दी व्याकरण में वचन दो प्रकार के होते हैं - एकवचन, बहुवचन। जबकि संस्कृत व्याकरण में वचन तीन प्रकार के होते हैं- एकवचन, द्विवचन, वहुवचन। और अङ्ग्रेज़ी व्याकरण में वचन दो प्रकार के होते हैं- Singular और Plural ।

1. एकवचन क्या होता है

- जिस शब्द के कारण हमें किसी व्यक्ति , वस्तु , प्राणी , पदार्थ आदि के एक होने का पता चलता है उसे एकवचन कहते हैं।

- जैसे- लड़का , लडकी , गाय , सिपाही , बच्चा , कपड़ा , माता , पिता , माला , पुस्तक , स्त्री , टोपी , बन्दर , मोर , बेटी , घोडा , नदी , कमरा , घड़ी , घर , पर्वत , मैं , वह , यह , रुपया , बकरी , गाड़ी , माली , अध्यापक , केला , चिड़िया , संतरा , गमला , तोता , चूहा आदि।

2. बहुवचन क्या होता है

- जिस विकारी शब्द या संज्ञा के कारण हमें किसी व्यक्ति , वस्तु , प्राणी , पदार्थ आदि के एक से अधिक या अनेक होने का पता चलता है उसे बहुवचन कहते हैं।
- जैसे - लडके , गायें , कपड़े , टोपियाँ , मालाएँ , माताएँ , पुस्तकें , वधुएँ , गुरुजन , रोटियां , पेंसिलें , स्त्रियाँ , बेटे , बेटियाँ , केले , गमले , चूहे , तोते , घोड़े , घरों , पर्वतों , नदियों , हम , वे , ये , लताएँ , लडकियाँ , गाड़ियाँ , बकरियां , रुपए।

एकवचन और बहुवचन के कुछ नियम इस प्रकार है

1. आदरणीय या सम्मानीय व्यक्तियों के लिए बहुवचन का भी प्रयोग होता है लेकिन एकवचन व्यक्तिवाचक संज्ञा को बहुवचन में ही प्रयोग कर दिया जाता है। जैसे -

- गांधीजी चंपारन आये थे।
- शास्त्रीजी बहुत ही सरल स्वभाव के थे।
- गुरूजी आज नहीं आये।
- पापाजी कल कलकत्ता जायेंगे।
- गांधीजी छुआछुत के विरोधी थे।
- श्री रामचन्द्र वीर थे।

2. एकवचन और बहुवचन का प्रयोग संबंध दर्शाने के लिए समान रूप से किया जाता है। जैसे -

- नाना , मामी , ताई , ताऊ , नानी , मामा , चाचा , चाची , दादा , दादी आदि।

KD Job Updates

वचन

3. द्रव्य की सुचना देने वाली द्रव्यसूचक संज्ञाओं का प्रयोग केवल एकवचन में ही होता है। जैसे :

- तेल , घी , पानी , दूध , दही , लस्सी , रायता आदि।

4. वचन के कुछ शब्दों का प्रयोग हमेशा ही बहुवचन में किया जाता है। जैसे -

- दाम , दर्शन , प्राण , आँसू , लोग , अक्षत , होश , समाचार , हस्ताक्षर , दर्शक , भाग्य केश , रोम , अश्रु , आशिर्वाद आदि।

उदहारण:

- आपके हस्ताक्षर बहुत ही अलग हैं।
- लोग कहते रहते हैं।
- आपके दर्शन मिलना मुस्किल है।
- तुम्हारे दाम ज्यादा हैं।
- आज के समाचार क्या हैं ?
- आपका आशिर्वाद पाकर मैं धन्य हो गया हूँ।

5. वचन में पुल्लिंग के ईकारांत , उकारांत और ऊकारांत शब्दों का प्रयोग दोनों वचनों में समान रूप से किया जाता है।

- जैसे : एक मुनि , दस मुनि , एक डाकू , दस डाकू , एक आदमी , दस आदमी आदि।

6. कभी कभी कुछ लोग बडप्पन दिखाने के लिए वह और मैं की जगह पर वे और हम का प्रयोग करते हैं। जैसे :-

- मालिक ने नौकर से कहा कि हम मीटिंग में जा रहे हैं।
- जब गुरूजी घर आये तो वे बहुत खुश थे।
- हमे याद नहीं हमने ऐसा कहा था।

KD Job Updates

7. कभी कभी अच्छा व्यवहार करने के लिए तुम की जगह पर आप का प्रयोग किया जाता है। जैसे :-

- आप कहाँ पर गये थे।

8. दोनों वचनों में जातिवाचक संज्ञा का प्रयोग किया जाता है। जैसे :

- कुत्ता भौंक रहा है।
- कुत्ते भौंक रहे हैं।
- शेर जंगल का राजा है।
- बैल के चार पाँव होते हैं।

9. धातुओं की जाति बताने वाली संज्ञाओं का प्रयोग एकवचन में ही होता है। जैसे :- सोना , चाँदी , धन आदि।

उदहारण :

- सोना बहुत महँगा है।
- चाँदी सस्ती है।
- उसके पास बहुत धन है।

10. गुण वाचक और भाववाचक दोनों संज्ञाओं का प्रयोग एकवचन और बहुवचन दोनों में ही किया जाता है।

जैसे :

- मैं उनके धोके से ग्रस्त हूँ।
- इन दवाईयों की अनेक खूबियाँ हैं।
- डॉ राजेन्द्र प्रसाद की सज्जनता पर सभी मोहित थे।
- मैं आपकी विवशता को जानता हूँ।

11. सिर्फ एकवचन में हर , प्रत्येक और हर एक का प्रयोग होता है।

KD Job Updates

वचन

जैसे :

- हर एक कुआँ का पानी मीठा नही होता।
- प्रत्येक व्यक्ति यही कहेगा।
- हर इन्सान इस सच को जानता है।

12. समूहवाचक संज्ञा का प्रयोग केवल एकवचन में ही किया जाता है।

जैसे :

- इस देश की बहुसंख्यक जनता अनपढ़ है।
- लंगूरों की एक टोली ने बहुत उत्पात मचा रखा है।

13. ज्यादा समूहों का बोध करने के लिए समूहवाचक संज्ञा का प्रयोग बहुवचन में किया जाता है।

जैसे :

- विद्यार्थियों की बहुत सी टोलियाँ गई हैं।
- अकबर की सदी में अनेक देशों की प्रजा पर अनेक अत्याचार होते थे।

14. एक से ज्यादा अवयवों का प्रयोग बहुवचन में होता है लेकिन एकवचन में उनके आगे एक लगा दिया जाता है।जैसे :

- आँख , कान , ऊँगली , पैर , दांत , अंगूठा आदि।

उदहारण :

- राधा के दांत चमक रहे थे।
- मेरे बाल सफेद हो चुके हैं।
- मेरा एक बाल टूट गया।
- मेरी एक आँख में खराबी है।
- मंजू का एक दांत गिर गया।

KD Job Updates

15. करणकारक के शब्द जैसे – जाडा , गर्मी , भूख , प्यास आदि को बहुवचन में ही प्रयोग किया जाता है।

जैसे :

- बेचारा बन्दर जाड़े से ठिठुर रहा है।
- भिखारी भूखे मर रहे हैं।

16. कभी कभी कुछ एकवचन संज्ञा शब्दों के साथ गुण , लोग , जन , समूह , वृन्द , दल , गण , जाति शब्दों को बहुवचन में प्रयोग किया जाता है।

जैसे :

- छात्रगण बहुत व्यस्त होते हैं।
- मजदूर लोग काम कर रहे हैं।
- स्त्रीजाति बहुत संघर्ष कर रही है।

****

KD Job Updates

एकवचन से बहुवचन बनाने के मुख्य बिन्दु:

एकवचन से बहुवचन बनाने के नियम इस प्रकार हैं

1. जब आकारान्त के पुल्लिंग शब्दों में आ की जगह पर ए लगा दिया जाता है।

एकवचन = बहुवचन के उदहारण इस प्रकार हैं :

- जूता = जूते
- तारा = तारे
- लड़का = लडके
- घोडा = घोड़े
- बेटा = बेटे

वचन

- मुर्गा = मुर्गे कपड़ा = कपड़े
- गधा = गधे
- कौआ = कौए
- केला = केले

2. जब अकारांत के स्त्रीलिंग शब्दों में अ की जगह पर ऐं लगा दिया जाता है।

जैसे :

- कलम = कलमें
- बात = बातें
- रात = रातें
- किताब = किताबें
- गाय = गायें
- बहन = बहनें
- झील = झीलें
- सडक = सडकें
- दवात = दवातें
- आँख = आँखें
- पुस्तक = पुस्तकें

3. जब आकारान्त के स्त्रीलिंग शब्दों में आ की जगह पर ऍं कर दिया जाता है।

जैसे :

- कविता = कविताएँ
- लता = लताएँ
- अध्यापिका = अध्यापिकाएँ

KD Job Updates

- कन्या = कन्याएँ
- माता = माताएँ
- भुजा = भुजाएँ
- पत्रिका = पत्रिकाएँ
- शाखा = शाखाएँ
- कामना = कामनाएँ
- कथा = कथाएँ
- कला = कलाएँ
- वस्तु = वस्तुएँ
- दवा = दवाएँ

4. जब स्त्रीलिंग के शब्दों में या की जगह पर याँ लगा दिया जाता है।

जैसे :-

- बिंदिया = बिंदियाँ
- चिड़िया = चिड़ियाँ
- डिबिया = डिबियाँ
- गुडिया = गुड़ियाँ
- चुहिया = चुहियाँ
- बुढिया = बुढियाँ
- लुटिया = लुटियाँ
- गैया = गैयाँ
- कुतिया = कुतियाँ

5. जब इकारांत और ईकारांत के स्त्रीलिंग शब्दों याँ लगाकर ई को इ कर दिया जाता है।

KD Job Updates

वचन

जैसे :-

- नीति = नीतियाँ
- नारी = नारियाँ
- गति = गतियाँ
- थाली = थालियाँ
- रीति = रीतियाँ
- नदी = नदियाँ
- लडकी = लडकियाँ
- घुड़की = घुड़कियाँ
- चुटकी = चुटकियाँ
- टोपी = टोपियाँ

6. जब उ , ऊ ,आ , अ , इ , ई और औ की जगह पर ऍ कर दिया जाता है और ऊ को उ में बदल दिया जाता है।

जैसे :-

- वस्तु = वस्तुएँ
- गौ = गौएँ
- बहु = बहुएँ
- वधू = वधुएँ
- गऊ = गउएँ
- लता = लताएँ
- माता = माताएँ
- धातु = धातुएँ

KD Job Updates

- धेनु = धेनुएँ
- लू = लुएँ
- जू = जुएँ

7. जब दल , वृंद , वर्ग , जन लोग , गण आदि शब्दों को जोड़ा जाता है।

जैसे :

- साधु = साधुलोग
- बालक = बालकगण
- अध्यापक = अध्यापकवृंद
- मित्र = मित्रवर्ग
- विद्यार्थी = विद्यार्थीगण
- सेना = सेनादल
- आप = आपलोग
- गुरु = गुरुजन
- श्रोता = श्रोताजन
- गरीब = गरीबलोग
- पाठक = पाठकगण
- अधिकारी = अधिकारीवर्ग
- स्त्री = स्त्रीजन
- नारी = नारीवृंद
- दर्शक = दर्शकगण
- वृद्ध = वृद्धजन
- व्यापारी =व्यापारीगण

KD Job Updates

वचन

8. जब एकवचन और बहुवचन दोनों में शब्द एक समान होते हैं।

जैसे :

- राजा = राजा
- नेता = नेता
- पिता = पिता
- चाचा = चाचा
- क्षमा = क्षमा
- प्रेम = प्रेम
- बाजार = बाजार
- दादा = दादा
- जल = जल
- गिरी = गिरी
- योद्धा = योद्धा
- फल = फल
- पानी = पानी
- क्रोध = क्रोध
- फूल = फूल

9. जब शब्दों को दो बार प्रयोग किया जाता है।

जैसे :-

- भाई = भाई -भाई
- बहन = बहन-बहन
- गाँव = गाँव -गाँव

KD Job Updates

- घर = घर -घर
- शहर = शहर -शहर

विभक्तिसहित संज्ञा के शब्दों के नियम इस प्रकार हैं

1. जब अकारांत , आकारान्त और एकारांत के संज्ञा शब्दों में अ, आ , तथा ए की जगह पर ओं कर दिया जाता है। जब इन संज्ञाओं के साथ ने , को , का , से आदि परसर्ग होते हैं तब भी इनके साथ ओं लगा दिया जाता है।

जैसे :-

- लडके को बुलाओ – लडकों को बुलाओ।
- बच्चे ने गाना गाया – बच्चों ने गाना गाया।
- नदी का जल बहुत ठंडा है – नदियों का जल बहुत ठंडा है।
- आदमी से पूछ लो – आदमियों से पूंछ लो।
- लडके ने पढ़ा – लडकों ने पढ़ा।
- गाय ने दूध दिया – गायों ने दूध दिया।
- चोर को छोड़ना मत – चोरों को छोड़ना मत।

2. जब संस्कृत की आकारांत और हिंदी की उकारांत , ऊकारांत , अकारांत और औकरांत में पीछे ओं जोड़ दिया जाता है। ओं जोड़ने के बाद ऊ को उ में बदल दिया जाता है।

जैसे :-

- लता = लताओं
- साधु = साधुओं
- वधू = वधुओं
- घर = घरों
- जौ = जौओं

KD Job Updates

- दवा = दवाओं

3. जब इकारांत और ईकारांत संज्ञाओं के पीछे यों जोड़ दिया जाता है और ई को इ में बदल दिया जाता है।

जैसे :-

- मुनि = मुनियों
- गली = गलियों
- नदी = नदियों
- साड़ी = साड़ियों
- श्रीमती = श्रीमतियों
- गाड़ी = गाड़ियों
- झाड़ी = झाड़ियों आदि।

वचन परिवर्तन के अन्य उदाहरण

एकवचन = बहुवचन के उदहारण इस प्रकार हैं :-

- पत्ता = पत्ते
- बच्चा = बच्चे
- बेटा = बेटे
- कपड़ा = कपड़े
- लड़का = लडके
- बात = बातें
- आँख = आँखें
- पुस्तक = पुस्तकें

KD Job Updates

- किताब = किताबें
- रुपया = रुपए
- तिनका = तिनके
- भेड़ = भेड़ें
- बहन = बहनें
- घोडा = घोड़े
- तस्वीर = तस्वीरें
- कक्षा = कक्षाएँ
- ऋतु = ऋतुएँ
- कमरा = कमरे
- भाषा = भाषाएँ
- सेना = सेनाएँ
- कविता = कविताएँ
- वस्तु = वस्तुएँ
- लता = लताएँ
- बुढिया = बुढियां
- चिड़िया = चिड़ियाँ
- चुहिया = चुहियाँ
- गुडिया = गुड़ियाँ
- कहानी = कहानियाँ
- घड़ी = घड़ियाँ
- कुर्सी = कुर्सियां

KD Job Updates

- हड्डी = हड्डियाँ
- मिठाई = मिठाइयाँ
- दवाई = दवाईयाँ

****

हिन्दी में एकवचन के स्थान पर बहुवचन के प्रयोग के कुछ अन्य उदाहरण

(क) आदर के लिए भी बहुवचन का प्रयोग होता है। जैसे-

- भीष्म पितामह तो ब्रह्मचारी थे।
- गुरुजी आज नहीं आये।
- शिवाजी सच्चे वीर थे।

(ख) बड़प्पन दर्शाने के लिए कुछ लोग वह के स्थान पर वे और मैं के स्थान हम का प्रयोग करते हैं जैसे-

- मालिक ने कर्मचारी से कहा, हम मीटिंग में जा रहे हैं।
- आज गुरुजी आए तो वे प्रसन्न दिखाई दे रहे थे।

(ग)केश, रोम, अश्रु, प्राण, दर्शन, लोग, दर्शक, समाचार, दाम, होश, भाग्य आदि ऐसे शब्द हैं जिनका प्रयोग बहुधा बहुवचन में ही होता है। जैसे-

- तुम्हारे केश बड़े सुन्दर हैं।
- लोग कहते हैं।

बहुवचन के स्थान पर एकवचन के प्रयोग के कुछ अन्य उदाहरण

(क) तू एकवचन है जिसका बहुवचन है तुम किन्तु सभ्य लोग आजकल लोक-व्यवहार में एकवचन के लिए तुम का ही प्रयोग करते हैं जैसे-

- मित्र, तुम कब आए।
- क्या तुमने खाना खा लिया।

KD Job Updates

(ख) वर्ग, वृंद, दल, गण, जाति आदि शब्द अनेकता को प्रकट करने वाले हैं, किन्तु इनका व्यवहार एकवचन के समान होता है। जैसे-

- सैनिक दल शत्रु का दमन कर रहा है।
- स्त्री जाति संघर्ष कर रही है।

(ग) जातिवाचक शब्दों का प्रयोग एकवचन में किया जा सकता है। जैसे-

- सोना बहुमूल्य वस्तु है।
- मुंबई का आम स्वादिष्ट होता है।

KD Job Updates

विशेषण

विशेषण (Visheshan in Hindi)

संज्ञा अथवा सर्वनाम शब्दों की विशेषता (गुण, दोष, संख्या, परिमाण आदि) बताने वाले शब्द **विशेषण** कहलाते हैं। जैसे - बड़ा, काला, लंबा, दयालु, भारी, सुन्दर, कायर, टेढ़ा-मेढ़ा, एक, दो आदि।

महत्वपूर्ण बिन्दु

- वाक्य में संज्ञा अथवा सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्दों को **विशेषण** कहते हैं। जैसे - काला कुत्ता। इस वाक्य में 'काला' विशेषण है।
- जिस शब्द (संज्ञा अथवा सर्वनाम) की विशेषता बतायी जाती है उसे **विशेष्य** कहते हैं। उपरोक्त वाक्य में **कुत्ता विशेष्य** है।
- जिस विकारी शब्द से संज्ञा की व्याप्ति मर्यादित होती है, उसे भी विशेषण कहते हैं। जैसे- मेहनती विद्यार्थी सफलता पाते हैं। धरमपुर स्वच्छ नगर है। वह पीला है। ऐसा आदमी कहाँ मिलेगा? इन वाक्यों में मेहनती, नीला, लाल, अच्छा, स्वच्छ, पीला और ऐसा शब्द विशेषण हैं। जो क्रमशः विद्यार्थी, धरमपुर, वह और आदमी की विशेषता बताते हैं।
- विशेषण शब्द जिसकी विशेषता बताये, उसे **विशेष्य** कहते हैं, अतः विद्यार्थी, धरमपुर, वह और आदमी शब्द विशेष्य हैं।
- ***विशेषण सार्थक शब्दों के आठ भेदों में एक भेद है।***
- ***व्याकरण में विशेषण एक विकारी शब्द है।***

विशेष्य

जिस संज्ञा अथवा सर्वनाम शब्द की विशेषता बताई जाए वह विशेष्य कहलाता है। जैसे -

KD Job Updates

- गीता सुन्दर है। - इसमें **सुन्दर- विशेषण** है और **गीता विशेष्य** है।

विशेषण शब्द विशेष्य से **पूर्व** भी आते हैं और उसके **बाद** भी।**पूर्व में-** जैसे-

- **थोड़ा-सा जल** लाओ।
- **एक मीटर कपड़ा** ले आना।

बाद में- जैसे-

- यह **रास्ता लंबा** है।
- **खीरा कड़वा** है।

विशेषण के प्रकार-

विशेषण के 4 प्रकार हैं-

1. **गुणवाचक विशेषण**
2. **संख्यावाचक विशेषण**
3. **परिमाणवाचक विशेषण**
4. **सार्वनामिक विशेषण**

1. गुणवाचक विशेषण -

जिस शब्द से संज्ञा या सर्वनाम के गुण, रूप, रंग आदि का बोध होता है, उसे गुण वाचक विशेषण कहते हैं। जैसे-

- बगीचे में **सुंदर** फूल हैं।

KD Job Updates

विशेषण

- धरमपुर **स्वच्छ** नगर है।
- स्वर्गवाहिनी **गंदी** नदी है।
- **स्वस्थ** बच्चे खेल रहे हैं।

उपर्युक्त वाक्यों में **सुंदर**, **स्वच्छ**, **गंदी** और **स्वस्थ** शब्द **गुणवाचक विशेषण** हैं। **गुण का अर्थ अच्छाई ही नहीं, किन्तु कोई भी विशेषता।** अच्छा, बुरा, खरा, खोटा सभी प्रकार के गुण इसके अंतर्गत आते हैं।

- **समय संबंधी-** नया, पुराना, ताजा, वर्तमान, भूत, भविष्य, अगला, पिछला आदि।
- **स्थान संबंधी**- लंबा, चौड़ा, ऊँचा, नीचा, सीधा, बाहरी, भीतरी आदि।
- **आकार संबंधी**- गोल. चौकोर, सुडौल, पोला, सुंदर आदि।
- **दशा संबंधी-** दुबला, पतला, मोटा, भारी, गाढ़ा, गीला, गरीब, पालतू आदि।
- **वर्ण संबंधी**- लाल, पीला, नीला, हरा, काला, बैंगनी, सुनहरी आदि।
- **गुण संबंधी**- भला, बुरा, उचित, अनुचित, पाप, झूठ आदि।
- **संज्ञा संबंधी**- मुंबईया, बनारसी, लखनवी आदि।

KD Job Updates

2. संख्यावाचक विशेषण -

जिस विशेषण से संज्ञा या सर्वनाम की संख्या का बोध होता है, उसे संख्यावाचक विशेषण कहते हैं। जैसे-

- कक्षा में **चालीस** विद्यार्थी उपस्थित हैं।
- **दोनों** भाइयों में बड़ा प्रेम हैं।
- उनकी **दूसरी** लड़की की शादी है।

- देश का **हरेक** बालक वीर है।

उपर्युक्त वाक्यों में **चालीस**, **दोनों**, **दूसरी** और **हरेक** शब्द **संख्यावाचक विशेषण** हैं।

संख्यावाचक विशेषण के भी दो प्रकार हैं-

1. **निश्चित संख्यावाचक विशेषण**: निश्चित संख्यावाचक विशेषण जैसे- एक, पाँच, सात, बारह, तीसरा, आदि।
2. **अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण**: अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण जैसे- कई, अनेक, सब, बहुत आदि।

निश्चित संख्यावाचक विशेषण के 6 भेद हैं-

1. पूर्णांक बोधक विशेषण

जैसे- एक, दस, सौ, हजार, लाख आदि।

- **एक** लड़का स्कूल जा रहा है।
- **पच्चीस** रुपये दीजिए।
- कल मेरे यहाँ **दो** मित्र आएँगे।
- **चार** आम लाओ

2. अपूर्णांक बोधक विशेषण

जैसे- पौना, सवा, डेढ, ढाई आदि।

- मेरी जेब मे **ढाई** रुपये हैं।

KD Job Updates

- पापा ने मुझे **सवा** सौ रुपये दिये ।
- दूधिया ने मुझे **डेढ़** ग्राम दूध कम दिया।

3. क्रमवाचक विशेषण

जैसे- दूसरा, चौथा, ग्यारहवाँ, पचासवाँ आदि।

- **पहला** लड़का यहाँ आए।
- **दूसरा** लड़का वहाँ बैठे।
- राम कक्षा में **प्रथम** रहा।
- श्याम **द्वितीय** श्रेणी में पास हुआ है।

4. आवृत्तिवाचक विशेषण

जैसे- दुगुना, तिगुना, दसगुना आदि।

- मोहन तुमसे **चौगुना** काम करता है।
- गोपाल तुमसे **दुगुना** मोटा है।

5. समूहवाचक विशेषण

जैसे- तीनों, पाँचों, आठों आदि।

- तुम **तीनों** को जाना पड़ेगा।

KD Job Updates

- यहाँ से **चारों** चले जाओ।

6. प्रत्येक बोधक विशेषण

जैसे- प्रति, प्रत्येक, हरेक, एक-एक आदि।

- **प्रत्येक** को प्रसाद मिला।
- **एक-एक** व्यक्ति पनि मे डूब गया।

अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण

अनिश्चित संख्यावाचक विशेषणों से अधिकतर बहुत्व का बोध होता है। जैसे-

- **सारे** आम सड़ गए।
- पुस्तकालय में **असंख्य** पुस्तकें हैं।
- लंका में **अनेक** महल जल गए।
- सुनामी में बहुत **सारे** लोग मारे गए।

निश्चित संख्यावाचक के अंतर्गत आनेवाले **पूर्णांक बोधक विशेषण** के **पहले- लगभग** या **करीब, बाद-** में '**एक**' या '**ओं**' प्रत्यय लगाने से **अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण** हो जाता है। जैसे-

- **लगभग** पचास लोग आएँगे।
- **करीब** बीस रूपए चाहिए।

KD Job Updates

- **सैंकड़ों** लोग मारे गए।

कभी-कभी **दो पूर्णांक बोधक** साथ में आकर **अनिश्चय वाचक** बन जाते हैं। जैसे- 1. **चालीस-पचास** रूपये चाहिए। 2. काम में **दो-तीन** घंटे लगेंगे।

3. परिमाणवाचक विशेषण

जिस विशेषण से किसी वस्तु की नाप-तौल का बोध होता है, उसे परिमाण-बोधक विशेषण कहते हैं। जैसे-

- मुझे **दो मीटर** कपड़ा दो।
- उसे **एक किलो** चीनी चाहिए।
- बीमार को **थोड़ा पानी** देना चाहिए।

उपर्युक्त वाक्यों में **दो मीटर**, **एक किलो** और **थोड़ा पानी** शब्द **परिमाण-बोधक विशेषण** हैं।

परिमाण-बोधक विशेषण के दो प्रकार हैं-

1. निश्चित परिमाण-बोधकः

जैसे- दो सेर गेहूँ, पाँच मीटर कपड़ा, एक लीटर दूध आदि।

2. अनिश्चित परिमाण-बोधकः

जैसे, थोड़ा पानी और अधिक काम, कुछ परिश्रम आदि।

- परिमाण-बोधक विशेषण अधिकतर भाववाचक, द्रव्यवाचक और समूहवाचक संज्ञाओं के साथ आते हैं।

KD Job Updates

4. सार्वनामिक विशेषण

जब कोई सर्वनाम शब्द संज्ञा शब्द से पहले आए तथा वह विशेषण शब्द की तरह संज्ञा की विशेषता बताये, उसे सार्वनामिक विशेषण कहते हैं। जैसे-

- **वह आदमी** व्यवहार से कुशल है।
- **कौन छात्र** मेरा काम करेगा?

उपर्युक्त वाक्यों में **वह** और **कौन** शब्द सार्वनामिक विशेषण हैं।

पुरूषवाचक और निजवाचक सर्वनामों को छोड़ बाकी सभी सर्वनाम संज्ञा के साथ प्रयुक्त होकर सार्वनामिक विशेषण बन जाते हैं।

जैसे-

- **निश्चयवाचक-** यह मूर्ति, ये मूर्तियाँ, वह मूर्ति, वे मूर्तियाँ आदि।
- **अनिश्चयवाचक**- कोई व्यक्ति, कोई लड़का, कुछ लाभ आदि।
- **प्रश्नवाचक-** कौन आदमी? कौन लौग?, क्या काम?, क्या सहायता? आदि।
- **संबंधवाचक**- जो पुस्तक, जो लड़का, जो वस्तु

व्युत्पत्ति की दृष्टि से सार्वनामिक विशेषण के दो प्रकार हैं-

1. मूल सार्वनामिक विशेषण, 2. यौगिक सार्वनामिक विशेषण

1. मूल सार्वनामिक विशेषणः

जो सर्वनाम बिना किसी रूपांतर के विशेषण के रूप में प्रयुक्त होता है उसे मूल सार्वनामिक विशेषण कहते हैं।

KD Job Updates

जैसे-

- **वह लड़की** विद्यालय जा रही है।
- **कोई लड़का** मेरा काम कर दे।
- **कुछ विद्यार्थी** अनुपस्थित हैं।

उपयुक्त वाक्यों में वह,कोई और कुछ शब्द मूल सार्वनामिक विशेषण हैं।

2. यौगिक सार्वनामिक विशेषणः

जो सर्वनाम मूल सर्वनाम में प्रत्यय आदि जुड़ जाने से विशेषण के रूप में प्रयुक्त होता है उसे यौगिक सार्वनामिक विशेषण कहते हैं।

जैसे-

- **ऐसा** आदमी कहाँ मिलेगा?
- **कितने** रूपये तुम्हें चाहिए?
- मुझसे **इतना** बोझ उठाया नहीं जाता।

उपर्युक्त वाक्यों में **ऐसा**, **कितने** और **इतना** शब्द **यौगिक सार्वनामिक विशेषण** हैं। यौगिक सार्वनामिक विशेषण निम्नलिखित सार्वनामिक विशेषणों से बनते हैं-

- **यह से-** इतना, इतने, इतनी, ऐसा, ऐसी, ऐसे।
- **वह से-** उतना, उतने, उतनी, वैसा, वैसी, वैसे।
- **जो से**- जितना, जितनी, जितने, जैसा, जैसी, जैसे।

KD Job Updates

- **कौन से**- कितना, कितनी, कितने, कैसा, कैसी, कैसे।

संकेतवाचक विशेषण जो सर्वनाम संकेत द्वारा संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बतलाते हैं वे संकेतवाचक विशेषण कहलाते हैं। **विशेष** - क्योंकि संकेतवाचक विशेषण सर्वनाम शब्दों से बनते हैं, अतः ये सार्वनामिक विशेषण कहलाते हैं। इन्हें **निर्देशक** भी कहते हैं।

परिमाणवाचक और संख्यावाचक विशेषण में अंतर

- जिन वस्तुओं की नाप-तोल की जा सके उनके वाचक शब्द परिमाणवाचक विशेषण कहलाते हैं। जैसे-'कुछ दूध लाओ'। इसमें 'कुछ' शब्द तोल के लिए आया है। इसलिए यह परिमाणवाचक विशेषण है।
- जिन वस्तुओं की गिनती की जा सके उनके वाचक शब्द संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं। जैसे-कुछ बच्चे इधर आओ। यहाँ पर 'कुछ' बच्चों की गिनती के लिए आया है। इसलिए यह संख्यावाचक विशेषण है। परिमाणवाचक विशेषणों के बाद द्रव्य अथवा पदार्थवाचक संज्ञाएँ आएँगी जबकि संख्यावाचक विशेषणों के बाद जातिवाचक संज्ञाएँ आती हैं।

सर्वनाम और सार्वनामिक विशेषण में अंतर

जिस शब्द का प्रयोग संज्ञा शब्द के स्थान पर हो उसे सर्वनाम कहते हैं। जैसे-वह मुंबई गया। इस वाक्य में वह सर्वनाम है। जिस शब्द का प्रयोग संज्ञा से पूर्व अथवा बाद में विशेषण के रूप में किया गया हो उसे सार्वनामिक विशेषण कहते हैं। जैसे-वह रथ आ रहा है। इसमें वह शब्द रथ का विशेषण है। अतः यह सार्वनामिक विशेषण है।

विशेषण की अवस्थाएँ

विशेषण शब्द किसी संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बतलाते हैं। विशेषता बताई जाने वाली वस्तुओं के गुण-दोष कम-ज़्यादा होते हैं। गुण-दोषों के इस कम-ज़्यादा होने को तुलनात्मक ढंग से ही जाना जा सकता है। तुलना की दृष्टि से विशेषणों की निम्नलिखित तीन अवस्थाएँ होती हैं-

KD Job Updates

विशेषण

1. मूलावस्था
2. उत्तरावस्था
3. उत्तमावस्था

मूलावस्था मूलावस्था में विशेषण का तुलनात्मक रूप नहीं होता है। वह केवल सामान्य विशेषता ही प्रकट करता है। जैसे-

1. सावित्री सुंदर लड़की है।
2. सुरेश अच्छा लड़का है।
3. सूर्य तेजस्वी है।

उत्तरावस्था जब दो व्यक्तियों या वस्तुओं के गुण-दोषों की तुलना की जाती है तब विशेषण उत्तरावस्था में प्रयुक्त होता है। जैसे-

1. रवीन्द्र चेतन से अधिक बुद्धिमान है।
2. सविता रमा की अपेक्षा अधिक सुन्दर है।

उत्तमावस्था उत्तमावस्था में दो से अधिक व्यक्तियों एवं वस्तुओं की तुलना करके किसी एक को सबसे अधिक अथवा सबसे कम बताया गया है। जैसे-

1. पंजाब में अधिकतम अन्न होता है।
2. संदीप निकृष्टतम बालक है।

KD Job Updates

विशेष - केवल गुणवाचक एवं अनिश्चित संख्यावाचक तथा निश्चित परिमाणवाचक विशेषणों की ही ये तुलनात्मक अवस्थाएँ होती हैं, अन्य विशेषणों की नहीं।

विशेषण की अवस्थाओं के रूप

अधिक और सबसे अधिक शब्दों का प्रयोग करके उत्तरावस्था और उत्तमावस्था के रूप बनाए जा सकते हैं। जैसे-

मूलावस्था	उत्तरावस्था	उत्तमावस्था
अच्छी	अधिक अच्छी	सबसे अच्छी
चतुर	अधिक चतुर	सबसे अधिक चतुर
बुद्धिमान	अधिक बुद्धिमान	सबसे अधिक बुद्धिमान
बलवान	अधिक बलवान	सबसे अधिक बलवान

इसी प्रकार दूसरे विशेषण शब्दों के रूप भी बनाए जा सकते हैं।
तत्सम शब्दों में मूलावस्था में विशेषण का मूल रूप, उत्तरावस्था में 'तर' और उत्तमावस्था में 'तम' का प्रयोग होता है। जैसे-

मूलावस्था	उत्तरावस्था	उत्तमावस्था
उच्च	उच्चतर	उच्चतम
कठोर	कठोरतर	कठोरतम

KD Job Updates

विशेषण

गुरु	गुरुतर	गुरुतम
महान	महानतर,महत्तर	महानतम,महत्तम
न्यून	न्यूनतर	न्यनूतम
लघु	लघुतर	लघुतम
तीव्र	तीव्रतर	तीव्रतम
विशाल	विशालतर	विशालतम
उत्कृष्ट	उत्कृष्टर	उत्कृटतम
सुंदर	सुंदरतर	सुंदरतम
मधुर	मधुरतर	मधुतरतम

विशेषणों की रचना

कुछ शब्द मूलरूप में ही विशेषण होते हैं, किन्तु कुछ विशेषण शब्दों की रचना संज्ञा, सर्वनाम एवं क्रिया शब्दों से की जाती है-

संज्ञा से विशेषण बनाना

प्रत्यय	संज्ञा	विशेषण
	अंश	आंशिक
	धर्म	धार्मिक
क	अलंकार	आलंकारिक

KD Job Updates

	नीति	नैतिक
	अर्थ	आर्थिक
	दिन	दैनिक
	इतिहास	ऐतिहासिक
	देव	दैविक
	अंक	अंकित
	कुसुम	कुसुमित
	सुरभि	सुरभित
	ध्वनि	ध्वनित
	क्षुधा	क्षुधित
इत	तरंग	तरंगित
	जटा	जटिल
	पंक	पंकिल
	फेन	फेनिल
इल	उर्मि	उर्मिल
इम	स्वर्ण	स्वर्णिम

KD Job Updates

विशेषण

	रक्त	रक्तिम
	रोग	रोगी
ई	भोग	भोगी
ईन	कुल	कुलीन
ईण	ग्राम	ग्रामीण
	आत्मा	आत्मीय
ईय	जाति	जातीय
	श्रद्धा	श्रद्धालु
आलु	ईर्ष्या	ईर्ष्यालु
	मनस	मनस्वी
वी	तपस	तपस्वी
	सुख	सुखमय
मय	दुख	दुखमय
	रूप	रूपवान
वान	गुण	गुणवान
वती(स्त्री)	गुण	गुणवती

KD Job Updates

	पुत्र	पुत्रवती
	बुद्धि	बुद्धिमान
मान	श्री	श्रीमान
	श्री	श्रीमती
मती (स्त्री)	बुद्धि	बुद्धिमती
	धर्म	धर्मरत
रत	कर्म	कर्मरत
	समीप	समीपस्थ
स्थ	देह	देहस्थ
	धर्म	धर्मनिष्ठ
निष्ठ	कर्म	कर्मनिष्ठ

KD Job Updates